प्रस्तावना.

परम उपकारी महात्माश्री (विजयानंदसूरि) आत्मारामजी महाराजे भारतवर्षनी जैनप्रजा उपर जैन दर्शनना तत्त्वज्ञानना अने परमात्मानी भक्तिना अनेक ग्रंथो लखी जे उपकार कर्यों छे, ते अवर्णनीय छे.

आत्महितैषिओने आत्महित करवानुं साधन जेम तत्वज्ञानना ग्रंथोनुं दोहन छे, तेम देवाधिदेव परमात्माना गुणोनुं कीर्त्तन अने भक्ति ए पण प्रबल साधन छे, अने आ बंने साधनो भवसमुद्रमां तरवाने माटे उत्तम छे.

भक्तिनां वीजां साधनोमां भावपूजा मुख्यत्वे छे, तेना साधनभूत स्तवनादिक होवाथी तेनो दरेक भव्य मनुष्यने अभ्यास करवानी आवश्यकता छे, एम जाणी स्वर्गवासी आचार्य महाराज विजयानंद सूरीए अनेक पूजाओ बनावी जेम उप

कार कर्यो छे तेम आ चोवीसी, भावना, अने स्तवनो विगेरे रची तेवा उपकारमां वधारो कर्यो छे. ते महात्मानी उपर लखेली कृति आ ग्रंथना पहेला भागमां प्रसिद्ध करवामां आवी छे, अने ते महात्मानुं अनुकरण करनारा अने तेमने पगले चालनारा तेमना शांत शिष्य उपाध्यायजी श्री वीरविजयजी महाराजनी कृतिना—विरचित विविध स्तवनो विगेरे जनसमुदायना उपकारने अर्थे जे जे तेउए बनावेल छे, ते ते आ ग्रंथना बीजा भागमां दाखल करवामां आवेल छे. एकंदर रीते आ पद्यात्मक ग्रंथ वांचवा, मनन करवा, योग्य होवा उपरांत कर्मनी निर्जराना एक साधनभूत होवाथी तेप्रमाणे भव्य जनो तेनो उपयोग करशे तो रचनार तेमज प्रसिद्ध करनारनो हेतु सफल थयो मनाशे. प्रसिद्ध कर्त्ता.

सस्थापक h. B. N.

॥ ॐ अर्हम् ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्रीमद्विजयानंदसूरि (आत्मारामजी महाराज) विरचित

॥ श्री आत्मविलास स्तवनावली ॥

अथ चतुर्विंशति जिनस्तवन.

श्री ऋषभ जिन स्तवन ।

आसणरा जोगी । एदेशी ॥

प्रथम जिनेसर मरुदेवी नंदा । नाभि गगन कुल चंदा रे । मनमोहन स्वामी । समवसरण त्रिण कोट सोहंदा । रजत कनक रत नंदा रे ॥ मनमो० ॥ १ ॥ तरु असोग तले चिहुंपासे । कनक सिंहासन कासे रे ॥ मन० ॥ पूर्व दिसि सुर वंदे नासे । बिंब तिहुं दिसि जासेरे ॥ मन० ॥ २ ॥ मुनि सुर नारी साधवी

सारी । अग्नि कोण सुखकारी रे ॥मन०॥ ज्योति . नवन वनदेवी निरते । इन पति व्यायव थिरतेरे ॥ मन० ॥ ३ ॥ सुर नर नारी कूण ईशाने । प्रन्नु निरखी सुख माने रे । मन० । तुब्य निमित्त चिहुं वर थाने । सम्यग दरसी जाने रे । मन० ॥ ४ ॥ आदि निषेपा तिग उपगारी । वंदक नाव विचारी रे । मन० । वाग जोग सुन मेघसमानो । नव्य शिखी हर-खानो रे । मन० ॥ ५ ॥ कारण निमित्त उजागर मेरो । सरण गह्यो अब तेरो रे । मन० । नगत वबल प्रन्नु जगत उजेरो । तिमिर मोह हरो मेरो रे । मन० ॥ ६ ॥ नगति तिहारी मुझ मन जागी । कुमति पंथ दियो त्यागी रे । मन० । आतमज्ञान नान मति जागी । मुझ तुझ अंतर नागी रे । मन० ॥ ७ ॥

इति श्री ऋषन्न जिन स्तवनम् ॥

श्री अजितनाथ जिनस्तवन ।

सुणीयो जी करुणा नाथ नवदधि पार कीजो जी

॥ ए देशी ॥

तुमसुणीयो जी अजित जिनेस नवोदधि पार कीजो जी । तु० ॥ आंकणी ॥ जन्म मरण जल फिरत अपारा । आदि अंत नही घोर अंधारा । हुं अनाथ उरज्यो मझधारा । टुक मुझ पीर कीजो जी । तुम० ॥ १ ॥ कर्म पहार कठन दुख-दाइ । नाव फसी अब कौन सहाई ॥ पूर्ण दयासिंधु जगस्वामी । झटती उधार कीजो जी । तुम० ॥ २ ॥ चार कषाय करस अतिजारे वरवा अनंग जगत सब जारे । जारे त्रिदेव इंद्र फुनदेवा । मोह उवार दीजो जी । तुम० ॥ ३ ॥ करण पांच अति तस्कर नारे । धरम जहाज प्रीति कर फारे । राग फांस डारे गर मोरे । अब प्रभु फिरक दीजो जी । तुम० ॥ ४ ॥

तृष्णा तरंग चरी अति भारी । बहे जात सब जन तन धारी । मान फेन अति उमंग चढ्यो है । अब प्रभु शांत कीजो जी ॥ तुम० ॥ ५ ॥ लाख चउरासी भमर अतिभारी । मांहि फस्यो हुं सुद्ध बुद्ध हारी । काल अनंत अंत नहीं आयो । अब प्रभु काढ लीजो जी ॥ तुम० ॥ ६ ॥ आतम रूप दब्यो सब मेरो । अजित जिनेसर सेवक तेरो । अबतो फंद हरो प्रभु मेरो । निरभय थान दीजो जी ॥ तुम० ॥ ७ ॥

इति श्रीअजितजिन स्तवनम् ॥ २

श्री संभवनाथ स्तवन ।

॥ हिरणी यव चरे ए देशी ॥

संभव जिन सुख कारीया ललना । पूरण हो तुम गुण भंडार । पूजो प्रभु भावसे ललना ॥ दुख दुर्गति दूरे हरे ललना । काटेहो जन्ममरण संसार । पदकज जो

मन लावसे ॥ ललना ॥ १ ॥ प्रथम विरह प्रभु तुम तणो । ल० । दूजो हो पूर्वधर-भेद । देखो गति करमनी । ल० । पंचम-काल कुगुरु बहु । ल० । पाख्यो हो जिन-मत बहु भेद । वात को तरणकी । ल० ॥ २ ॥ राग द्वेष बेहु मन वसै । ल० । लरे हो जिम सौकण रांक । भूले आत भरममें । ल० । अमृत छोर जहर पिये । ल० । लीये हो दुःख जिन मत छांड । वांधे अति करममें । ल० ॥ ३ ॥ करुणा रस भरे थोकले । ल० । संत हो पर दुख जानन हार । फूले सुख हरम में । ल० । मनकी पीर न को सुने । कैसे हो करिये निरधार । प्रभु तुम धरममे । ल० ॥ ४ ॥ एक आधार छै मोह भणी । ल० । तुमरे हो आगम परतीत । मन मुझ मोहिया । ल० । अवर भरम सब छोरीया । ल० । धारीहो तुम आण पुनीत । एही जग जोहीया । ल० ॥ ५ ॥ जुग प्रधान पुरष तणी । ल० । रीति हो मुझ

मन सुखदाय देखी सुन कारणी । ल० । एही जिनमत रीत है । ल० । मीत हो और सब ही विहाय । भव सिंधु तारणी ॥ ल० ॥ ६ ॥ धन्य जनम तिस पुरुषका । ल० । धारी हो तुम आण अखंड । मन वच काय सुं । ल० । आतम अनुभव रस पीया । ल० । धीया हो तुम चरणमे मंड चित हुलसाय सुं । ल० ॥ ७ ॥

इति श्री संभव जिन स्तवनं ॥ ३ ॥

। श्रीअभिनंदन जिनस्तवन ।

होरी की चाल ॥

परम आनंद सुख दीजोजी । अभि-नंदन थारा । अखय अभेद अछेद सरूपी । ज्ञान भान उजवारा । चिदानंदघन अं-तरजामी । धामी रामी २ त्रिभवन सारा जी । अ० ॥ १ ॥ चार प्रकारना बंध निवारी । अजर अमर पद धारा । करम भरम सब छोरदीये हैं । पामी सामी २ । परम

करताराजी ॥ अ० ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान दर्शन सुख लीना। मेट मिथ्यात अंधारा। अमर अटल फुन अगुरुलघुको। धारा सारा २ अनंत बल न्याराजी ॥ अ० ॥ ३ ॥ बंध उदय विन निर्मल जोति। सत्ताकरी सब छारा। निज स्वरूप त्रय रत्न बिराजे। छाजे राजे २ आनंद अपाराजी। अ० ॥ ४ ॥ ज्ञान वीर्य सुख जीतव धारी। मदन भूत जिन गारा। त्रिभुवन में जस गावत तेरा। जगस्वामी २ प्राणप्याराजी। अ० ॥ ५ ॥ निज आतम गुण धारी प्रभु जी। सकल जगत् सुखकारा। आनंद चंद जिनेसर मेरा। तेरा चेरा २ हुं सुख काराजी ॥ अ० ॥ ६ ॥

इति श्री अभिनंदन जिनस्तवनम् ॥ ४ ॥

श्रीसुमतिनाथ जिन स्तवन।

नाथ कैसे गज के फंद छुडाये ॥ ए देशी ॥

सुमति जिन तुम चरणे चित दीनो।

एतो जनम जनम दुख भीनो ॥ सु० ॥ आंकणी ॥ कुमति कुटल संग दूर निवारी । सुमति सुगुण रस भीनो । सुमतिनाथ जिन मंत्र सुण्यो है । मोह नींद भइ खीनो सु० ॥ १ ॥ करम परजंक बंक अति सिज्या । मोह मूढता दीनो । निज गुण भूल रच्यो परगुण में । जनम मरण दुख लीनो ॥ सु० ॥ २ ॥ अब तुम नाम प्रभंजन प्रगट्यो । मोह अभ्र भय कीनो । मूढ अज्ञान अविरती एतो । मूल भीन भये तीनों ॥ सु० ॥ ३ ॥ मन चंचल अति भ्रामक मेरो । तुमगुण मकरंद पीनो । अवरदेव सब दूर तजत है । सुमति गुपति चित दीनो ॥ सु० ॥ ४ ॥ मात तात तिरिया सुत भाई । तन धन तरुण नवीनो । ए सब मोह जाल की माया । इन संग भयो है मलीनो ॥ सु० ॥ ५ ॥ दरशण ज्ञान चारित्र तीनो । निज गुण धन हर लीनो । सुमति प्यारी भई रखवारी । विषय इंद्री भइ

खीनो ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुमति सुमति समता रस सागर । आगर ज्ञान नरीनो । आतम रुप सुमति संग प्रगटे । शम दम दान वरीनो ॥ सु० ॥ ७ ॥

इति श्री सुमति जिन स्तवनम् ॥

श्रीपद्मप्रन्न स्तवन ।

तषत हजारेनुगयो मैनू ठरू कै ॥ ए देशी ॥

पद्मप्रन्नु मुऊ प्यारा जी । मन मोहन गारा ॥ चंद चकोर मोर घन चाहे । पंकज रविवन सारा जी ॥ मन० ॥ १ ॥ त्यूं जिनमूर्त्ति मुऊ मन प्यारी । हिरदे आनंद अपारा जी ॥ मन० ॥ २ ॥ अब क्यों बेर करी मुऊ स्वामी । नवदधिपार उतारा जी ॥ म० ॥ ३ ॥ पंच विघन नय रति तुम जीती । अरति काम विडारा जी ॥ म० ॥ ४ ॥ हास सोग मिथ्या सब ठारी । नींद अत्याग उखारा जी ॥ म० ॥ ५ ॥ राग द्वेष घीन मोह अज्ञाना । अष्टादश

रोग जारा जी। म० ॥ ६ ॥ तुम ही निरं-
जन जये अविनाशी। अब सेवक की
वारा जी ॥ म० ॥ ७ ॥ हुं अनाथ तुम
त्रिजुवननाथा। वेग करो मुऊ सारा जी
॥ म० ॥ ८ ॥ तुम पूरण गुण प्रजुता बाजे।
आतमराम आधारा जी। म० ॥ ए ॥

इति श्री पद्मप्रज जिन स्तवनम् ॥ ६ ॥

श्रीसुपार्श्वनाथ जिन स्तवन

मंदिर पधारो मारा पूज जी ॥ ए देशी ॥

श्री सुपास मुऊ बीनती। अब मानो दी-
नदयाल जी। तरण तारण तुम बिरुद बे।
जगत बठल किरपाल जी। श्रीसु० ॥ १ ॥
अक्षर जाग अनंत में। चेतनता मुऊ बोर-
जी। करम जरम बाया महा जिन। कीनो
तम महा घोर जी। श्रीसु० ॥ २ ॥ घन घटा
बादित रवि जिसो। तिसो रह्यो ज्ञान उजा-
स जी। किरपा करो जो मुऊजणी। थाये पूर-
ण ब्रह्म प्रकास जी। श्रीसु० ॥ ३ ॥ विन ही

निमित्त न नीपजे। माटी तनो घट जेमजी। तिम ही निमित्त जिनजी विना। उजल थाउं हूं केमजी। श्रीसु०॥४॥ त्रिकरण शुद्ध थावे यदा। तदा सम्यग दर्शण पाम जी। दूजे त्रिक ब्रह्म ज्ञान है। त्रिक मिटे शिवपुर ठाम जी। श्रीसु०॥ ५ ॥ एही त्रिण त्रिक मुझ दीजीए। दीजिये जस अपार जी। कीजीये भक्तसहायता। दीजिए अजरअमारजी ॥ श्री०॥ ६ ॥ अब जिनवर मुझ दीजिए। आतम गुण भरपूर जी। कर्म तिमिर के हरण कों। निर्मल गगन जूं सूरजी श्री सु० ॥ ७ ॥

इति श्री सुपार्श्व जिनस्तवनम् ॥ ७ ॥

श्री चंद्रप्रभ जिनस्तवन।

चाहत श्री प्रभु सेवा वा करूंगी उलटी कर्म वनाईरी ए देशी ॥

चाह लगी जिनचंद्र प्रभु की। मुज मन सुमति ज्युं आइरी। भरम मिथ्या-

भत डुर नस्यो है । जिन चरणांचित लाइ सखीरी ॥ चा० ॥ १ ॥ सम संवेग निरवेद लस्यो है । करुणारस सुखदाइरी । जैन बैन अति नीके सगरे, ए नावना मन-नाई ॥ स० ॥ चा० ॥ २ ॥ संका कंखा फल प्रति संसा । कुगुरु संग छिटकाइरी । परसंसा धर्म हीन पुरुष की । इन नवमांहि न कांइरी ॥ स० ॥ चा० ॥ ३ ॥ डुग्ध सिंधु रस अमृत चाखी । स्यादवाद सुख-दाइरी । जहरपान अब कौन करत है । डुरनय पंथ नसाइ ॥ स० ॥ चा० ॥ ४ ॥ जब लग पूरण तत्व न जाण्यो । तब लग कुगुरु नुलाइरी । सप्तनंगी गर्नित तुम वांणी । नव्यजीव सुखदाई ॥ स० ॥ चा० ॥ ५ ॥ नाम रसायण सहु जग नासे । मर्म न जाने कांइरी । जिन वाणी रस कनक करण को । मिथ्या लोह गमाइ ॥ स० ॥ चा० ॥ ६ ॥ चंद्र किरण जस उज्जल तेरो । निर्मल जोत सवाइरी । जिनसेव्यो निज

आतम रूपी । अवर न कोइ सहाइ ॥ स० ॥ चा० ॥ ७ ॥

इति श्री चन्द्रप्रभजिनस्तवनम् ॥

श्री सुविधिनाथ जिनस्तवन ।

सुविधि जिन वंदना पापनिकंदना जगत आनंदना मुक्ति दाता। करम दल खंडना मदन विहंडना धरम धुर मंडना जगत त्राता ॥ अवर सहु वासना छोर मन आसना तेरी उपासना रंग राता । करो मुझ पालना मान मद गालना जगत उजालना देह साता ॥ सु० ॥ १ ॥ विविध किरीया करी मूढता मन धरी एक पखेलरी जगत भूल्यो । मान मद मनधरी सुमति सब परहरी जैन मुनि भेष धर मूढ फूल्यो ॥ एही एकंतता अति ही दुरदंतता नास कर संतता दुःख झूल्यो ॥ संग सिद्धि कही ज्ञान किरीया वही दूध साकर मिली रस

घोल्यो ॥ स० ॥ २ ॥ बिना सरधान के ज्ञान नहीं होत है ज्ञान बिन त्याग नहीं होत साचो । त्याग बिन करमका नास नहीं होत है करम नासे बिना धरम काचो ॥ तत्त्व सरधान पंचंगी संमत कह्यो स्याद्वादे करी बैन साचो ॥ मूल निर्युक्ति अति भाष्य चूरण भलो वृत्ति मानो जिन धर्म राचो ॥ स० ॥ ३ ॥ उत्सर्ग अपवाद अपवाद उत्सर्ग उत्सर्ग अपवाद मन धार लीजो । अति उत्सर्ग उत्सर्ग है जैन में अति अपवाद अपवाद कीजो । ए षड भंग है जैन बाणी तने सुगुरु प्रसाद रस घुट पीजो । जब लग बोध नहीं तत्त्व सरधानका तब लग ज्ञान तुमको न लीजो ॥ सु० ॥ ४ ॥ समय सिद्धांतना अंग साचा सबी सुगुरु प्रसादथी पार पावे । दर्शन ज्ञानचारित करी संयुता दाह कर कर्मको मोख जावे । जैन पंचंगीकी रीति भांजी सबी

कुगुरु तरंग मन रंग लावे। ते नराज्ञान को अंस नहीं ऊपनो हार नरदेह संसार धावे ॥ सु० ॥ ५ ॥ तत्त्व सरधान बिन सर्व करणी करी वार अनंत तुं रह्यो रीतो। पुण्य फल स्वर्गमें जोग ऊधो गिस्यो तिर्यग् औतार बहुवार कीतो। ऊंटका मेंगणा खांड लागी जिसो अंतमें स्वाद से भयो फीको। चार गत वास बहु दुख नाना भरे भयो महा मूढ सिर मौर टीको ॥ सु० ॥ ६ ॥ सुविधि जिनंद की आन अवधार ले कुमत कुपंथ सब दूर टारो। पक्ष कदाग्रह मूल नहीं तानियो जानीयो जैन मत सुध सारो। महा संसार सागर थकी नीकली करत आनंद निज रूप धारो। सुकल अरु धरम दोउ ध्यान को साधले आतमा रूप अकलंक प्यारो ॥ सु० ॥ ७ ॥

इति श्री सुविधि जिनस्तवनम्।

श्री शीतलनाथ जिनस्तवन।

बणजारे की देशी।

शीतल जिनराया रे त्रिभुवन पूरण चंद शीतल चंदन सारिसो जिनराया रे। जिन। मुझ मन कमल दिनंद ज्यों लोहने-पारसो ॥ जि० ॥ १ ॥ जि० ॥ और न दाता कोय अजय अषेद अभेदनो ॥ जि० ॥ जि० ॥ सगरेदेव निहार कौन हरे मुझ के-दनो ॥ जि० ॥ २ ॥ जि० ॥ गर्भवास दुःख पूर कलमल संयुत थानमें ॥ जि०॥ जि०॥ पित्त सलेषमपूर दुःखभरे बहु जानमें ॥ जि० ॥ ३ ॥ जि०॥ जन मत दुख अपार मोहदशा महा फंदमें ॥ जि० ॥ जि० ॥ अब मन मांहि विकारकीट फंस्यो जैसे गंद में ॥ जि०॥ ४॥ जि० ॥ परबश दीनअनाथ मुझ करुणा-चित आनिये जि० ॥ जि० ॥ तारोजिन-वरदेव वीनतरूी चितठानिये ॥ जि० ॥ ५ ॥ जि० ॥ करुणासिंधु तुम नाम अब मोहि पार उतारिये जि० ॥ जि० ॥ अपणा बिरद

निबाह् अवगुण गुण न विचारिये ॥ जि० ॥ ६ ॥जि०॥ शीतल जिनवर नाम शीतल सेवक कीजिये।जि०॥जि०॥ शीतल आतम रूप शीतलनाव धरीजिये ॥ जि०॥ ७ ॥ जि०

इति श्री शीतलनाथ जिन स्तवनम् । १० ।

श्री श्रेयांसनाथ जिनस्तवन ॥

पीलैं रे प्याला होय मतवाला ए देशी ॥

श्री श्रेयांस जिन अंतर जामी । जग विसरामी त्रिनुवन चंदा ॥ श्री० ॥ श्रे० । कल्पतरु मनवंछित दाता ॥ चित्रावेल चिंतामणि त्राता । मन वंछित पूरे सब आसा ॥ संत उधारण त्रिनुवन त्राता । श्री श्रे० ॥ १ ॥ कोई विरंचि ईस मन ध्यावे । गोविंद विष्णु उमापति गावे। कार्त्तिक साम मदन जस लीना ॥ कमला नवानी नगति रस नीना । श्री श्रे० ॥ २ ॥ एही त्रिदेव देव अरु देवी । श्री श्रेयांस जिन नाम रटंदा ॥ एक ही सूरज जग

परगासे । तारप्रन्ना तिहां कौन गणंदा ॥ श्री श्रे० ॥ ३ ॥ ऐरावण सरिसो गज ढां-डी । लंबकरण मन चाह करंदा । जिन ढोडी मन अवर देवता ॥ मूढमति मन न्नाव धरंदा । श्री श्रे० ॥ ४ ॥ कोइ त्रि-शूली चक्री फुन कोई । न्नामनी के संग नाच करंदा । शांत रूप तुम मूरति नीकी । देखत मुऊ तन मन हुलसंदा । श्री । श्रे० ॥ ५ ॥ चार अवस्था तुम तन सोन्ने । बाल तरुण मुनि मोक्ष सोहंदा । मोद हर्ष तन ध्यान प्रदाता ॥ मूढमति नहीं न्नेद लहंदा । श्री श्रे० ॥ ६ ॥ आतम ज्ञान राज जिन पायो ॥ दूर न्नयो निरधन दु-ख धंदा ॥ समता सागर के विसरामी । पायो अनुन्नव ज्ञान अमंदा ॥ श्री श्रे० ॥ ७ ॥

इति श्री श्रेयांस जिन स्तवनम् ॥ ११ ॥

अथ श्रीवासुपूज्य जिन स्तवन ।

अल्ल की चाल ।

वासुपूज्य जिनराज आज मुऊ तारीये ।

करम कठण दुख देतके वेग निवारीये ॥ वीतराग जगदीश नाथ त्रिज्जुवन तिलो । महा गोप निर्याम धाम सब गुण निलो ॥ १ ॥ कालसुजाव मिलान करम अति तीसरो । होन हार जिय शक्ति पंच मि-ली धीसरो ॥ एक अंस मिथ्यात वात ए सांजली । कीये मदरा पान आंख जइ धामली ॥ २ ॥ पंचम काल विहाल नाथ हूं आइयो । मिथ्या मत बहु जोर घोर अति बाइयो ॥ कलह कदाग्रह सोर कुंगुरु बहु बाइयो । जिन वाणी रस स्वाद के विरले पाइयो ॥ तुऊ किरपा जइ नाथ एक मुऊ जावना । जिन आज्ञा परमाण और नहीं गावना ॥ पक्षपात नही लेस द्वेष किन सूं करूं । एही स्वजाव जिनंद सदा मन में धरूं ॥ ४ ॥ किंचित पुन्य प्रजाव प्रगट मुऊ देखीये । जिन आणा-युत जक्ति सदा मन लेखीये ॥ होन हार सुज पाय मिथ्या मत बांकीये ॥ सार

सिद्धांत प्रमाण करण मन मारीये ॥ ५ ॥
एक अरज मुझ धार दयाल जिनेसरू ।
उद्यम प्रबल अपार दीयो जग ईसरू ॥
तुझ विन कौन आधार नवोदधी तारणे ।
विरुद निवाहो राज करमदल वारणे ॥ ६ ॥
आतमरूप भुलाय रम्यो पर रूप में ।
पर्यो हूं काल अनादि नवोदधि कूप में
। अब काढो गही हाथ नाथ मुझ वारीया
॥ पाउं परमानंद करम रज झारीया ॥ ७ ॥
इति श्री वासपूज्य जिन स्तवनम् ॥

श्री विमल नाथ जिन स्तवन ।

सुंदर चेत वहार सार पाल सरफूले । ए देशी ।

विमल सुहंकर नाथ आस अब हमरी पूरो । रोग सोग नयत्रास आस ममता सब चूरो । दीजो निरनय थान खान अजरामर चंगी । जनम जनम जिनराज ताज बहु नगत सुरंगी ॥ १ ॥ मात तात सुत भ्रात जान बहु सजन सुहाये । कनक

रतन बहु नूर कूर मन फंद लगाये। रंभा रमण अनंग संग बहु केल कराये। संध्या रंग विरंग देख छिनमे विरलाये ॥ २ ॥ पदम राग सम चरण करण अति सोहे नीके। तरुण अरुण सित नयण वयण अमृत रस नीके। वदन चंद ज्यूं सोम मदन सुख माने जीके। तुझ भक्ति विन नाथ रंग पतंग जूं फीके ॥ ३ ॥ गजवर तरल तुरंग रंग बहु भेद विराजे ॥ कंकण हार किरीट करण कुंडल अति साजे ॥ राग रंग सुख चंग भोग मन नीके भायो। तु-झ भक्ति बिन नाथ जान तिन जनम गमायो ॥ ४ ॥ रतन जरत विमान भान जूं भये सनूरे। रंभा रमण आनंद कंद सुख पाये पूरे। खोडस नित्य सिंगार नाच स्थिति सागर पूरे। जिनभक्ति फल पाये मोक्ष तिन नाही दूरे ॥ ५ ॥ धन धन तिन अवतार धार जिन भक्ति सुहानी। दया दान तप नेम सील गुण मनसोछानी ॥

जिनवर जसमे लीन पीन प्रभु अर्च करानी । तुम किरपा भई नाथ आज हुं भक्ति पिछानी ॥ ६ ॥ जग तारक जगदीस काज अब कीजो मेरो । अवर न सरण आधार नाथ हुं चेरो तेरो ॥ दीन हीन अब देख करो प्रभु वेग सहाइ । चातक ज्यूं घनघोर सोर निज आतम लाइ ॥ ७ ॥

इति श्रीविमलनाथ जिन स्तवनम् ॥ १३ ॥

श्री अनन्तनाथ जिन स्तवन ।

नीदरूली बैरण होरही ॥ ए देशी ॥

अनंत जिनंदसु प्रीतडी । नीकी लागी हो अमृतरस जेम ॥ अवरसरागी देवनी । विषसरखी हो सेवा करूं केम ॥ अ० ॥ ॥ १ ॥ जिम पदमनी मन पिउ वसै । निर्धनीया हो मन धन की प्रीत ॥ मधूकर केतकी मन बसे । जिम साजन हो विरही जन चीत ॥ अ० ॥ २ ॥ करसण

मेघ आषाड ज्यूं । निजवाछड हो सुरभी जिम प्रेम ॥ साहिब अनंतजिनंदसू । मुझ लागीहो भक्ति मन तेम ॥ अ० ॥ ॥ ३ ॥ प्रीति अनादिनी दुख भरी । में कीधीहो पर पुदगल संग ॥ जगत भम्यो तिन प्रीत सू । सांग धारी हो नाच्यो नव नव रंग ॥ अ० ॥ ४ ॥ जिस कों आपणा जानीयो । तिन दीधा हो छिनमे अतिछेह ॥ परजन केरी प्रीतडी । में देखी हो अंते निसनेह ॥ अ० ॥ ५ ॥ मेरो कोई न जगतमे ॥ तुम छोडी हो जगमे जगदीस । प्रीत करूं अब कोनसू । तूं त्राता हो । मोने विसवा विस ॥ अ० ॥ ॥ ६ ॥ आतमराम तूं माहरो । सिर सेहरो हो हियडेनो हार ॥ दीनदयाल किरपा करो । मुझ वेगाहो अब पार उतारो ॥ अ० ॥ ७ ॥

इति श्री अनन्तनाथ जिनस्तवनम् ॥

श्री धरमनाथ जिन स्तवन।

माला किहां छेरे ॥ ए देशी ॥

भविकजन वंदोरे धरम जिनेसर धरम स्वरूपी। जिनंद मोरा ॥ परमधरम परगासैरे। परदुख भंजन भविमन रंजन॥ जि० ॥ द्वादस परषदा पासे रे। भविक जनवंदो रे। धरम जिनेसर वंदो परमसुख कंदो रे ॥ १ ॥ धरम धरम सहुजन मुख भाषे ॥ जि० ॥ मरम न जाने कोइ रे। धरम जिनंद सरण जिन लीना ॥ जि० ॥ धरम पिछाणे सोइ रे ॥ भ० ॥ २ ॥ दरव १ भाव २ स्वदया ३ मन आणो ॥ जि०॥ पर ४ सरूप ५ अनुबंधोरे ६ व्यवहारी ७ निश्चे ८ गिनलीजो ॥ जि० ॥ पालो- करम न बंधो रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ जयना सर्व काममे करणी ॥ जि० ॥ धरमदेसना दीजे रे। जिन पूजा यात्रा जगतरणी ॥ जि० ॥ अंतःकरण शुद्ध लीजे रे ॥ भ०॥

॥ ४ ॥ षट काया रक्षा दिलठानी ॥ जि० ॥ निज आतम समझानी रे । पुदगलीक सुख कारज करणी ॥ जि० ॥ सरूप दया कही ज्ञानी रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ करि आरूं-बर जिन मुनिवंदे ॥ जि० ॥ करी प्रजा-वना मंडे रे । विन करुणा करुणा फल-जागी । जन्म मरण डुख ढंडे रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ विधिमारग जयणाकरीपाले ॥ जि० ॥ अधिक हीन नही कीजे रे । आतमराम आनंद घन पायो ॥ जि० ॥ केवल ज्ञानलहीजे रे ॥ ज० ॥ ७ ॥

इति श्री धर्मनाथ जिनस्तवनम् ॥ १५ ॥

श्री शांतिनाथ जिन स्तवन ।

जविक जन नित्य ये गिरिवंदा॥ ए देशी ॥

जविक जन शांतिहे जिन वंदो । जव जवना पाप निकंदो । जविक जनशांति हे जिन वंदो ॥ १ ॥ पूरव जव शांति करीनो । कापोत पाल सुख लीनो ।

करुणा रस सुध मन जीनो । तेतो अन्न-
यदान बहु दीनो ॥ ज० ॥ २ ॥ अचि-
रानंदन सुखदाइ । जिन गर्नेशांति क-
राइ । सुरनर मिल मंगल गाइ । कुरु मंडन
२ मारिनसाइ ॥ ज० ॥ ३ ॥ जगत्याग
दान बहुदीना । पामर कमला पति
कीना । सुरूपंच महा व्रत लीना । पाया
केवल ज्ञान अहना ॥ ज० ॥ ४ ॥ जग
शांतिक धरम प्रगासे । जव जवना अघ
सहु नासे । सुरुज्ञान कला घट जासे ।
तुमनामे अरे २ परम सुख पासे ॥ ज०
॥ ५ ॥ तुमनाम शांति सुख दाता । तुं
मात तात मुऊ त्राता । मुऊ तप्त हरो
गुण ज्ञाता । तम शांतिक अरे २ जगत
विधाता ॥ ज० ॥ ५ ॥ तुम नामे नव
निधलहिये । तुम चरण शरणागहि र-
हिये । तुम अर्चन तन मन वहिये ।
एही शांतिक अरे २ जावना कहिये ॥

नवि० ॥ ६ ॥ हुंतो जनम मरण डुख दहियो । अब शांति सुंधारस लहियो । एक आतम कमल उमहियो । जिन शांति अरे२ चरणकज गहियो ॥ नवि०॥७॥

इति श्री शांतिनाथ जिन स्तवनं ॥ १६ ॥

श्री कुंथुनाथ जिनस्तवन ।

भावनाकी देशी ॥

कुंथु जिनेसर साहिब तुं धणी रे । जगजीवन जगदेव । जगत उधारण शिवसुखकारणे रे ।.निस दिन सारो सेव ॥ कुं० ॥ १ ॥ हुं अपराधी काल अनादिनोरे । कुटल कुबोध अनीत । लोभक्रोध मदमोहमाचीयो रे । मठर मगन अतीत॥कुं० ॥२॥ लंपट कंटक निंदक दंभीयो रे । परवंचक गुण चोर । अपथापक पर निंदक मानीयो रे । कलह कदाग्रह घोर ॥ कुं० ॥ ३ ॥ इत्यादिक अवगुण कहुं केतला रे । तुम सब जानत हार ।

जो मुझ वीतक बीत्यो वीतसे रे । तुं जाने करतार ॥ कुं० ॥ ४ ॥ जो जगपूरण वैद्य कहाइयो रे । रोग करे सब दूर । तिनही अपणा रोग दिखाइये रे । तो होवे चिंता चूर ॥ कुं० ॥ ५ ॥ तुं मुझ साहिब वैद्य धनवंतरी रे। कर्म रोग मोह काट । रतनत्रयी पथ मुझ मन मानीयो रे दीजो सुखनो थाट ॥ कुं० ॥ ६ ॥ निर्गुणलोह कनक पारस करे रें । मांगे नही कुछ तेह ॥ जो मुझ आतम संपद निर्मली रे ॥ दासतणी अब देह ॥ कुं० ॥७॥

इति श्री कुंथुनाथ जिन स्तवनम् ॥ १७ ॥

श्री अरनाथजिन स्तवन ।

चंद्रप्रभु मुखचंद्र सखी मोने देखणदे ए देशी ॥

अरेजिनेश्वरचंद सखी मोने देखणदे । गत कलिमल दुख धंद ॥ स० ॥ त्रिभुवन नयनानंद । स० । मोह तिमर जयो-

मंद ॥ स० ॥ १ ॥ उदर त्रिलोक असंख में । स० । महरिद नीर निवास । स० । कठन सिवाल अछादीयो । स० । करम पमल अठतास ॥ स० ॥ २ ॥ आदि अंत नही कुंमनी ॥ स० ॥ अतिही- अज्ञान अंधेर । स० । स्वजनकुटुंवे मो- हीयो । स० । वीत्यो सांझ सवेर ॥ स० ॥ ३ ॥ खय उपसम संयोगथी । स० । करम पटल नयो दूर । स० । ऊरध मुखी पुन्ये कस्यो स० । स्वजन संग कस्यो चूर ॥ स० ॥ ४ ॥ पहुतो जिनवर आसना । स० । दीठो आनंदपूर । स० । दीनद- याल कृपाकरी । स० । राखो चरण हजूर ॥ स० ॥ ५ ॥ जिन कष्टे हूं आवीयो ॥ स० ॥ जाणे तूं करतार । स० । विरुद सुण्यो जिन ताहरो । स० । त्रिनुवन तारणहार ॥ स० ॥ ६ ॥ सुमति सखी सुण वारता । स० । ए सब तुझ उपगार ।स०।

आतमराम दिखालीयो । स० । वंछित फलदातार ॥ स० ॥ ७ ॥

इति श्री अरनाथ जिन स्तवनम् ॥ १८ ॥

श्री मल्लिनाथ जिन स्तवन ॥

रामचंद के बाग चंपा मोहर रह्यो ॥ ए देशी ॥

मल्लिजिनेसरदेव भवदधि पार करो जी ॥ तूं प्रभु दीनदयाल । तारकविरुद धरो जी ॥ १ ॥ तुम सम बेद न कोय । जानो मर्म खरोरी । जावे जिस विध-रोग । तैसोही ज्ञान धरोरी ॥ २ ॥ अड-कर्म चार कषाय । रोग असाध्य कह्योरी । मदन महा दुख देन । सब जग व्याप रह्योरी ॥ ३ ॥ तूं प्रभु पूरण बेद । त्रिभु-वन जाच लह्योरी । किरपा करो जग-नाथ । अब अवकास थयो री ॥ ४ ॥ वचन पियूष अनूप । मुझमन माहि धरो री । दीजो पथ्यप्रदान । मन तन दाह हरो री ॥ ५ ॥ सम्यग दर्शन ज्ञान ।

खम मृदु सरल नलो री । तोष अवेद अनंग । तोसहु रोग दव्यो री ॥ ६ ॥ पथ्योदन जिनजक्ति । आतमराम रम्यो री । तूठो मल्लिजिनेस । अरिदल क्रूर दम्यो री ॥ ७ ॥

इति श्री मल्लिनाथ जिन स्तवनम् ॥ १९ ॥

श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ।

प्रेमला परणी ॥ ए देशी ॥

श्री मुनिसुव्रत हरिकुलचंदा । दुरनय पंथ नसायो । स्याद्वाद रस गर्भितवानी । तत्वस्वरूप जनायो । सुन ग्यानी जिन-वाणी रस पीजो अति सन्मानी ॥ १ ॥ बंध मोक्ष एकांते मानी मोक्ष जगत उछेदे । उनय नयात्मजेद गहीने तत्त्वप-दार्थ वेदे । सुन ग्या०॥ २ ॥ नित्य अनित्य एकान्त गही ने । अस्थ क्रिया सब नासै । उसय स्वरूपे वस्त विराजे । स्या-द्वाद इम जासै ॥ सुन ग्या० ॥ ३ ॥

करता भुगता वाहिज दृष्ट। एकांते नहीं थावे। निश्चय शुद्ध नयात्म रूपे। कुण करता भुगतावे ॥ सु० ॥४॥ रूप विना भयो रूप सरूपी। एक नयात्मसंगी। तन व्यापी विभु एक अनेका। आनंदघन दुख गी ॥ सु०॥५॥ शुद्ध अशुद्ध नास अविनासी। निरंजन निराकारो। स्यादवाद मत सगरो नीको दुरनय पंथ निवारो ॥ सु० ॥ ६ ॥ सप्तभंगी मत दायक जिनजी। एक अनुग्रह कीजो। आतमरूप जिसो तुम लाधो। सो सेवक को दीजो ॥ सु० ॥ ७ ॥

इति श्री मुनिसुव्रत जिनस्तवनम् ॥ २०

श्री नमिनाथ जिनस्तवन।

आ मिलवे बंसी वाला कान्हा ए देशी।

तारोजी मेरे जिनवर सांइ बांह पकड कर मोरी। कुगुरु कुपंथ फंदथी निकसी

। सरण गही अब तोरी ॥ ता० ॥ १ ॥ नित्य अनादि निगोद मे रुलतां। झूलतां भवोदधि मांही। पृथ्वी अप तेज वात स्वरूपी। हरितकाय दुख पाइ ॥ ता० ॥ २ ॥ बितिचउरिंद्री जातभयानक संख्या दुखकी न कांइ। हीन दीन भयो परवस पर के ऐसे जनम गमाइ ॥ ता० ॥ ३ ॥ मनुज अनारज कुलमें उपनो तोरी खबर न काइ। ज्यूं त्यूं कर प्रभु मग अब परख्यो। अब क्यों वेर लगाइ ॥ ता० ॥ ४ ॥ तुम गुण कमल भ्रमर मन मेरो। उडत नहीं है उडाइ। तृषत मनुज अमृत रस चाखी। रुच से तप्त बुझाई ॥ ता० ॥ ५ ॥ भवसागर की पीर हरो सब। मेहर करो जिनराइ। दृग करुणा की मोह पर कीजो। लीजो चरण बुहाइ। ॥ ता० ॥ ६ ॥ विप्रानंदन जग दुख कंदन। जगत वल्लभ सुखदाइ। आत-

मराम रमणजग स्वामी । कामत फल वरदाइ ॥ ता० ॥ ७ ॥

इति श्री नमिनाथ जिनस्तवनम् ॥ २१ ॥

श्री नेमिनाथ जिनस्तवन.

चैतमे सोहाग सहियां फूलीयो सब रूपमें । ज्ञान फूल चारित फल नर । लागीयो चिद रूप में । पुन्य योवन चस्यो नीको । करण पंचस नूरीयां । अब देख नेम वियोग सेती । नये छिनक में झूरीयां ॥ १ ॥ वैसाख तामस ऊठीयो सब फूल फल मुरझाइया । चित दाह नस्मीन्नूत कीनो शांतिरस सुसाइयां । मन सैल राज कठन कीनो दंन्न नागन धाइयां । अब प्यास शांत न होत किम ही त्रिन्नुवन धन जल पाइयां ॥ २ ॥ जेठ जागी कुगुरु वायु अंधीयां बहुं आइयां । तन मन सबी मलीन कीने । नयन रज बहु छाइयां ॥ कहु आप पर की सूफ

नाहीं परोघोर अंधेरमें। सब रूप सुन्दर
बार कीने। मोह महातम घेर में ॥ ३ ॥
आषाड कुगुरु प्रदान कीनो तस वात
चउरासीयां। मानसी तन रोग पीरा घरम
गरमी फासीयां। अधोभूमी नरक ताती
बातीयां वहु दुख भरे। अब नेम सम-
रण कीजीये तन तपत टारे दुख हरे
॥ ४ ॥ सावन घटा घनघोर गरजी नेम
वानी रसभरी। अपछंद निंदक संघके
तिन जान सिर विजरी परी। सत्ता
सुभूमी भव्यजनकी अंसअंसे सवठरी।
अब आस पुन्य अंकुर की मनमोद
सहियां फिरखरी ॥ ५ ॥ भादो भए फुन
पुन्य पूरे धरम वारी लह लही। सहस
अष्टादस दले सीलांग संज्ञा कुमरही।
सरधान जलसुध सींचता अतिज्ञान तरु-
वर फुल रहे। लागेंगे अजराअमर फल
मधु नेम आणासिर वहे ॥ ६ ॥ आसुपु-

कारे कुगुरु पितरा हमरी गत तुम कीजीये। भव्य ब्राह्मण खीर जिनवच चाखीये रस पीजीये। कुगुरु खाली हाथ बैठे पाये नरभव खोय के। पूजो दसहरा धरम दस विध ज्ञान दरसन जोय के ॥ ७ ॥ कार्तिक दीवाली ज्ञान दीपक भरम तिमर उठाइया। अब ज्ञानपंचम निकट आई करण त्रिकसुद्ध पाइया। अष्टदृष्टि जोग-साधी भावनात्रिक भाइया। अब भइ कुमति तस दूरी सीत जिन वचपाइया ॥ ८ ॥ मगसर भये सब ठार ममता जानमहा डुख रासीया। सुत भ्रात भ्राता मित्र जननी जान महा डुख फा-सिया। कोई न तेरा मीत दुरजन सज्जन संगी हित करो। इक नेम चरण आधार शिवमग आस मन मांही धरो ॥ ९ ॥ पोषे तनु परिवार पर जनमित तेरे हैं नही। तमित दमक जू कान करिवर

राग संध्या छिन रही। चक्रीहलधर संख भृतजन देख सुपना रैनका । कोइन थि-रता जान अब मन आसरा जिन बैन का ॥१०॥ मोहमह की वासना मन ज्ञान दरसन मे लिया । याम सुमति तप कुठारे करम छिल्लक छेलीया । जार के सब मदन वन घन मोखमार्ग फैलीया । अब देख-चंग अखंड राजल नेम होरी खेलीया ॥ ११ ॥ सील सज तनु केसरी पिचका-रीयां सुज्ञ भावना । ज्ञान मादल ताल सम रस रागसुध गुण गावना । धूर-ळडी करमकी सब सांग सगरें त्यागीया । नेम आतमराम का धरिध्यान शिव मग लागिया ॥ १२ ॥

इति श्री नेमनाथ जिनस्तवनम् ॥ २२ ॥

श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवन ।

राग वढंस ॥

मूरति पास जिनंदकी सोहनी। मोहनी

जगत उधारण हारी ॥ मू० ॥ आंकणी ॥ नील कमल दल तन प्रभु राजै। साजे त्रिभुवन जन सुखकारी। मोह अज्ञान मान सबदलनी। मिथ्या मदन महा अघजारी ॥ मू० ॥ १ ॥ हूं अति हीन दीन जगवासी। माया मगन भयो सुऋबुद्ध हारी। तो विन कौन करे मुऊ करुणा। वेगालो अब खबर हमारी ॥ मू० ॥ २ ॥ तुम दरसन विन बहु डुख पायो। खाये कनक जैसे चरी मतवारी। कुगुरु कुसंग रंगवस उरऊयो। जानी नही तुम भगती प्यारी ॥मू०॥ ३ ॥ आदिअंत बिन जग भरमायो। गायो कुदेव कुपंथ निहारी। जिन रसछोर अन्यरस गायो। पायो अनंत महा डुख भारी ॥ मू० ॥ ४ ॥ कौन ऊधार करे मुऊ केरो। श्री जिन विन सहु लोक मऊारी। करम कलंक पंक सब जारे। जो जन गावत भगति तिहारी ॥ मू० ॥ ५ ॥ जैसे चंद

चकोरन नेहा। मधुकर केतकी दलमन प्यारी। जनम जनम प्रभु पास जिनेसर। वसो मन मेरे भगति तिहारी ॥ मू०॥६॥ अश्वसेन वामा के नंदन। चंदन सम प्रभु तप बुझारी। निज आतम अनुभव रस दीजो। कीजो पलक में तनु संसारी ॥ मू० ॥ ७ ॥

इति श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवनम् ॥ २२ ॥

श्री महावीर जिनस्तवन।

गीत की देशी ॥

भवदधि पार उतारणी जिनवर की वाणी। प्यारी है अमृत रस केल। नीकी है जिनवर की वाणी ॥ भरम मिथ्यात निवारियो। जि०॥ दीधो है अनुभव रस मेल। प्यारी है जि० ॥१॥ हम सरिखा अति दीन ने। जि०। दूखम है अति-घोर अंधार। प्या०। जि०। ज्ञान प्रदीप जगावीयो। जि०। पाम्या है अतिमारग

सार । प्या० । जि० ॥ २ ॥ अंग उपांग
स्वरूप सुं । जि० । पइन्ने हे ठ छेद गरंथ
। प्या० । जि० । चूर्ण भाष्य निर्युक्ति सुं
। जि० । वृत्ति हे नीकी मोक्ष को पंथ ।
प्या०।जि०॥३॥ सदगुरुकी एतालिका। जि०।
जासु हे खुले ज्ञान भंडार । प्या०। जि०।
इन विन सूत्र वखाणीयो जि० । तस्कर
हे तिण लोपि कार । प्या०। जिन० ॥४॥
सोहम गणधर गुण निलो । जि० । कीधों
हे जिन ज्ञान प्रकाश । प्या० । जि० ।
तुझ पाटो धरदीपता । जि० । टास्यो हे
जिन दुरनय पास । प्या० । जि० ॥ ५ ॥
हम सरिखा अनाथने जि० । फिरता हे
वीत्यो कालअनंत । प्या० । जि० । इन
भववीतक जे थया । जि० । तू जाणे हे
तौसु कौन कहंत । प्या० । जि० ॥ ६ ॥
जिन वाणी विन कौन था । जि० । मुझनै
हे देता मारग सार । प्या० । जि० । जयो

जिन वाणी जारता । जि० । जाख्या हे मिथ्यामत जार । प्या० ॥ जि० ॥ ७ ॥ हुं अपराधी देवनो । जि० । करीये हे मुझने वगसीस । प्या० ॥ जि० ॥ निंदक पार-उतारणा । जि० । तूही हे जग निर्मल ईस ॥ प्या० । जि० ॥ ८ ॥ बालक मूर्ख आकरो । जि० । धीठो हे वलि अति अवि-नीत । प्या० । जि० । तोपिण जन के पालिये । जि० ॥ उत्तम हे जननी ए रीत । प्या० । जि० ॥ ९ ॥ ज्ञान हीन अवि-वेकीया । जि० । हठी हे निंदक गुण चोर । प्या० । जि० । तोपिण मुझने ता-रीये । जि० । मेरी हो तोरो मोहनी दोर ॥ प्या० ॥ जि० ॥ १० ॥ त्रिसला नंदन वीरजी । जि० । तूतो है आसाविसराम । प्या० । जि० । अजरअमरपद दीजीये । जि० । थाउं हे जिमआतमराम ॥ प्या० जि० ॥ ११ ॥

॥ इति श्री महावीर जिनस्तवनम् ॥

॥ कलश ॥

चौबीस जिनवरसयल ॥

सुख कर गावतां मन गहगहे । संघ रंग उमंग निजगुण ज्ञावतां शिव पद लहे ॥ नोमे अंबालानगर जिनवर वैन रस ज्ञविजन पिये । संवछरो खं० अग्निर निधिए विधु१ रूप आतम जस जस किये १

॥ दोहा ॥

जिनवर जस मनमोदथी । हुकम मुनि-के हेत । जो ज्ञवि गावत रंगसु । अजरअं-मर पद देत ॥

इति श्री आत्मारामानंदविजयकृता चतुर्विंशतिका समाप्ता ।

श्रीमद् आत्मारामजी महाराजकृत

॥ द्वादश भावना ॥

अथ प्रथम–अनित्य भावना.

योवन धन थीर नही रेहनारे ॥ आंचली ॥ प्रात समय जो नजरे आवे मध्य दीने नहीं दीसे ॥ जो मध्याने सो नहीं रात्रे क्यों विरथा मन हींसे ॥ योवन० ॥ १ ॥ पवन झकोरे बादर विनसे त्युं शरीर तुम नासे । लछी जल तरंग वत चपला क्यों बांधे मन आसे ॥ योवन० ॥ २ ॥ वल्लभ संग सुपनसी माया इनमें रागहि कैसा । छिनमें उडे अर्कतूल ज्युं योवन जगमे ऐसा । योवन० । ३ । चक्री हरिपुरंदर राजे मद माते रस मोहे । कौन देशमें मरी पहुंते । तिनकी खबर न कोहे ॥ योवन० ॥ ४ ॥ जग मायामें नहीं लोभावे आतमराम सयाने । अजर अ-

मर तुं सदा नित्य है । जिन धनि यह सुनी काने ॥ योवन० ॥ ५ ॥

इति अनित्य नावना ॥

अथ दूसरी अशरण नावना.

राग मराठी

अपने पदको तजकर चेतन परमे फसना ना चाइये ॥ ए देशी ॥ निज स्वरूप जाने विन चेतन जगमें नहीं कोइ है सरना । क्यों नरम नूलाना जान निजरूप आनंद रस घट नरना ॥ निज० ॥१॥ इंड्र उपेंड्र आदि सब राने विना सरन यम मुख परना । अति रोग नराये जीव की कौन करे जगमे करुणा ॥ निज०॥२॥ मात पिता स्वसु भ्रात पुत्र के देखत ही यम ले चलना । मुखवाय रहेंगे सरणा नहीं तिननें को करना ॥ निज० ॥ ३ ॥ मृतक देखी शोच करे मन अपना सोच नहीं करना । ढूढ मुरख तूंरे करम की

गतिसे सहु जगमें फीरना ॥ निज० ॥४॥ जगवन दुःखदावानल दहके हिरन पोतको कोसरना । तिम सरण विना तूं मोहसें पाप पिंडकों क्यों भरना ॥ निज० ॥ ५ ॥ हरि विरंचि ईश नहीं त्राते आपही तिनको क्यों मरना । जिन वचनहि साचे जीवना जितनाहि आयु धरना ॥ निज० ॥ ६ ॥ आतमराम तुं समज सयाने ले जिनवर वचका सरनां । ममता मत कीजे नहीं तेरी मेरी में तें परना ॥ निज० ॥७॥

इति द्वितीय अशरण भावना.

अथ तृतीय संसार भावना.

राग सोरठ ॥ कुबजाने जाडु मारा ॥ ए देशी ॥

उरझायो आतमज्ञानी संसार दुखां-की खांनी उरझायो ॥ आंचली ॥ वेद पाठी मरी पाणज होवे स्वामी सेवक पामी । ब्रह्मा कीट द्विजवर रासभ नृप वर नरकही गामी ॥ उर० ॥१॥ सुरवर खर खर जगपति

होवे रंक राज विसरामी । जग नाटकमे नटवत नाच्यो कर नाना विध तानी ॥ जर० ॥ ३ ॥ कोन गति में जीव न जावे छोडे नहीं कुण थानी । संसारी कर्म संगथी पूर्यो कचवर कुंटी जगनामी ॥ जर०॥३॥ एक प्रदेश नहीं जग खाली जनम मरण नहीं ठानी। पवन झकोरे पत्र गगन ज्युं उडत फिरे जड कामी ॥जर०॥४॥ सत चिद आनंद रूप संभारो छारो कुमत कुरानी । जिनवर भाषित मग चल चेतन तो तुम आतमज्ञानी ॥ जर०॥ ५ ॥

इति तृतीय संसार भावना ॥

अथ चतुर्थ एकत्वभावना

॥ राग वढंस ॥

तूम क्यों भूलपरे ममता में या जगमें कहो कोन हे तेरा ॥तुम०॥ आंचली॥ आयो एकही एकही जावे साथी नहीं जग सुपन वसेरो । एक ही सुख दुःख भोगवे

प्राणी संचित जो जन्मांतर केरो ॥ तुम० ॥ १ ॥ धन संच्यो करी पाप भयंकर भोगत स्वजन आनंद भरेरो । आप मरी गयो नरकही थाने सहे कलेश अनंत खरेरो ॥ तुम०॥ २ ॥ जिस वनितासे मद नहि मातो दिये आभरण हि वसन भलेरो । सो तनु सजी पर पुरुष के संगे भोग करे मन हर्ष घनेरो ॥ तुम०॥ ३ ॥ जीवित रूप विद्युत सम चंचल साभ अनी उद विंदु लगेरो । इनमें क्यों मुरझायो चेतन सत चिद आनंद रूप एकोरो ॥ तुम० ॥ ४ ॥ एकही आतम-राम सुहंकर सर्व भयंकर दूर टरेरो । सम्यग दरसन ज्ञान स्वरूपी भेष संयो-गहि बाह्य धरेरो ॥ तुम० ॥ ५ ॥

इति एकत्व भावना ।

अथ पंचमी अन्यत्व भावना.

॥ राग भेरवी ॥

ब्रह्मज्ञान रस रंगीरे चेतन ॥ ब्रह्म ॥

आंचली ॥ तन धन स्वजन साहायक जे ते इनसे अन्य निरंगीरे। जीवसे एही विलक्षण दीसे अन्यपणा दृग संगीरे॥ ब्रह्म० ॥१॥ जो नवी देह बंधु धन जनसे आतम भिन्नहि मंगीरे । तिन कों सोग शंकुसें पीड़ा व्यापे नहीं दुख भंगीरे ब्रह्म । २ । जेसें कुधातु सें कंचन बिगस्यो दीसे स्वरूप विरंगीरे । गये कुधातु के निजगुण सोहे चमके निजगुन चंगीरे ॥ ब्रह्म० ॥ ३ ॥ करम कुधातुसें चेतन विगर्यो माने सबहि एकंगीरे । सम्यग दरसन चरण तापसे दाहे करम सरंगीरे । ब्रह्म०। ४ । आतम भिन्न सदा जड़तासें सत चिद रूप धरंगीरे । आनंद ब्रह्म सुहं कर सोहे अजर अमर अनंगीरे ।ब्र०।५।

॥ इति अन्यत्व भावना ॥

अथ ६ठी अशुचि भावना.

॥ राग सिंध काफी ॥

तनु शुची नहीं होवे कांहेकुं भरम

भूला नारे तनु । आंचली । रस लोही पल मेद हाड सें मज्जा रेत गुहानारे । आंत मूत पित्त सिंभही कसमल अतिही दुर्गंध भरानारे । तनु० । १ । नवहिज स्रोत झरे मलगंधि रस कर्दम असुहानारे । तनुमे शुचि संकल्पहि करना एहीज नाम अज्ञानारे । तनु० । २ । नव वरननी मुख चंद्रज्यूं निरखी मनमें अति हरषानारे । रुधिर पूयमल मूत्र पेटमें नस-नस मैल भरानारे ॥ तनु० । ३ । रुधिर मंसकी कुच ग्रंथी है मुखसें लाल बहा-नारे । गूथ मूत्रके द्वार घनीले तिनसे भोग करानारे । तनु० । ४ । अशुचितर खान देह शुचि नाही जो सत स्नान करानारे आतम आनंद शुचितर सोहे देह ममता तजरानारे । तनु० । ५ ।

॥ इति अशुचि भावना ॥

अथ सातमी आश्रव भावना

॥ राग ठुमरी भैरवी ॥

आश्रव अति दुखदानारे चेतन आश्रव । आंचली । मनवच कायाके व्यापारे योग यही मुख मानारे । कर्म शुभाशुभ जीवकों आवे आश्रव जिनमत गानारे । आश्रव० । १ । मैत्र्यादि भावना वासित मन पुन्याश्रव सुख दानारे । विषय कषाये पीडित चेतन पापे पींड भरानारे ॥ आश्रव० । २ । जिन आगम अनुसारी वचने । पुन्यानुबंधी पुनानारे ॥ मिथ्या मत वचने करी आवे पापाश्रव दुःख थानारे ॥ आश्रव० ॥ ३ ॥ गुप्तशरीर सें पुन्य सुहंकर करे जगवासी सिया नारे । हिंसक षट्कायाको जंतु जगमें पाप करानारे ॥ आश्रव० ॥ ४ ॥ योग कषाय विषय परमादा विरति रहितहि अग्यानारे । मिथ्या दरसनी आरत

रौद्री पापकरे सुखहानारे ॥ आश्रव० ॥
॥ ५ ॥ आतम सदा सुहंकर निर्मल जि-
न वच अमृत पानारे ॥ करके जीवे सदा
निरंगी पामे पद निरवानारे। आश्रव० ॥६॥

॥ इति आश्रव भावना ॥

अथ आठमी संवर भावना

॥ राग विहाग ॥

जिनंद वच संवर सुनरे सुज्ञानी ॥
आंचली ॥ सब आश्रव को आवत रोके
संवर जिनवर बानी। सो भी दोय भेद
सें वरन्यो द्रव्यभाव सुख दानी ॥ जि-
नंद ॥ १ ॥ करम ग्रहण का छेद करे जो
संवर दरब विधानी। भव हेतु किरिया
जो त्यागे भाव संवर सुख खानी ॥ जि-
नंद ॥ २ ॥ जिस जिस कारण सेंती रुंधे
आश्रव जल पथ पानी। ते ते उपाय
निरोध के तांइ जोडे पंडित ज्ञानी ॥

जिनंद ॥ ३ ॥ खम मृदु सरल अनीहा सेती क्रोध मान छल थानी । लोन्न ए चारो क्रम सें रुन्धे तो कहीए शुन्न ध्यानी ॥ जिनंद ॥ ४ ॥ करे असंयम द्रढता जिनकी ते विषयों विषमानी । इन्द्रिय संयम पूरन सेवी करे जर मुर सें हानी ॥ जिनंद ॥ ५ ॥ तीन गुप्तिसे योगको जीते हरे परमाद कुरानी । अपरमादें पाप योगकुं बिरती सें सुख जानी ॥ जिनंद ॥ ६ ॥ सम्यग् दरससें मिथ्या जीती आरत रौद्रहि धानी । धीर चीत करीने जीत चिदानंद आतमपद निर्वानी ॥ जिनंद ॥ ७ ॥

॥ इति संवर न्नावना ॥

अथ नवमी निर्जरा न्नावना ।

॥ राग कमाच ॥

कुमति मारदे मेरे प्राणी कुरमति ॥

॥ ए देशी ॥

॥ चेतन निर्जरा न्नावना न्नावेरे ॥

चेतन ॥ आंचली ॥ जग तरु बीज भूत करम जे । खेरु करे सुखपाये ॥ सो निर्जरा दोय भेद सुनीजे । सकामा काम बतावेरे ॥ चेतन ॥ १ ॥ संयमी कों सकाम निर्जरा । इतरां को इतर कहावे । कर्म पापका फल जो भोगे । स्वय उपाय सुनावेरे ॥ चेतन ॥ २ ॥ मलयुत कनक तप्त वन्हिसे जेसे दोष जरावे । तप अग्नि सें कर्म तपाये तेसें जीव सुभावेरे ॥ चेतन ॥ ३ ॥ खानो नहिं ऊनोदरि करनी । विरती संखेप गिनावे । रस त्यागे तनु: कष्ट करे जो । इन्द्रिय विषय रुंधावेरे ॥ चेतन ॥ ४ ॥ षट्र भेदे यह बाह्य कह्यो तप । षट्र विध अंतर ठावे । प्रायछित्त वियावच्च सुहंकर । विनय व्युत्सर्ग धरावेरे ॥ चेतन ॥ ५ ॥ शुभ्र ध्याने तपो अग्नि दीपे बाहिर अंदर भावे । संयमीजन करे अदृष्ट निर्जरा

दुर्जर छण खय जावेरे ॥ चेतन ॥ ६ ॥
बंधन गये तुंब ज्यूं जल में । छिनक में
ऊर्धहि आवे । आतम निर्मल सुध पद
पामी । जनम मरण मिटावेरे ॥ चेतन ॥ ७ ॥

॥ इति निर्जरा नावना ॥

अथ दशमी धर्मनावना.

॥ राग माढ ॥

चेतनजी थाने धर्मनी नावना दाखां
जी महाराज हो चेतन जी । आंचली ।
धर्म जिनंद बताया जी महाराराजरे
कांइ जेहने आलंबीहे जीरे कांइ जे-
हने आलंबी । नवोदधि में न डुबायाजी
महाराराजरे ॥ चेतन० ॥ १ ॥ संयम
सत्व सुहाया जी महाराराजरे कांइ ब्रह्म-
अकिंचन तप सुचि सरल गिनायाजी
महाराराजरे ॥ चेतन० ॥ २ ॥ खांत
मार्दव मुक्तिजी महाराराजरे कांइ दस

विध धर्म्मों वीरजिनंद सुनाया जी महा-
राराजरे ॥ चेतन० ॥ ३ ॥ नरक पडंता
राखेजी महाराराजरे कांइ तीर्थंकर पद
धर्म थकी जगपायाजी महाराराजरे ॥
चेतन० ॥ ४ ॥ संकटमे सुख आपेजी
माहाराराजरे कांइ आतमानंदी धर्म अति-
सुख दायाजी माहाराराजरे ॥ चेतन० ॥ ५ ॥

॥ इति धर्मभावना ॥

अथ एकादशमी लोकस्वरूप भावना ।

॥ राग० जन्द काफी० ॥

भवि लोक स्वरूप समररे सम ॥
आंचली ॥ कटि धरि हाथ चरण विस्तारी ।
नर आकृति चित धररे । षद्रव्य पूरण-
लोक समरले उपजत बिनसत थिररे ॥
भवी० ॥ १ ॥ त्रिभुवन व्यापक लोक
विराजे ॥ पृथवी सात सुधररे । घनोद-

धि घन तनु वात वलिकलशे । चार उंर-
रही थीररे ॥ भवी० ॥ २ ॥ वेत्रासन स-
म लोक अधो है । झल्लरी निभ मध्यव
ररे । मुरजाकार ही उर्ध्वलोक हैं । भाषे
जग जिनवर रे ॥ भवी० ॥ ३ ॥ रचना
इसकी किन ही न कीनी । नहीं धार्यो
किन कर रे ॥ स्वयं सिद्ध निराधार लोकये ।
गगन रह्यो ही अचर रे ॥ भवी० ॥ ४ ॥
ईश्वर कृत्यही लोक जो माने । सो आग्या
नहीं बर रे । आत्मानंदी जिनवर जप्पो ।
मान मिथ्या मत हर रे ॥ भवी० ॥ ५ ॥

॥ इति लोकस्वरूप भावना ॥

अथ द्वादशमी बोधिदुर्लभ भावना ।

॥ राग० ठुमरी० ॥

अनंते काल से बोधि दुर्लभ पानारी
। सखी बोधि ॥ आंचली ॥ अकाम नि-
रजरा पुन्य से प्रानी । थावर सें त्रस

थ्यानारी ॥ सखी० ॥ १ ॥ बि त्रि चतु पंच इन्द्री सुहंकर । क्रम सैं तिरयगमाना री ॥ सखी अ० ॥ २ ॥ नरभव आरज देश सुजाति । इन्द्रिय पटुतर गानारी ॥ सखी अ० ॥ ३ ॥ लंबी आयु कथक श्रवण गुन । श्रद्धा सुचितर गानारी ॥ सखी अ० ॥ ४ ॥ तत्त्व निश्चय वोधि रतन सुहंकर । शिव सुख की खानारी ॥ सखी अ० ॥५॥ दुर्लभ वोधि भावना भावे । तो तूं आतमरानारी ॥ सखी अ० ॥ ६ ॥

इति वोधि दुर्लभ भावना ॥

इति वार भावना.

न्यायांभोनिधि महामुनीराज श्रीमद् आत्मारामजी-आनंदविजयजी कृत.

॥ इंद्रवज्रा ॥

श्रीवीरनाथाय नमः प्रकाम-
मनंतवीर्यातिशयाय तस्मै।
अंतस्थमेकांगपरिग्रहो यः
कामादिचक्रं युगपज्जिगाय ॥१॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

जयति भुवनैकभानुः सर्वत्राविहत-केवलालोकः ॥ नित्योदितः स्थिरताप-वर्जितो वर्द्धमानजिनः ॥ १ ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

अथ शंखेश्वर पार्श्वजीन स्तवन.

राग लागी लगन कहो केसे बुटे,
प्राणजीवन प्रभु प्यारेसें ए देशी.

श्री शंखेश्वर निज गुनरंगी, प्राणजी-

वन प्रभु तारेरे ॥ श्री शंखेश्वर ॥ आंचली
अश्वसेन वामाजीको, नंदन चंदन रस सम
सारेरे॥ अनीयाली तोरी अंबुज अखीयां,
करुणा रसभरे तारेरे ॥ श्री शंखेश्वर ॥ १ ॥
नयन कचोले अमृत रोले, भविजन का-
ज सुधारे ॥ भवि चकोर चित्त हर्खे नि-
रखी, चंदकिरण सम प्यारेरे ॥ श्री शं-
खेश्वर ॥ २ ॥ तेरोही नाम रटतहुं निश-
दिन, अन्य आलंबन गरेरे ॥ शरण प-
ड्ये को पार उतारो, एसो विरुद तिहारेरे
॥ श्री शंखेश्वर ॥ ३ ॥ भ्रमत भ्रमत सं-
खेश्वर स्वामी, पामी भ्रम सब डारेरे ॥
जनम मरणकी भीति निवारी, वेग करो
भव पारेरे ॥ श्री शंखेश्वर ॥ ४ ॥ आत-
मराम आनंद रस पुरण, तुं मुज काज
सुधारेरे ॥ अनहद नाद बजे घट अंदर,
तुंही तुंही तान उच्चारेरे ॥ श्री शंखे-
श्वर ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ महावीर स्वामीनुं स्तवन.

राग जोपाली ताल जलद एक ताल.

नाचत सुर पठित बंद मंगल गुन-गारी. नाचत. आंचली. सुर सुंदरी कर संकेत पिकधुनी मील भ्रमरी देत॥ रमक ठमक मधुरी तान, घुंघरु धुनिकारी ॥ नाचत ॥ १ ॥ जय जीनंद शिशिरचंद भविचकोर मोद कंद ॥ कामवाम भ्रम-निकंद, सेवक तम तारी ॥ नाचत ॥ २ ॥ धूंधूं धपतारचंग, खुखुरुघुटट जलतरंग, ॥ वेणुवीणा तार रंग, जय जय अघटारी ॥ नाचत ॥ सिरि सिद्धारथ भूपनंद, वर्ध-मान जिनदिनंद ॥ मध्यमानगरी सुरींद, करे उछव मनहारी ॥ नाचत ॥ ४ ॥ गौतम मुख मुनिवरिंद, तारे भ्रम काट फंद ॥ आतम आनंद चंद, जय जय शिव चारी ॥ नाचत ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ महावीरस्वामीनु स्तवन.

राग माढ. प्रीतलागीरे जिनंदशुं प्रीतलागीरे. आंचली. जैसे धेनु वन फिरेरे, जन वछरे केरे मांह ॥ चरण कमल त्यूं वीर केरे, छिन कही विसरत नाह ॥ जिनंद ॥ १ ॥ विंध्याचल रेवानदीरे, गज वर जूलत नाह ॥ मनमोहन तुम मूर्त्तिरे, सिमिरत मिटे डुःख दाह ॥ जिनंद ॥ २ ॥ तें तार्यों प्रजु मोहकोरे हरि जवसागर पीर ॥ ग्यान नयन मुजे तें दीयेरे, करुणा रसमय वीर ॥ जिनंद ॥ ३ ॥ कोटि वदन कोडि जीजसेंरे, कोरूी सागर पर्यंत ॥ गुन गाउं तेरे जक्तिशुंरे, तो तुम रिण कोन अंत ॥ जिनंद ॥ ४ ॥ कदियक दिन मुज आवशे रे, निरखुं तेरोरे रुप । मो मन आशा तो फलेरे, फिर नपरुं जवकूप ॥ जिनंद ॥ ५ ॥ चरण कमलकी

रेणुमेरे हुं लोटूं जगदीश। अंहि न छो-डूं तव लगेरे, न करे निज सम ईश ॥ जिनंद ॥ ६ ॥ आतमराम तूं माह्ररोरे, त्रिसलानंदन वीर। ज्ञान दिवाकर जग जयोरे, भंजन पर दुःख भीर ॥ जिनंद ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ राधनपुर बिराजमान चउविस जीन साधारण स्तवन.

राग तुमरी. जिनंदा तोरे चरण कम-लकी रे, हुं भक्ति करुं मन रंगे, ज्युं कर्म सुभट सब भंगे, हुं बेसुं शिवपुर ढूंगे। जिनंदा ॥ आंचली ॥ आदि जीन स्वा-मीरे, तुं अंतरजामीरे, प्रभु शांतिनाथ जिनचंदा, तुं अजर अमर सुखकंदा, तुं नाभिराय कुल नंदा ॥ जिनंदा ॥ १ ॥ चिंतामणी नामेरे, वंछीत पामेरे, जीन शांति शांति करतारा, पाम्यो भव जल-

धि पारा, तुं धर्मनाथ सुखकारा ॥ जिनंदा, ॥२॥ शांति जिन तारोरे, विरुद तीहारोरे, चिंतामणी जगमें जाचो, कल्याण पास ज-ग साचो, तुम पास सामले राचो ॥ जिनंदा ॥३॥ सहस्र फण सोहेरे, मोहन मन मोहेरे, गोडी जिन शरण तुमारी, तुं धर्मनाथ जयकारी, तुं अजित अचर सुखकारी ॥ जिनंदा ॥ ४ ॥ कुंथु जिनराजारे, वासु-पूज्य ताजारे, वागे जग डंका तेरा ॥ तुं महावीर गुरुमेरा, हुं बालक चेरा तेरा ॥ जिनंदा ॥ ५ ॥ कुंथु जिनचंदारे, विमल सुख कंदारे, शीतलकी हुं बलिहारी, नेमीश्वर राजुलतारी, श्रीमंधिर आनंद-कारी ॥ जिनंदा ॥ ६ ॥ वीरजीन दातारे, करो मुज शातारे, प्रभु तुं तारक मुज केरा, करुणानीधी स्वामी मेरा, हुं शाशन भानु तेरा ॥ जिनंदा ॥ ७ ॥ शरणांगत तोरी रे, नहीं अन्य गती मोरीरे, तुम

नाम तणा आधारा, तुम सिमर सिमर सिरिकारा, तुम वीरहो दुखमआरा ॥ जिनंदा ॥ ८ ॥ संघ मन हरनारे, अक्षय नीधी भरनारे, नायक श्री मूल जिनंदा, राधणपुर नगर सुहंदा, सहु संघने मोद करंदा ॥ जिनंदा ॥ ए ॥ राधणपुर वासोरे, मास चार रही खासोरे, सहु संघ मने आनंदी, भवभ्रांती सवही नीकंदी, चउविसे जीनवर वंदी । जिनंदा ॥ १० ॥ अंबु निधी वेदारे, अंक इंदु निखेदारे, संवत आयो सुखकारी, द्वाविंशती मुनी मनोहारी, सहु निज आतमा हीतकारी ॥ जिनंदा ॥ ११ इति ॥

अथ महावीर स्वामीनुं स्तवन.

राग रामकली. तेरो दरस मन भायो चरमजिन—तेरो ॥ आंचली ॥ तूं प्रभु करुणा रसमय स्वामी, गर्भमे सोग मिटायो।

त्रिसला माताको आनंद दीनो, ग्यात नंदन जग गायो ॥ चरम ॥ १ ॥ वरसीदान दे रोरतावारी, संयम राज्य उपायो, दीनहीनता कबुयन तेरे, सतच्चिद आनंदरायो ॥ चरम ॥ २ ॥ करुणा मंथर नयने निरखी, चंडकोसिकसुख दायो, आनंदरस नर सुरगपहुंतो, एसा कोन करायो ॥ चरम ॥ ३ ॥ रतन कमल द्विजवरको दीनो, गोशालक उधरायो ॥ जमाली पन्नर नव अंते, महानंद पदठायो ॥ चरम ॥ ४ ॥ मत्सरी गौतमको गणधारी सासन नायक ठायो ॥ तेरे अवदात गिनुं जग केते करुणासिंधु सुहायो ॥ चरम ॥ ५ ॥ हुं बालक शर्णागत तेरो, मुजको क्युं विसरायो ॥ तेरे विरहेसे हुं डुःख पामुं, कर मुज आतमरायो ॥ चरम ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ महावीर जीन स्तवन.

राग वसंत. सिंध काफी. वीर प्रभु मन भायोरे मेरे भव दुःख टारे ॥ वीर ॥ आंचली ॥ देशना अमृत रस भरी नीकी, भवभव ताप मिटायो ॥ शोल पहोर लगदे जीनवरजी, करुणासिंधु सुहायोरे ॥ मे ॥ १ ॥ पचपन सुभ फल पचपन इतरे, यही अध्ययन सुनायो । छत्रीस विन पूछे प्रश्नोका, उत्तर कथन करायोरे ॥ मे ॥ २ ॥ एक अध्ययनही नाम प्रधाने, कथन करत महारायो । महानंद पदजग गुरुपायो, जय जयकार करायोरे ॥ मे ॥ ३ ॥ कल्याणक निर्वाण महोछव, कार्त्तिकमां वास गायो । चउसठ सुरपति सोग करतेहे, भरते तरणि छिपायोरे ॥ मे ॥ ४ ॥ गौतम देव शरम प्रतिबोधी, सुन मनमें गभरायो ॥ वर्धमान मुजे छोड जगतमें, एकोही मोक्ष

सिधायोरे ॥ मे ॥ ५ ॥ कोण आगल हुं प्रश्न करशुं, उत्तर कोन सुनायो । कुमति उल्लुक बोलेगे अधुना, अंधकार जग छायोरे ॥ मे ॥ ६ ॥ तूं नहीं किसका को नहीं तेरा, तूं निज आतमरायो ॥ इम चिंततही केवल पायो, जय जय मंगल गायोरे ॥ मे ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ शंखेश्वर स्तवन.

राग. खमाच. श्री शंखेश्वर दरस देख, कुमति मोरी मीट गइरे आज ॥ आंचली ॥ ज्ञान वचन पूजा रस छायो, नाश कष्ट नविजन मन नायो ॥ युं जिन मुरति रंग देख, डुरगति मेरी खुट गइरे ॥ श्री शंखेश्वर ॥ १ ॥ निरविकार वामासंग त्यागी, जप माला नहीं नाथ निरागी । शस्त्र नहीं कर द्वेष मिटे, भ्रमता सब बुट गइरे ॥ श्री शंखेश्वर

॥ २ ॥ निज विभुति लीनीलार, लोका-
लोक करी उजवार । नाम जपे सब पाप
कटे, दुर्मति सब लुट गइरे ॥ श्री शंखे-
श्वर ॥ ३ ॥ आनंद मंगल जगमें चार,
मंगल प्रथम जगत करतार । श्रीवामा
सूत पास तुंही, अघ भ्रांति मिट गइरे
॥ श्री शंखेश्वर ॥ ४ ॥ श्याम मेघ सम
पासजी निरखी, आत्म आनंद शिखी
जिम हरखी । कर्त शब्द मुख पास तुं-
ही, यही रटना रट लइरे ॥ श्री शंखे-
श्वर ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ महावीर स्वामीनुं स्तवन.

राग- सोरठ. वीर जिने दीनी माने
एक जरी, एक भुजंग पंचविस नागन,
सुंघत तुरत मरी ॥ आंचली ॥ कुमति
कुटल अनादिकी वैरन, देखत तुरत ड-
री, चारोही दासी पूत जयंकर, हूए

भसम जरी ॥ विर ॥ १ ॥ बावीस कुमति पूत हठिले, नाठे मदसें गरी, दोउ सुभट जर मूरसें नासे, बुथ्यो मदन मरी ॥ विर ॥ २ ॥ महानंद रस चाखत पायो, तनमन दाह ठरी, अजरामर पद संग सुहायो, भव भव तापहरी ॥ विर ॥ ३ ॥ सिव वधु वसी करणको नीकी, तीनो रत्न धरी, आतम आनंद रसकी दाता, वीर प्रभु दान करी ॥ विर ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ महावीर स्वामीनुं स्तवन.

राग. श्री. वीरजिन दर्शन नयनानंद. वीरजिन ॥ आंचली ॥ चंद्रवदन मुख तिमिर हरे जग, करुणा रस हगभरे मकरंद । नीलांबुज देखी मन मधुकर, गूंजे तूंही तूंही नाद करंद ॥ वीरजिन ॥ १ ॥ कनक वरण तनु भवि मन मोहे, सोहे जीते सुर गनवृंद । मुखश्री अमृत

रसकस पीके, शिखीवत नविजन नाच करंद । वीरजिन ॥ २ ॥ तपत मिटी तुम वचनामृतसे, नासे जनम मरण दुःख फंद । अद्भपरे तुम दरस करीने, पर्तीक्र मानूं हुं जीनचंद ॥ वीरजिन ॥ ३ ॥ अरज करतहुं सुन नयनंजन, रंजन निज गुन कर सुखकंद ॥ त्रिसला नंदन जगत जयंकर, कृपा करो मुज आत्मचंद ॥ वीरजिन ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजीन स्तवन.

राग. पंजाबी ठेकानी ठुमरी. मोरी बैयां तो पकर शंखेश स्याम, करुणा रसनरे तोरे नैन स्याम ॥ मोरी ॥ आंचली ॥ तुम तो तार फणींदलग साचे, हमकुं वीसार न करुणा धाम ॥ मोरी ॥ १ ॥ जादवपति अरति तुम कापी, धारित जगत शंखेश नाम ॥ मोरी ॥ २ ॥ हम

तो काल पंचम वस आये, तुमारो शरण जिनेश नाम ॥ मोरी ॥ ३ ॥ संयम तप करने शुद्ध शक्ति, न धरुं कर्म जकोर पाम ॥ मोरी ॥ ४ ॥ आनंद रस पुरण सुख देखी, आनंद पुरण आतमराम ॥ मोरी ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ महावीर स्वामीनुं स्तवन.

राग. वसंत. सिंध काफी. रे सुन वीर जिनंदा चरण शरण ल्युं तेरा ॥ सुन ॥ आंचली ॥ कामक्रोध मदराग अग्याना, लोज द्वेष मोह चेरा । मायाकुं रांडी मदयुत सांसी, इन दीनो मुजे घेरारे ॥ सुन ॥ १ ॥ मन वचन तनुसें करत आकर्षन, वाम रस नेरा । सब धन दाहे अकर रोगको, रंजीतपर गुण केरारे ॥ सुन ॥ २ ॥ संका कंखा भ्रांति वढावे, ममता आश घनेरा । अप्रिती करे छिन-

कर्में जनको, दीयो गति चार वसेरारे ॥ सुन ॥ ३ ॥ चारित्र राजको त्रास दीये नितु, निज गुन दावे मेरा ॥ सद आगम संतोष सुरंगा, सम्यग दरसन मेरारे ॥ सुन ॥ ४ ॥ हुकम करो करे सानिध मेरी, नासे भरम अंधेरा । आत्म आनंद मंगल दीजे, हुं जिन बालक तेरारे ॥ सुन ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शंखेश्वर पार्श्वजीन स्तवन.

राग. कालींगडो. पास प्रभुरे तुम हम शिरके मोर ॥ पास ॥ टेक ॥ जो कोइ सिमरे शंखेश्वर प्रभुरे, डारेगा पापनी चोर ॥ पास प्रभु ॥ १ ॥ तुं मनमोहन चिदघन स्वामीरे, साहेब चंद चकोर ॥ पास प्रभु ॥ २ ॥ त्युं मन विकसे भविजन केरारे, फारेगा कर्महींमोर ॥ पास प्रभु ॥ ३ ॥ तुं मुज सुनेगा दिलकी बा-

तारे, तारोगे नाथ खरोर ॥ पास प्रभु ॥ ४ ॥ तुं मुज आतम आनंद दातारे, ध्यातां हुं तु मेरा किशोर ॥ पास प्रभु ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजीन स्तवन.

राग. पंजाबी ठेकानी ठुमरी. तोरी छवी मनोहारी; शंखेश स्याम; नीलांबुजवत तोरे नेन स्याम । तोरी । आंचली ॥ चंद्र ज्युं वदन जगत तुम नासे; चरण कलमल पंक पखारे नाम ॥ तोरी ॥ १ ॥ नीलवरण तनु छवि मन मोहे, सोहे त्रिभुवन करुणा धाम ॥ तोरी ॥ २ ॥ पारस पारस सम करे जनको हाटक करन तुमारो काम ॥ तोरी ॥ ३ ॥ अजर अखंडित मंडित निजगुन, इश निजीत पुरे काम, ॥ तोरी ॥ ४ ॥ अनघ अमल

अज चिद घनरासी, आनंद घन प्रभु आतमराम ॥ तोरी ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शंखेश्वर जिनस्तवन.

राग. भेरवी. मेगजल. मुख बोल जरा यह कह देखरा, तुं ओर नहीं में ओर नहीं ॥ मुख ॥ आंचली ॥ तुं नाथ मेरा मेंहुं जान तेरी, मुजे क्युं विसराइ जान मेरी ॥ जब करम कटा ओर भरम फटा ॥ तुं ओर नहीं ॥ १ ॥ तुंहे इश जरा मेंहुं दास तेरा ॥ मुजे क्युं न करो अब नाथ खरा ॥ जब कुमति टरे ओर सुमति वरें ॥ तुं ओर नहीं ॥ २ ॥ तुंहे पास जरा मेंहुं पास परा ॥ मुजे क्युं न गोडावो पास टरा ॥ जब राग कटे ओर द्वेष मिटे ॥ तुं ओर नहीं ॥ ३ ॥ तुंहे अचरवरा मेंहुं चलनचरा मुजे । मुजे क्युं न बनावो आपसरा ॥ जब होंश जरे

ओर सांग टरे ॥ तुं ओर नहीं ॥ ४ ॥ तुहे नूपवरा शंखेश खरा । में तो आतमराम आनंद नरा ॥ तुम दरस करी सब भ्रांति हरी ॥ तुं ओर नही ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ शंखेश्वर पार्श्वजीन स्तवन.

राग. सोरठ. लगीलो वामानंदनस्युं ॥ नरम नंजन तूं ॥ लगीलो ॥ आंकणी। जाय सब धन जाय वामा प्राण जाय न क्युं ॥ एक जिनजीकी आण मेरे रहोने ज्युंकी त्यूं ॥ लगीलो ॥ १ ॥ नांहि तप बल नांहि जप बल शुद्ध संयम त्यूं । एक प्रजुजीके चरण शरणां भ्रांति नांजी कल्पुं ॥ लगीलो ॥ २ ॥ घट अंदरकी जाने तुं जिन कथन करनेशूं । देख दीनदयाल ॥ मुजको तार जगसें त्यूं ॥ लगीलो ॥ ३ ॥ इंद्रचंद्र सुरींद्र पदवी कोन वांबुं हुं । एक तुम डीग करुणा नीने

सदा निरखुं ज्यूं ॥ लगीलो ॥ ४ ॥ तार आतमराम रांजा मुक्ति रमणि वरुं । श्री शंखेश्वरनाथ जिनवर सुद्धानंद जरुं ॥ लगीलो ॥ ५ ॥ इति ।

अथ महावीर स्वामीनुं स्तवन.

राग. गोरुी. वीर जिनेश्वर स्वामी आनंद कर । वीर । आंचली ॥ मोमन तुमविन कित हीन लागे । ज्युं जामनी वश कामी ॥ आ ॥ १ ॥ पतत उधारण विरुद तिहारो । करुणारस मय नामी ॥ आ ॥ २ ॥ अन्य देव बहु विधिकर सेवे । कबुय नहीं हुं पामी ॥ आ ॥ ३ ॥ चिंतामणि सुरतरु तुम सेवी । मिथ्या कुमतकूं वामी ॥ आ ॥ ४ ॥ जन्म जन्म तुम पदकज सेवा । चाहुं मन विसरामी ॥ आ ॥ ५ ॥ रंजा रमण सुरिंद पद-चक्रि । वांबुं हुं नहीं निकामी ॥ आ

॥ ६ ॥ आत्माराम आनंद रस पूरण । देदरसण सुख धामी ॥ आ ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ वीरजिन स्तवन.

राग. पंजाबी ठेकानी ठुमरी. मैरी सैयां तुं नजर कर वर्धमान । तुं साचो वीर करुणानिधान।मैरी सैयां॥ आंकणी । तेरेहि चरण कमलको मधुकर । वीरवीर मुख रटित नाम ॥ मैरी सैयां ॥ १ ॥ तुम विरहो दुःखम् पुन आरो । मनबल दुबल तनुं कताम ॥ मैरी सैयां ॥ २ ॥ उत्तराध्ययनमे तुम वचराजे । तेही आलंवन चितमें ठाम ॥ मैरी सैयां ॥ ३ ॥ तुम विन कोन करे मुज करुणा धाम ॥ मैरी सैयां ॥ ४ ॥ करुणाद्दग भरी तनुं कज निरखो । पामुं पद जीम आतमराम मैरी सैयां ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ वीरजिन स्तवन.

राग. जोपाली. ताल दीपचंदी ॥

इतनुं मांगुरे देवा इतनुं मांगुरे जव-जव चरण शरण तुम केरो ॥ इतनुं आंचली ॥ सिधारथ नृप नंदन केरो त्रिसला माता आनंद वधेरे, ग्यात-नंदन प्रजु त्रिजुवन मोहे । सोहे हरित जव फेरोरो ॥ इतनुं ॥ १ ॥ दीनदयाल करुणानिधि स्वामी, वर्धमान महावीर जलेरो । श्रमण सुहंकर डुःख हरनामी। आर्यपुत्र ब्रमजुत दलेरो ॥ इतनुं ॥ २ ॥ तेरेहि नामसे हुं मदमातो, स्मरण करत आनंद जरेरो । तेरे जरोसेंही जीतिनी-वारी ॥ आनंद मंगल तुमही खरेरो ॥ ॥ इतनुं ॥ ३ ॥ पुरण पुण्य उदय करी पामी, शासन तुमरो नाश अंधेरो जयो जगदीश्वर वीर जिनेश्वर । तुं मुज ईश्वर हुं तुम चेरो ॥ इतनुं ॥ ४ ॥ आत्मराम

आणंद रस पुरण, मूरण करम कलंक ठगेरो । शासन तेरो जग जयवंतो ॥ सेवक वंदित निशदिन तेरो ॥ इतनुं ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ सिद्धाचल मंमन रुषवदेवनुं स्तवन.

राग. मराठीमे. रिषव जिनंद विमलगिरि मंडन, मंमन धर्मधुरा कहीये; तुं अकल स्वरूपी । जारके करम जरम निज गुण लहीये ॥ रिषव ॥ १ ॥ अजर अमर प्रज्ञु अलख निरंजन, जंजन समर समर कहीये । तूं अदजूत योद्धा । मारके करम धार जग जस लहीये ॥ रिषव ॥ २ ॥ अव्यय विज्ञु इश जगरंजन, रुप रेख विन तुं कहीये । शिव अचर अनंगी । तारके जगजन निज सत्ता लहीये ॥ रिषव ॥ ३ ॥ शत सूत माता सुता सुहंकर, जगत जयं-

कर तुं कहीये । निज जन सब तारें ।
हमोसें अंतर रखना नाचइये ॥ रिषव
॥ ४ ॥ मुखको नींचके बेशी रहेना, दीन-
दयालको ना चइये । हम तन मन ठारो
। वचनसें सेवक अपना कहे दइये ॥
रिषव ॥ ५ ॥ त्रिभुवन इश सुहंकर स्वा-
मी, अंतरजामी तुं कहीये । जब हमकुं
तारो । प्रभुसें मनकी वात सकल कहीये
॥ रिषव ॥ ६ ॥ कल्पतरु चिंतामणी
जाच्यो, आज निरासें ना रहीये । तुं
चिंतित दायक । दासकी अरजी चितमें
द्रढ गहीये ॥ रिषव । ७ । दीनहीन
परगुण रस राची । सरण रहित जगमे
रहीये । तुं करुणासिंधु दासकी करुणा
क्युं नहि चित गहीये ॥ रिषव ॥ ८ ॥
तुम विन तारक कोइ न दिसे, होवे
तुमकुं क्युं कहीये । इह दिलमें ठानी ।
तारके सेवक जगमे जस लहीये । रिषव

॥ ए ॥ सात वार तुम चरणे आयो, दायक शरण जगत कहीये । अब धरणे बेशी, नाथसे मनवंछीत सब कुछ लहीये । रिषव । १० । अवगुण मानी परिहर-स्योतो, आदिगुणी जगको कहीये । जो गुणीजन तारे । तो तेरी अधिकता क्या कहीये ॥ रिषव ॥ ११ ॥ आतम घटमें खोज प्यारे, बाह्य नटकते ना रहीये । तुम अजय अविनाशी । धार निज रूप आनंद घनरस लहीये ॥ रिषव ॥ १२ ॥ आतमनंदी प्रथम जिनेश्वर, तेरे चरण शरण रहीये.। सिद्धाचल राजा । सरे सब काज आनंदरस पी रहीये ॥ रिषव ॥ १३ ॥ इति ॥

अथ सुमतिनाथ स्तवन.

नाथ केसे गजको फंद छोडायो । ए देशी ॥ सुमति जिन तुम चरणे चित दि-

नो। एतो जनम जनम दुःख ढीनो॥ सु०
॥ आंकणी ॥ कुमत कुटल संग दुर नि-
वारी, सुमति सुगुण रसन्निनो । सुमति
नाम जिन मंत्र सुएयो हे ॥ मोह नींद
नइ खीनो ॥ सु ॥ १॥ करमपर जंग बक
अतिसि जपा, मोह मुढता दीनो । निज
गुण न्नुल रचे परगुणमें । जनम मरण
दुःख बिनो ॥ सु ॥ २ ॥ अब तुम नाम
प्रन्नंजन प्रगट्यो, मोह अन्नराढय कीनो
। मुल अज्ञान अविरति एतो । मुल नय
नयो तिनो ॥ सु ॥ ३ ॥ मन चंचल अति
न्नामक मेरो, तुम गुण मकरंद पीनो ।
अवर देव सब दूर तजुंहुं । सुमति गु-
पति चितदीनो ॥ सु ॥ ४ ॥ मात तात
तिरीया सुत न्नाइ, तन धन तरुणा न-
वीनो । ए सब मोहजालकी माया इन
संग नयोहे मलीनो ॥ सु ॥ ५ ॥ दरसण
ज्ञान चारित्र तिनो, निजगुण धन हर ली-

नो । सुमति प्यारी जइ रखवारी । विष इन्द्री जइ हिनो ॥ सु ॥ ६ ॥ सुमति सुमति समता रससागर, आगर ज्ञान जरिनो । आतम रूप सुमति संग प्रगटे । सम दम दान वरीनो ॥ सु ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ जोयणी मंडन श्रीमन्मल्लि जिन स्तवन.

राग. परज. निशदिन जोउं थारी वातडी घर आवो मारा ढोला ॥ ए देशी ॥ मल्लि जिनेश्वर साहिब तुं तो अंतरजामी ॥ आंचली ॥ करम सुजटरण अंगणे एक छिनकमे दामी, षट् मित्त प्रतिबोधके कीने जगतनिकामी ॥ मल्लि ॥१॥ परउपकारी तुं प्रजु करुणा कर स्वामी । तेरो मुख दीठे मीटे मेरे मनकी खामी ॥ मल्लि ॥ २ ॥ करम रोगके हरनकुं प्रजु तुं जगनामी, वैद्य धनंतरी मो मीले त्रिजु-

वन विसरामी ॥ मल्लि ॥ ३ ॥ वरण प्रियंगु तनु धरे भवीजन सूख कामी अ-ष्टादस मल टालके भये निजगुण गामी, ॥ मल्लि ॥ ४ ॥ गुर्जर देश सुहंकरु भो-यणी शुभ नामी, जहां बिराजे तुं प्रभु करे जगको निरामी ॥ मल्लि ॥ ५ ॥ क-रम रोगयुत हुं फीरुं शिव पद सुख धा-मी, जगजश ल्यो मुजे तारके करो आत-मरामी ॥ मल्लि ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ सिद्धाचल मंडन रिषव जिन स्तवन.

राग मांढ. मनरी बातां दाखाजी म्हारारराजहो रीषवजी थाने ॥ मनरी ॥ आंकणी ॥ कुमतिना भरमायाजी म्हारा-राजरे कांइ, व्यवहारि कुलमे । काल अनंत गमायाजी । म्हराराज हो रिष-वजी ॥ १ ॥ कर्म विवर कुछ पायाजी,

म्हाराराजरे कांइ । मनुष्य जनमे । आरज देशे आयाजी । म्हाराराज हो रिषवजी ॥ २ ॥ मिथ्या जन नरमायाजी, म्हारा-राजरे कांइ । कुगुरु वेशे अधिको नाच नचायाजी । म्हाराराज हो रिषवजी ॥३॥ पुन्य उदय फीर आयाजी, म्हराराजरे कांइ । जिनवर जाषित । तत्व पदारथ पायाजी । म्हारा राज हो ॥ रिषवजी ॥ ४ ॥ कुगुरु संग उटकायाजी । म्हारा-राजरे कांइ । राजनगरमे । सुगुरु वेष धरायाजी । म्हराराज हो रिषवजी ॥ ५ ॥ सघला काज सरायाजी । म्हाराराजरे कांइ । मनको मर्कट । माने नहीं समजा याजी । म्हाराराज हो रिषवजी ॥ ६ ॥ कुविषयां संग ध्यावेजी । म्हाराराजरे कांइ ममतामाया । साथे नाच नचावेजी । म्हाराराज हो रिषवजी ॥ ७ ॥ महिमा पूजा देखी मान जरावेजी म्हाराराजरे

कांइ। निरगुणीया ने। गुणीजन जगमे कहावेजी। म्हराराज हो रिषवजी ॥ ७॥ छठीवारे तुमरे द्वारे आयाजी। म्हराराजरे कांइ। करुणासिंधु। जगमे नाम धरायाजी। म्हाराराज हो रिषवजी ॥ ए॥ मन मर्कटकु शिखो निज घर आवेजी। म्हाराराजरे कांइ। सघली वाते। समता रंग रंगावेजी। म्हाराराज हो रिषवजी ॥ १० ॥ अनुनव रंग रंगीला सुमता संगीजी। म्हाराराजरे कांइ। आतमताजा। अनुनव राजा संगीजी। म्हाराराज हो रिषवजी ॥ ११ ॥ इति ॥

अथ नोयणीमंडन मल्लि जिन स्तवन.

जिन राजा ताजा मल्लि बिराजे नोयणी गाममे। ए आंचली। देश देशके जात्रु. आवे पूजा सरस रचावे। मल्लि जिनेसर नाम सिमरके मनवंछित फल पावेजी ॥

जिन राजा ॥ १ ॥ चातुर वरणके नरनारी मील मंगल गीत करावे । जयजयकार पंचध्वनी वाजे शिरपर छत्र फिरावेजी । जिन राजा ॥ २ ॥ हिंसक जन हींसा तजी पूजे चरणे शिश नमावे। तुं ब्रह्मा तुं हरि शिवशंकर अवर देव नहीं भावेजी ॥ जिन राजा ॥ ३ ॥ करुणारस भर नयन कचोरे अमृतरस वरसावे । वदनचंद चकोरे ज्युं निरखी तनमन अति उलसावेजी ॥ जिन राजा ॥ ४ ॥ आतमराजा त्रिभुवन ताजा चिदानंद मन भावे। मल्लिजिनेश्वर मनहर स्वामी तेरा दरस सुहावेजी ॥ जिन राजा ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ चंद्रप्रभु जिन स्तवन.

चाहतथी प्रभु सेवा करुंगी । उलटी करम बनाइरी ॥ ए देशी ॥ चाह लगी जिनचंद्र प्रभुकी, मुज मन सुमती ज्युं

आइरी । जरम मिथ्या मत डुर नस्योहे । जिन चरणे चित लाइ सखीरी ॥ चाह ॥ १ ॥ सम संवेग निरवेद लस्योहें, करुणारस सुखदाइरी । जैन वैन अती नीके सगरे । ए जावना मनजाइ सखीरी ॥ चाह ॥ २ ॥ संका कंखा फल प्रतीसंसा। कुगुरु संग लटकाइरी । परसंसा धर्महीन पुरुषकी । इन जव मांही नकाइं सखीरी ॥ चाह ॥ ३ ॥ डुग्ध सिंधुरस अमृत चाखी । स्याद्वाद सुखदाइरी । ऊहरपान अब कोन करतहे। डुरनय पंथ नसांइ सखीरी ॥ चाह ॥ ४ ॥ जब लग पुरण तत्व न जाण्यो, तबलग कुगुरु जुलाइरी । सप्तजंगी गर्जीत तुमवानी । जव्य जीव मन जाइ सखीरी ॥ चाह ॥ ५ ॥ नामरसायण जग सहु जाखे । मरम न जाणे कांइरी ॥ जीव वाणी रस कनक करणको ॥ मीथ्या लोक गमाइ सखीरी

॥ चाह ॥ ६ ॥ चंद कीरण जस जस उज-
ल तेरो । नीरमल जोती सवाइरी ॥ जीन
सेव्यो नीज आतमरूपी ॥ अवर न कोइ
सहाय सखीरी ॥ चाह ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ स्तवन

थारी लइरे सरण जगनाथ आज मु-
ज तारो तो सही ॥ आंचली ॥ क्रोध
मानकी तत मिटावो ॥ टारो तो सही ।
मेरे प्रभुजी टारो तो सही । ए दिव्य
ज्ञान जग जाणा ॥ हृदयमें धारो तो स-
ही ॥ थारी ॥ १ ॥ मिथ्या रान कपट
जरूता संग तारो तो सही ॥ ए सम्यग
दर्शन सरल ॥ आनंदरस कारो तो सही
॥ थारी ॥ २ ॥ त्रिसना रांड जांरूकी ।
जाइ वारो तो सही ॥ ए चरण शरण
नय हरण आनंदसे उगारो तो सही ॥
थारी ॥ ३ ॥ अष्ट करम दल उदनट वै-

री । तारो तो सही । ए द्वादश विध तव अधम गजार उधारो तो सही ॥ थारी ॥४॥ युगलक धर्म निवारण तारण । हारो तो सही । ए जगत उधारण रुषव जिनेश्वर प्यारो तो सही ॥ थारी ॥ ५ ॥ विमलाचल मंडन अघ खंडन सारो तो सही । ए आतमराम आनंदरस चाख । उगारो तो सही ॥ थारी ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ सर्व जिन सामान्य स्तवन.

जीनंदजी अब मोए डांगरीया, काटराट जया थानक जयानक ॥ अब ॥ आंकणी ॥ भ्रमत भ्रमत जग जाल फस्यो में, तो डुःख अनंता पाय ॥ जी ॥ दीन अनाथ विहार लाल तुम, अब चरण सरण तुम पाय ॥ जी अब ॥ १ ॥ जाचक निशदीन मागत तोपण, हानी कबु नहीं थाय ॥ जी ॥ प्रजुजी नहींतो चींतीत दा-

यक, लायक सौ न कहाय ॥ जी ॥ अब ॥ २ ॥ जो दायक समरथ नहीं तो कुण, तोकुं मागण जाय ॥ जी ॥ त्रीभुवन कल्प-तरु में जाच्यो, कहो केम निष्फल थाय ॥ जी ॥ अब ॥ ३ ॥ अवगुण मानी परीहरे तो, आदी गुणी कोण थाय ॥ जी ॥ पा-रस लोह दोष नवी माने, करे शुद्ध कंच-न काय ॥ जी ॥ अव ॥ ४ ॥ आतमराम आनंदरस पुरण, मुरण समर कषाय ॥ जी ॥ अजर अमर पुरण प्रभु पामी, अब मोए क-मी न कांय । जी । अव ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ श्री नेम जिन स्तवन.

क्यां करुं माता मेरी, पंकितके जाकेरी ॥ ए देशी ॥ नव भव केरी प्रीत सजन तुम तोमी न जावोरे ॥ नव ॥ आंकणी ॥ मु-गती रमणीस्युं लागी लगन, मनमें अति वैराग धरना । छोड चले निज साथ सज-

न, मुख फेर देखावोरे ॥ नव ॥ १ ॥ तुम छोडी अब जात कहुं, में नही छोडत घर न रहुं । जोगन वनी तुम संग चलुं, नीज ज्योती जगावोरे ॥ नव ॥ २ ॥ आतम वेर न कुमती छलुं, रागद्वेष मद-मोह दलुं । मुगती नगर तुम संग चलुं, नीज जोर जनावोरे ॥ नव ॥ इति ॥

अथ श्री नेम जिन स्तवन.

आवो नेम सुख चेन करो, दुख काही देखावोरे ॥ आंकणी ॥ वीरह तुमारो अतीही कठन, सही न शकुं पल एक छीन । जगत लाग्यो सव हांसी करन, मत छोडीने जावोरे ॥ आवो ॥ १ ॥ करुणासिंधु नाम धरन, सुण अनाथके नाथ जीन । रुदन करुं तुम चरन परन, टुंक दया दील लावोरे ॥ आवो ॥ २ ॥ अड-नव सुंदर प्रीत करी, अव क्युं उलटी

रीत धरी । आतम हीत जग लाज टरी,
नीज भुवन सीधावोरे ॥ आवो ॥३॥ इति ॥
इति महामुनीराज श्रीमद आत्मारामजी
आनंदविजयजी कृत स्तवनावली

अथ पद. राग—भैरवी.

मेरी क्याही बेदरदी रही ॥ मे ॥ तोरे नाथसे घर नावसाय ॥ मे ॥ १ ॥ मैंतो मूर हती नतो मैं रही जग ग्राम कातो अब हो रही ॥ तो ॥ २ ॥ हूंतो ढुंढ रही न तो यार मिला ॥ अब काल अनंतोही रोय रही ॥ तो ॥ ३ ॥ नतो मीत विवेक न धर्म गुनी । अब सीस धुनी हूंतो बेव रही ॥ तो ॥ ४ ॥ हूंतो नाथही नाथ पुकार रही । कुमता जर जारही जार रही ॥ तो ॥ ५ ॥ तूतो आप मिला मन रंग रला । अब आनंदरूप आराम लही ॥ तो ॥ ६ ॥

अथ पद. राग—वसंत.

[हमकु छांरु चले बन माधो] ए देशी. तुं क्युं भोर भये शिवराधो । वाधा मोच करो मनमारे ॥ तुं आंकणी ॥

फूली वसंत कंत चित्त शांति, भ्रांति कु-
वास फूल मति दोरे । मनमोहन गुण
केतकी फूली, समता रंग चर्यों घर तोरे
॥ तुं ॥ १ ॥ इछा रोधन तप नइ घट,
जरत भयो अघघांस भलोरे । समता
सीतळता मनमानी, गुण स्थानक शुद्ध
श्रेणि चलोरे ॥ तुं ॥ २ ॥ पावस भूमि
चेतनकी शुद्ध, ठरत भइ चित अंबु भरेरे
। वरसत जैन वैन शुद्ध भरीया, भरीय
चैन वनवाग धरेरे ॥ तुं ॥ कुमता ताप
मीटी घट अंदर, मन बंदर सठ शांत
भयेरे । अनुभव शांतिकी बुंद परी घट,
मुक्ताफळ शुद्ध रुप थयेरे ॥ तुं ॥ ४ ॥
आतमचंद आनंद भये तुम, जिनवर
नाद अभंग सुणयोरे ॥ सगरे सांग त्याग
शिव नायक, ज्ञायक भाव सुभाव थुण्योरे
॥ तुं ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ पद. राग—बरवा.

ऐसे तो विषम बाजी। पियाको उ-माद जागी ॥ ऐसी आवे मन मेरेकी जाये अघ ध्वसरी ॥ ऐ ॥१॥ मोहको सि-रोद सुन कूदत नइकारी। नादकेव जइ वावे तो हरन लागे हंसरी ॥ ऐ ॥ २ ॥ चितहूंकी सार गइ मारहूंने तार दइस करहो हंस वंस निकस आइ जंसरी ॥ ऐ ॥ ३ ॥ ऐसी आवे मन मेरे बदन वन ठेद नारुं। प्रगटे आनंद कंत जारी बाजी संसरी ॥ ऐ ॥ ४ ॥ इति ॥

अथ पद. राग—वसंत.

[हमकुं गंाल चले बन माधो] ए देशं..

अब क्युं पास परो मनहंसा, तुम चेरे जिननाथ खरेरे। जारमार ममता दढ-गंन राग स्निग्ध अन्यंग करेरे ॥ अब ॥ १ ॥ नव तरु मार ताण विस्तरीया,

मोह कर्म जरू मूळ जर्योरे॥ क्रोध मान माया ममतारे, मतवारे चहुंकुन चर्योरे ॥ अव ॥ २ ॥ पास परन वामारस राच्यो खांच्यो कर्म गति चार पर्योरे ॥ रागद्वेष जिहां नये रखवारे, नव वन सघन जंजीर जर्योरे ॥ अब ॥ ३ ॥ पूरणब्रह्म जिनेंद्रकी वानी, करण रंधमें शब्द पर्योरे ॥ अनुनव रस नरी ढीनकमें उड्यो, आतमराम आनंद नर्योरे ॥ अब ॥ ४ ॥ इति ॥

पद. राग माढ.

प्रीति नांगीरे कुमति शुं प्रीति ए आंकणी. ग्यान दरस वरणी दोउंरे, इसके पूत कुरुप, ग्यान दरस दोउं निज गुणोरे, गाद कीने अनूप ॥ कुमति ॥ १ ॥ महानंद गुण सोसियोरे । वेदनी दास करुर । कुमता तात नयंकरुरे । मोहे मोह गरुर ॥ कुमति । २ । नास्यो मव अनादिके

रोचे । तन आयोरे गाम । हृडि बंदन आयु नस्योरे । नाम चितारोरे ताम ॥ कुमति ॥ ३ ॥ कुंनकार गोतर गयोरे । विघ्नराज नसमंत । दरसन चरण अमरणकोरे। रुप रहित विसंत ॥ कुमति ॥ ४ ॥ अगरु लघु गुण जहस्योरे । आतम शक्ति अनंत । सतचिद आनंद आदिलेरे । प्रगट्यो रूप महंत ॥ कुमति ॥ ५ ॥

पद. राग माढ.

प्रीति लागीरे सुमति शुं प्रीति आंचली पीर मिटी अनादिकीरे । गयो अग्यानकुरंग । विषधर सरपणी पंचजेरे । निर विषरुप विरंग ॥ सुमति ॥ १ ॥ पंचो नल बंधन कीयेरे । कादी करमको नीर । तप तापें करी सूकीयोरे । धोये नीज गुन चीर ॥ सुमति ॥ २ ॥ प्रकटी निधि निज रूपकीरे । रिण रंचक सिरनाह । मिटि अनादिकी वक्रतारे । चाल्यो शिवपुर

राह ॥ सुमति ॥ ३ ॥ क्रोध मान मद मोहकीरे। नासी अग्यानकी रेह ॥ कुमति गइ सिर कुटतीरे। त्रुट्यो हम तुम नेह ॥ सुमति ॥ ४ ॥ सोहं सोहं रटि रटनारे। छंड्यो परगुण रुप। नट ज्युं सांग उतारी-नेरे। प्रगट्यो आतम नूप ॥ ५ ॥

अथ नेम राजुल विशे वैराग्य पद.

राग सुहा विहाग रे सामरेना जारे सां-
मरे ॥ आंचली।

नव नवकेरो नेह निवारी। छिनकमें ना छटकाजारे ॥ सामरे ॥ १ ॥ हुं जोगन नइ नेह सब जारीरे। अंग विन्नूति रमाजारे ॥ सामरे ॥ २ ॥ नवसागरमें न-इया फिरतहे। मुजको यार लगाजारे ॥ सामरे ॥ ३ ॥ आप चलतहो मोक्ष न-गरे। मुजको राह वता जारे ॥ सामरे ॥ ४ ॥ में दासी प्रनु तुमरे चरनकी। आतमध्यान लगाजारे ॥ सामरे ॥ ५ ॥

अथ आत्माने शिखामणनुं पद.

राग विहाग.

रे मन मूरख जनम गमायो । निज गुन त्याग विषय न रस लुधो । नेम शरण नहीं आयो ॥ रे मन ॥ १ ॥ यह संसार सुही सावरजो । संबल देख तु नायो । चाखन लाग्यो रुइसी उड गइ । हाथ कबुय न आयो ॥ रे मन ॥ २ ॥ यह संसार सुपनसी माया । मुरख देख लोभायो । उड गइ निंद खुली जब अखीयां । आगे कबुयन पायो ॥ रे मन ॥ ॥ ३ ॥ परगुन तजकर निज गुन राचो । पुन्य उदय तुम आयो । एक अनादि चिन्मय मूरति । सुमति संग सुहा यो ॥ रे मन ॥ ४ ॥ परगुन बकरीके संग चरतो । ढुंढु नाम धरायो । जिनवर सिंघकी नाद सुन्यो जब । आतम सिंघ सुहायो ॥ रे मन ॥ ५ ॥

पद राग षट्.

समज समज वश मन इंद्री, परगुन संगीन होरे सयाना समज आंचली. इन-हीके वश सुद्धबुद्ध नासी । महानंद रुप जुलाता ॥ सांगधार जगनट वत नाच्यो । माच्यो पर गुन ताना ॥ वशकर ॥ १ ॥ चार कषायां इन संग चाले । चंचल म-न हि जराना । मोह मिथ्या मद मदन-हियाठे । साथेहिमूर अज्ञाना ॥ वशकर ॥ २ ॥ तुं चाहे संयमरस राचुं धरुं शिर वीरनी आना । उलट उलट्ये करे तुज मनकुं । नासे मनोरथ माना ॥ वशकर ॥३॥ ब्रामक मन तनकों उक सावे । डारे जरमकी खाना । मृग तृसना वत दोडी फिरतहे । करी कल्पनाना ॥ वश कर ॥४॥ आतमराम तुं समज सयाने । कर इंद्रिय वसदाना पीके । आसोनंदरस मगन रहो-रे । नीको मीख्यो अवटाना ॥ वश कर ॥५॥

आत्मोपदेश पद.

(राग गुजरी).

तें तेरा रुप न पायारे अज्ञानी तें तेरा। ॥ आंचली ॥ देखीरे सुंदरी परकी वि- जूति। तुं मनमें ललचायोरे। अज्ञानी ॥ १ ॥ एक हि ब्रह्म रटि रटनारे। पर- वश रुप जूलाया रे ॥ अज्ञानी ॥ २ ॥ माया प्रपंचहि जगतकों मानी। फिरति नमेहि जूलायारे। अज्ञानी ॥ ३ ॥ सुक- वत पाठ पढी ग्रंथनकों। मिथ्या मत मु- रझायारे ॥ अज्ञानी ॥ ४ ॥ जेसे कर डी फिरे व्यंजनमें। स्वाद कबुयन पायारे। अज्ञानी ॥ ५ ॥ परगुन संगी रमणी रस राच्यो। आगे अद्वैत सुनायारे॥ अज्ञानी ॥ ६ ॥ आतमघाती जाव हिंसक तुं। ज- गमें महंत कहायारे ॥ अज्ञानी ॥ ७ ॥

अथ आत्मोपदेश पद.

राग (गुजरी).

तें तेरा रुपकुं पायारे सुज्ञानी तें तेरा ।आंचली।सुगुरु सुदेव सुधर्म रस चीनो । मिथ्या मत छिटकायारे ॥ सुज्ञानी ॥ १ ॥ धार महाव्रत सम रस लीनो । सुमति गुप्ति सुचायारे ॥ सुज्ञानी ॥ २ ॥ इंद्रय मन चंचल वश कीने।जायो मदन कुरा- यारे ॥ सुज्ञानी ॥ ३ ॥ स्याद्वाद अमृत- रस पीनो । भूले नहीं भुलायारे ॥ सु- ज्ञानी ॥ ४ ॥ निश्चय व्यवहारे पंथ चा- ल्यो । उर्नय पंथ मिटायारे ॥ सुज्ञानी ॥५॥ अंतर निश्चय बहि व्यवहारे। विरजीनंद सुनायारे ॥ सुज्ञानी ॥ ६ ॥ आत्मानंदी अजर अमरतुं । सतचिद आनंद रायारे । सुज्ञानी ॥ ७ ॥ इति पदो संपूर्ण.

श्री मन्मल्लि जिन स्तवन.

मल्लीजीन दरसन नयनानंद ॥ ए आं- चली ॥ नीलवरण तनु जविमन मोहे ।

वदन कमल निरमल सुखकंद । निरवि-
कार दृग दयारस पूरे । चूरे नविजनके
अघ वृंद ॥ म ॥ १ ॥ सुचि तनु कांति
टरी अघ भ्रांति । मदन मर्यों तुम कर-
मनीकंद। जय जय निर्मल अघ हर जो-
ति । द्योति त्रिभुवन निर्मल चंद ॥ म०
॥ २ ॥ केवल दरस ग्यानयुत स्वामी। नामी
अरुदस दोस जरंद । लोकालोक प्रका-
शित जिनजी। वानी अमृत झरी वरसंद॥
म ॥ ३ ॥ पिके नविजन अमर नयेहै ।
फिर नही नवसागरही फिरंद । नित्या-
नंद प्रकाश नयोहै । करम नरमको जार्यों
फंद ॥ म ॥ ४ ॥ अवर देव वामारस
राचे । नासे निज गुन सहजानंद । तूं
निरमद विभु इश शिवशंकर । टारे जन्म
मरण दुःख धंद ॥ म ॥ ५ ॥ तेरेही च-
रण शरण हूं आयो । कर करुणा अर्हन
जगइंद । अंतर गत मुझ सहू तूं जाने ।
शरणागतकी लाज रखंद ॥ म ॥ ६ ॥गु-
र्जरदेशमें आत्मानंदी । नोयणी नजवर

उग्यो चंद । वियत शिखि निधि इंदु सुन
वर्षे । मास वैशाखें पूनिमचंद ॥ म ॥ ७ ॥
इति जोयणी मंडन मल्लि जिन स्तवन ॥

अथ श्रीफलवर्धी पार्श्व जीन स्तवन.

पूजो तो सही मारा चेतन पूजो तो
सही थेतो फल वर्धी पार्श्वनाथ प्रभुको
पूजो तो सही ॥ ए आंचली ॥ अष्टादश
दोषन करी वर्जत देवो तो सही ॥ मा ॥
॥ टुक स्याम सलुनो रूप आनंदभर
जोवो तो सही ॥ थे ॥ १ ॥ परमानंद
कंद प्रभु पारस पारस तो सही ॥ मा ॥
तुम निज आत्मको कनक करण टुक
फरसो तो सही ॥ थे ॥ २ ॥ अजर अ-
मर प्रभु ईश निरंजन भंजन करम कही
॥ मा ॥ एतो सेवक मनवंछित सब पूर्ण
अदभूत कल्प सही ॥ थे ॥ ३ ॥ चंद्र
अंक वेदे दीव संवत षष्टी मैत्र लही
॥ मा ॥ मन हर्षे हर्षे प्रभुके गुण गावत
परमानंद लही ॥ थे ॥४॥ इति सम्पूर्णम् ॥

॥ विभाग दूसरा. ॥

श्री मदूउपाध्यायजी महाराज श्री वीरविजयजी महाराज विरचित स्तवनावली.

॥ अथ श्री आदि जिन स्तवन. ॥

राग जेजेवंती.

आदि मंगल करुं। आदि जिन ध्यान धरुं। फेर नही पास परुं भव वन जालमे। लागी तोरी माया जोर। देखत हुं ठोरठोर। दरिसण डुरलभ लीयो बहु कालमें ॥ आ ॥ १ ॥ माता मरुदेवा नंद नाभीराय कुलचंद॥ रुषभ जिनंद प्रभु आदि को करणहे। भोगी सब राजरीधी। संजमसे प्रिती किधी। जगतकी निती सब रीती बतलाइहे ॥ आ० ॥ २ ॥ डुरधर तप करी। अष्टापदोपरि चडी। अणशण करी वरी शीवपटरा-

णीहै । ऐसी गती तिहारी देव । तुंही जाणे नित्य मेव । अकल अलख तेरो अगम स्वरूपहै ॥ आ ॥ ३ ॥ अहनिश तेरे विच । कीये जिने समचित्त । जयि तिने नीरभीक । सुगति सोभागीहै । भक्की सुणी राव चित्तमे किजे ठराव । आतम आनंद वीरविजय मांगुतहै ॥ आ ॥ ४ ॥ ॥ इति आदिजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री अजित जिन स्तवन. ॥

॥ राग भोपाल ताल संगीत ॥

॥ ध्याउं जिन अजित देव । भवीजन हीत कारी ॥ आंकणी ॥ तुम प्रभु जित राग द्वेष । करदिये सब कर्म छेद । थीर चित्त करुं तुमरी सेव । जिम थाउं भवपारी ॥ ध्या ॥ १ ॥ तुम विन नहीं ज्ञान ज्ञेय । तुम विन नहीं ध्यान ध्येय । तुम विना करुं किनकी सेव । अंतर गतधारी ॥ ध्या ॥ २ ॥ अब चित्त धरी करी विचार ।

षटपट सब दुर जाए। झटपट अबमुज कोतार। आनंद सुखकारी॥ ध्याउं॥
॥ ३ ॥ प्रभु जई कीयो मुक्तिवास सेवक कुंपण एही आश॥ आतम आनंद कर विलास। वीरविजयकुं भारी॥ ध्या॥ ४॥
॥ इति श्री अजित जिन स्तवन॥

॥ अथ श्री संभव जिन स्तवन.॥
॥ राग महावीरचरणमे जाय ए देशी॥

प्रभु संभव जिन सुख दाई। चित्तमे लागीरहो॥ प्र॥ चि॥ आंकणी॥ दुःख संभव में दुर कीयोहै। सुखसंभव थयो आज॥ चि॥ प्रभु॥ १॥ अेह संसार असार सारहै। तुम शरणा महाराज॥ चि॥ प्रभु॥ २॥ मोह सेन सब चुरली-योहै। शीवपुर केरो राज॥ चि॥ प्रभु॥
॥ ३॥ दिन हिन दुखियो मुजदेखी। सारो सेवकको काज॥ चि॥ प्रभु॥ ४॥ मोहद्रोह सब नाश करीने। राखो सेवक-

की लाज ॥ चि ॥ प्रभु ॥ ५ ॥ आतम आनंद प्रभुजी दीजो । वीरविजयको आज ॥ चि ॥ प्रभु ॥ ६ ॥
इति श्री संभवजिन स्तवन ॥

॥अथ श्री अभीनंदन जिन स्तवन.॥

॥ राग ठुमरीका भेद ॥

॥ अभिनंदन स्वामी हमारा । प्रभु भव दुखभंजन हारा । ए दुनियां दुखकी धारा । प्रभु इनसे करो निस्तारा ॥ अ ॥ १ ॥ हुं कुमता कुटिल भरमायो । दुरनिती करी दुःखपायो । अब शरण लीयो हे थारो । मुजे भवजल पार उतारो ॥ अ ॥२॥ प्रभु शीष हैये नहीं धारी । दुरगतीमें दुःख लीयो भारी । इनकर्मोंकी गती न्यारी । कीये बेरबेर खुवारी ॥अ॥३॥ तुमे कुरुणावंत कहावो । जग तारक बिरुद धरावो । मेरी अरजीनो ए दावो । इन दुःखसे क्युं न छोडावो ॥ अ ॥ ४ ॥ मे विरथा जनम ग-

मायो। नहीं तन धन नेह निवास्यो। अब-
पारस परसंग पामी। नहीं वीरविजय-
कुं खामी ॥ अ ॥ ५ ॥ इति श्री अभीनं-
दन जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री सुमति जिन स्तवन. ॥

॥ राग गोडी ॥

सुमति जिनेश्वर स्वामी। मेरे प्रभु सु-
मति जिनेश्वर स्वामी। आंकणी। भ्र-
मत भ्रमत जग जाल फस्यो मे दरिसण
पुन्ये पामी ॥ मे० ॥ प्रभु ॥ १ ॥ अष्ट करमके
झगडे जीती सुमति सुनाम कहानी ॥ मे ॥
प्रभु ॥ २ ॥ अंतरगतकी पिड हमारी तुं
जाणे विसरामी ॥ मे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ बा-
लख्यालमे तुमही न जाने। रोग निकंदन
कामी ॥ मे ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ जग चिंतामणि
सुरतरु सरिखो नीरखी गद सब वामी
॥ मे ॥ प्रभु ॥ ५ ॥ तारण तरण छे बिरुद
तुमारो। भवभय भंजनहारी ॥ मे ॥ प्रभु

॥ ६ ॥ आतम आनंद रसके दाता। वीरविजय हितकारी ॥ मे ॥ प्र ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीसुमतिजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीपद्मप्रभु जिन स्तवन ॥

॥ रागरेखता ॥

खलक एक रैनका सुपना ए देशी. ॥ पद्मप्रभु प्राणसे प्यारा। छोडावो कर्मनी धारा॥करमफंद तोडवा धोरी॥प्रभुजीसे अर्ज हे मोरी ॥ प० ॥ १ ॥ लघुवय एकथेजीया। मुक्तिमेवास तुम कीया॥ न जाणी पीर तैं मोरी। प्रभु अब खेंचले दोरी ॥ प० ॥ ॥ २ ॥ विषय सुखमानी मो मनमे गये सव काल गफलतमें॥ नारक दुख वेदना भारी। नीकलवा ना रही बारी ॥प०॥३॥ पर वसदिनताकीनी। पापकी पोट सीर लीनी ॥ भक्ती नही जाणी तुम केरी। रह्यो निशदिन दुःख घेरी॥ प० ॥४॥ इनविध वीनती तोरी । करुंमे दोय करजोडी ॥

आतम आनंद मुज दीजो। वीरनुं काज सबकीजो ॥ प० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीपद्मप्रभुजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीसुपासजिन स्तवन ॥

॥ राग सामेरी । ठुमरीका भेद ॥

पुजोरे माई श्रीसुपास जिणंदा । पुजोरे ॥ आंकणी ॥ नवण विलेपन कुसम धुपथी दीपधरोमनरंगे ॥ पु० ॥ १ ॥ अक्षत फल नैवेद्य धरयाथी दुष्ट करम निकंदे ॥ पु० ॥ २ ॥ विधिसुं अष्टप्रकारी पुजन करतां भवदुखभंगे ॥ पु० ॥ ३ ॥ नाटक तान मानसें करतां तीर्थंकर पदबंधे ॥ पु० ॥ ४ ॥ जिनपुजा ए सार जगतमे जाणी करवा उमंगे ॥ पु०॥ ५ ॥ वीरविजय कहे इन पुरषकुं अवीचल सुखमां संगे ॥ पु० ॥ ६ ॥

इति श्रीसुपासजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीचंद्रप्रभु जिन स्तवन ॥

॥ राग माढ । जलानी देशी ॥

॥ जीयारे चंद्रप्रभुजिनी मुरती मोहन गारीरे जयकारी माहाराज चंद्रप्रभु जिनी मुरती मोहनगारीरे दयाल । आंकणी ॥ जीयारे चंदवदन प्रभु मुखकी शोभा सारीरे ॥ जय ॥ चं ॥ २ ॥ जीयारे शमरसभरियां नेत्रयुगलकी जोडी रे ॥ जय ॥ स० ॥ ३ ॥ जीयारेप्रभुपद लीनो कामनीको संग छोडीरे ॥ जय ॥ प्र० ॥ ४ ॥ जीयारे अब मे प्रभुजीसें अरज करुं कर जोडीरे ॥ जय ॥ अ ॥ ५ ॥ जीयारे चंचल चितडुं कीण विध राखुं झालीरे ॥ जय ॥ चं० ॥ ६ ॥ जीयारे फिर फिर बांधे पाप करमकी क्यारीरे ॥ जय ॥ फिर ॥ ७ ॥ जीयारे नेक नजर करी नाथनिहारो धारीरे ॥ जय ॥ ने ॥८॥ जीयारे तुम चरणाकी सेवा द्यो मुज प्यारीरे ॥ जय ॥ तु ॥ ९ ॥

जियारे जिम मुज मनडुं अंतर घटमें आवेरे ॥ जय ॥ जिम ॥ १० ॥ जियारे आनंद मंगल वीरविजयकुं थावेरे ॥जय॥ आ०॥११

॥ इति श्रीचंद्रप्रभुजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीसुविधिजिन स्तवन ॥

॥ राग ध्रुपद ॥ आइ इंद्रनार करकर शृंगार ॥ ए देशी ॥

श्रीसुविधिनाथ प्रभु मोक्ष साथ, में भयो अनाथ मुज पकड हाथ हुं पतित नाथ धरधर करलीजो ॥ श्री ॥ १ ॥ सीर-मोहराट तिन जगमे हाक, सब जग वि-ख्यात जे न धरे धाक करे दुःखनो दाट जग वश करलीनो ॥२॥ एक अजब बात इनमोहराट, कीये तुमने घात मुखमारी लात गई इनकी लाज थरथर करदीनो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ घटअंतरबात कुण जाणे नाथ, मुजे मोहराट ।दयो दुःख अगाध कीयो बहु उचाट दुरगति दुःख दिनो

॥ श्री ॥ ४ ॥ अब मेरी लाज प्रभु तेरे हा-
थ, सब दुःख निरास करो सुविधिनाथ
आतमके दास वीरविजे अम कह्यो॥श्री॥५॥
इति श्रीसुविधिजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिनस्तवन ॥

॥ रागश्री ॥ शीतलजिनपति पूर्णानंद ॥
॥ शी ॥ आंकणी ॥

चौमुख समोवसरणमे सोहत निरखत
भविजन नयनानंद ॥ शी० ॥ १ ॥ बत्ति-
स विध नाटककी रचना जोडे शचीपति
बहुसुखकंद ॥ शी० ॥ २ ॥ देवकुमार कुमा-
रिका वीरची मुखथी थेइ थेइकार करंद
॥ शी० ॥ ३ ॥ धपमपधुंधुंमादल बाजे
वेणु विणा अति झणकंत ॥ शी० ॥ ४ ॥
ताल मृदंग ढक भेरीने फेरी माधुरी धुनी
सुनाद करंद ॥ शी० ॥ ५ ॥ कोमल कर-
युगताक्षिकालेती चुडीनो खलकारकरंत
॥ शी० ॥ ६ ॥ प्रभुगुणगावती अतिमनरंगे

अपने जनमकालावलहंत ॥ शी० ॥ ७ ॥ देखण इसविध नाटक रचना वीरविजय मन चाह करंद ॥ शी० ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीशीतलजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीश्रेयांसजिन स्तवन ॥

॥ राग भेरवी ॥ श्रीश्रेयांसजिन अंतरजामी दीलविसरामी मेरारे ॥ दी ॥ आंकणी ॥ अधम उधारण दुःख नीवारण तारण तीन जग केरोरे । चंदवदन तुम दरिसण पामी भांग्यो भवको फेरोरे ॥ श्री० ॥ १ ॥ चंदचकोर मोर घनचाहत पदमणी चाहत प्यारोरे ॥ युं चाहत प्रभु मुज मन भमरो चरणकमलदुग तेरोरें ॥श्री०॥ २ ॥ काल अनंते दरिसण पायो प्राणनाथ प्रभु तेरोरे ॥ कर्म कलंक सब दुरनिवारो जुं सुधरे भव मेरोरे ॥ श्री० ॥ ३ ॥ दरिसण करी परसन मनमेरो में हुं सेवक तेरोरे ॥ आतम आनंद प्रभुजी दीजो वीर विजयने घने-

रोरे ॥श्री०॥४॥॥ इति श्रीश्रेयांसजिनस्तवन

॥ अथ श्रीवासुपूज्यजिन स्तवन. ॥

॥ लगियां दिल नेमीके लार ॥ ए देशी ॥

मे ढोरुी औरकी आश चाहुं तुम सेवा महाराज ॥ आंकणी ॥ वासुपूज्य पंचमी गती गामी और देवनमें हे बहुखामी । तुमे तोडी मोहकी पास ॥चा॥मे०॥१॥धनुष तीर गदा चक्रना धारी कामनीने संग कामवीकारी। ते देवने नहीं कांइ लाज ॥चा०॥मे ॥ २ ॥ जप माला गले रुंमनी माला जोगलेवा अति हे विकराला। तुम ढोमो ते देवनो ख्याल ॥ चा० ॥ मे ॥ ३ ॥ जोगविकार तें सघला वामी तुम जये वासुपूज्य जगस्वामी॥ तुं देवनो देव कहेवाय ॥चा०मे॥ ॥ ४ ॥ वासुपूज्य सम देव न डुजो सुरतरु ढोरुी बाउल मत पूजो । जेथी मनवंछित फल थाय ॥ चा ॥ मे ॥५॥ आतम आनंद दीजो जोरी इनमें शोजा हे प्रजु तोरी ।

तुं वीरविजयने तार ॥ चा० ॥ मे ॥ ६ ॥
इति श्री वासुपूज्यजिनस्तवन ॥

॥ अथ श्री वीमलजिन स्तवन. ॥

राग केरबो ॥

वीमल सुहंकर मुजमन वसीया ॥ मु ॥ आंकणी ॥ अष्ट करम मल डुर करीने। सतचित आनंद रूप फरसीया ॥ वी० ॥ १ ॥ अंतरंग करुणा करी स्वामी। देशना अमृत मेघ वरसीया ॥ वी० ॥ २ ॥ जड चेतनको संग अनादी। एक पलकमें उषार धरसीया ॥ वी० ॥ ३ ॥ वपु संग सब डुर होवाथी। अनुजव आनंद रसमें हरसीया ॥वी०॥ ४॥ प्रज़ुकी वाणी अमीय समाणी। पानकरी परमानंद वरिया ॥ वी० ॥ ५ ॥ जब तुम वाणी करणे धारी। वीरविजयकुं आनंद दरसीया ॥ वी ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीविमल जिन स्तवन. ॥

॥ अथ श्रीअनंतजिन स्तवन. ॥

रागवरवा पीलु ॥

अनंत जिणंद अनंत बलधारी । सब-जिवनकु नये हितकारी॥ मोह अज्ञानघन तिमीर अंधेरा। ज्ञान अनंतसे कीयारे उजे-रा ॥अ०॥ १ ॥ नवनव नमवा नावठ नांगे। अनंत जिनंदसुं प्रीत जो मांडे ॥ जबलग ज्ञान दशा नहीं जागी । तबलग दुःख अनंतको नागी ॥ अ० ॥ २ ॥ जनम मरणकी आदि न पाइ। इनमे कोइ न नये-रे सहाइ ॥ जब प्रनु तुमरो दरिसण पायो । जनम सफल सब लेखे आयो ॥ अ० ॥३॥ तारो मुजको अनंत जिनस्वामी । नहीं तो लागशे तुमने रे खामी॥ आतम आ-नंद दिजोनोरी । वीरविजय मागे कर-जोडी ॥ अ० ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीअनंतजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥

धर्म जिनंदसुं प्रीत लागी मुनेरे धर्म जिणंदसुं प्रीत ॥ आंकणी ॥ प्रीत पुराणी न तोडो जिनजी। ए सज्जनकी न रीत ॥ लागी० ॥ १ ॥ दान शील तप भावना चौविध। धर्मकी थापना कीध ॥ लागी०॥२॥ दशद्वादश विध साधुश्राद्धके। देशना धर्मकी दीध ॥ लागी० ॥ ३ ॥ जगतजंतु उद्धारणखातर। मारग कीयो रे प्रसिद्ध॥ लागी० ॥ ४ ॥ धर्म नाथ जिन धर्म प्रकाशी। जगमे बहु जश लीध ॥ लागी० ॥ ५ ॥ वीरविजय आतम पद लेवा । धर्म सुणयानीरे प्रीत ॥ लागी० ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीधर्मनाथजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीशांति नाथ जिन स्तवन ॥

॥ राग देश सोरठ ॥

प्रभु शांति जिनंद सुखकारी घट अं-

तर करुणाधारी ॥ प्रभु ॥ आंकणी ॥ विश्वसेन अचिराजीको नंदन कर्मकलंक निवारी। अलख अगोचर अकल अमर तुं मृगलंछन पदधारी ॥ प्र० ॥ १ ॥ कंचन वरण शोभा तनुं सुंदर मुरती मोहन गारी। पंचमोचक्री सोलमो जिनवर रोगशोग भयवारी ॥प्रभु०॥२॥ पारापत प्रभु शरण ग्रहीने अभयदान दीयोभारी। हम प्रभु-शांति जिनेश्वर नामे लेशुं शीवपटणीरा ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ शांति जिनेश्वर साहिब मेरा शरण लीया में तेरा। कृपाकरी मुज टालो साहिब जनम मरणना फेरा ॥ प्रभु० ॥४॥ तन मन थीर करे तुम ध्याने अंतर मेलते वासे। वीरविजय कहे तुम सेवनथी आतम आनंद पासे ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीशांतिनाथजिनस्तवन ॥

॥ अथ श्री कुंथु जिन स्तवन. ॥

॥ राग लावणी ॥

कुंथु जिनेश्वर तुं परमेश्वर तेरीअजब गति कहिये। कुंथुकुंजरथी धारके करुणा जिनपदवी लहिये ॥ कुं० ॥ लखचौरासी जीव जोनीमे हमको रखना ना चइये ए दिलमेधारी तारके सरणाजिनवरकादइये ॥ कुं ॥२॥ शांगधारक त्रिभोवननाचो नरगनिगोदे दुःख सहिये। ए दिलकी बातां मुखसें तुम विन किस आगे कहिये ॥ कुं० ॥ ३ ॥ प्रभुमुज तारोपारउतारो गुणअवगुण तो ना लहिये। एधरमकाममे नाथकुं ढीलको करना ना चइये ॥ ४ ॥ वीरविजयकी एही अरज है आतम आनंद रसदइये। ए अरजसुणीने नाथको नेकनजरकरनाचइये ॥ कुं०॥ ५ ॥

इति श्रीकुंथुनाथ जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री अर जिन स्तवन. ॥

॥ चिंतामणपास प्रभु अर्जहै सुनो तो सही ॥ ए देशी ॥

अरजिनदेवविना औरकुंमानुं तो नही। तुम विन नाथ डुजो देव में चाहुं तो नहीं ॥ अर ॥ आंकणी ॥ काम क्रोधमदमोह द्रोहें करी जरियल हरि-हर देवने मानुंतो नहीं ॥ अर० ॥ २ ॥ मनवंछित चिंतामणि पामीने काच शकल हवे हाथमां झालुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ३ ॥ गले मोतियनकी माला में पेहेरीने और मालकाठकी हृदयमें धारुंतो नहीं ॥ अर ॥ ४ ॥ खीरसमुद्रकी लहेर हुं छोडीने छील्लर जलनीमे चाहना करुंतो नही ॥ अर० ॥ ५ ॥ शांत स्वरूप प्रभु मुरतिदेखीने तनमन थीर करी आतमा ठारुंतोसही ॥ ॥ अर० ॥ ६ ॥ वीरविजय कहे अरजिन

देवविना और देवनकीमे वार्त्ता मानुं तो नहीं ॥ अर० ॥ ७ ॥

इति श्रीअरजिन स्तवन समाप्तं ॥

॥ अथ श्रीमल्लि जिन स्तवन ॥

॥ राग ठुमरी दख्खणी ॥ आज जिनंदजीका दीठा में तो मुखडां मल्लि जिनंद प्रभु हमपर तुठडा ॥ आ ॥ १ ॥ चउगती फिरतमें पायो बहु दुखडां तुम प्रभु चरण ग्रहुं तो थाय सुखडां ॥ आ० ॥ २ ॥ तुछ जे विषय सुख लागे मुने मीठडां नरंग तिर्यंगमांही तेना फल दीठडां ॥ आ० ॥ ३ ॥ ताहारे जरोसे प्रभु लाग्युं मारुं मनडुं कृपाकरी तारवाने करो एक तनडुं ॥ आ० ॥ ४ ॥ आनंद विजयनो सेवक मागे एटलुं वारवार प्रभुजीने कहुं हवे केटलुं ॥ आ० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीमल्लि जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीमुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

रासधारी की देशी ॥ जिनंदजी एह संसारथी तार। मुनिसुव्रत जिनराज आ-ज मोहे एह संसारथी तार ॥ आंकणी ॥ ॥ पद्मावतीजिको नंदन निरखी हर-षित तनमन थाय ॥ जि० ॥ कछपलंछन प्रभुपद थारे शामल वरण सोहाय ॥ शा ॥ मु ॥ १ ॥ लोकांतिक सुर अवसर देखी प्रतिबोधन कुं आय ॥ जि० ॥ राज काज सब छोड दइ प्रभु संजमशुं चितलाय ॥ सं ॥ मु ॥ २ ॥ तपजप संजम ध्या-नानलथी कर्म इंधन जलजाय ॥ जि ॥ लोकालोक प्रकाशिक अद्भुत केवल ज्ञान तुं पाय ॥ के ॥ मु ॥ ३ ॥ ज्ञानमे न्याली करुणा धारी जीवदया चितलाय मित्र अश्व उपगार करणकुं नरुअछ नगरमे आय ॥ न ॥ मु ॥ ४ ॥ अश्व उगारी बहु जनतारी अजर अमर पद-

पाय ॥ जि ॥ वीरविजय कहे मेहेर करोतो हमने ते सुख थाय ॥ ह ॥ मु ॥५॥
॥ इति श्री मुनिसुव्रत जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीनमिनाथ जिन स्तवन ॥

देशी वधाइनी ॥ आज वधाइ वाजेछे नगर मथुरांमांही विजय घर। आज वधाइ ॥ आंकणी ॥ विप्राराणीये बेटो जायो शुभमुहूर्त्त शुभवार। सोहमसुरपतिचित्त धरी आवे विजयराय दरबार ॥ वधाइ॥ १ ॥ मात नमी करी पंचरूप धरी करकमले प्रभु लीध। चौसठ सुरपति सुरगिरिरंगे जन्म महोछवकीध ॥ वधाइ ॥ २ ॥ विधि पूजन करी, अष्ट मंगल धरी गीतगान बहुकीध। सोना रुपाके फुले वधाइ जनमको लाहोलीध ॥ वधाइ ॥३॥ जन्ममहोछव ठाठ करीने जननीपासे लाय। सुरपति सघला महोछव करवा ढी-

पनंदीसर जाय ॥ वधाइ ॥ ४ ॥ प्रातसमय भये अति आनंदसे विजयराय दरबार। धवलमंगल सब गीतनादसें पुत्रवधाइ थाय ॥ वधाइ ॥ ५ ॥ सुतक कुलमरजाद करीने भोजन बहु विधकीध। वीरविजय कहे नातजमावी नमिकुमारनाम दीध ॥ वधाई ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीनमिनाथ जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीनेमनाथ जिन स्तवन ॥

रागठुमरी पंजाबी ॥ मेरे प्रभुसें एही अरज हे नेक नजर करो दया करी ॥ मे ॥ आंकणी ॥ समुद्रविजय शीवादेवीना जाया। छपन दिगकुमरी हुलराया। अनुक्रमे प्रभु जोबन पाया। परणि नहीं एकनार थवा अनगारके तृष्णा डुरकरी ॥ मेरे ॥ १ ॥ तुमे तो सघली माया तोडी। राजेमती स्त्रीने छोडी। सहसावनपे रथको जोडी। गये प्रभु-

गिरनार लिये व्रत भारके ऊगमा डुरकरी॥ मेरे ॥ २ ॥ तपजप संजम कीरिया धारी। प्रभुजी वसीया गढ गिरनारी । नेम प्रभु कीहुं बलिहारी। पामी केवलज्ञान थया शीवराणके अघ सब डुरकरी ॥ मेरे ॥३॥ तुमेतो हो प्रभु साहिब मेरा । हमतो हे प्रभु सेवक तेरा। अमने घाले तुमसें घेरा। मुजे उतारो पार मेरा सरदारके जेम डुख जायटरी ॥ मेरे ॥ ४ ॥ श्याम वरण तनुं शोभासारी । मुख मटकालुं छबी हे न्यारी। नेम प्रभुकी मुरती प्यारी । वीरविजयनी बात सुणो एक नाथके भवोभव तुंही धणी ॥ मेरे ॥ ५ ॥

इति श्री नेमनाथ जिनस्तवन॥

॥ अथ श्री पार्श्व जिन स्तवन ॥

राग पंजाबी टपो ॥ मोरी बइयां तो पकड सुखकारी स्वाम तोरुं पार्श्वनाथ

परतक्षनाम ॥ मोरी ॥ आंकणी ॥ अस्व-
सेन वामाजीको नंदन वणारसी नगरीमे
जनमठाम ॥ मोरी ॥ १ ॥ बालपणमे
अद्भुतज्ञानी जीवदयाका हो करुणा धाम
॥ मोरी ॥ २ ॥ कष्ट करंतो कमठ समीपे
आये प्रभु तुमे धारी हाम ॥ मोरी ॥ ३ ॥
काष्टमे ज्वल तो फणी निकाली मंत्रसें
दियो प्रभु स्वर्ग धाम ॥ मोरी ॥ ४ ॥
अवसरे दिक्षातपजपसाधी प्रभुजीलीयो
तुमे मोक्षठाम ॥ मोरी ॥ ५ ॥ वीरवि-
जयकी एही अरजहै हमको हे प्रभु एही
काम ॥ मोरी ॥ ६ ॥

इति श्री पार्श्वनाथ जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री वीर जिन स्तवन ॥

राग धन्यासरी ॥ वीरहसें नयोरे
उदासी। वीर जिन वीरहसे नयोरे उदासी
॥ टेक ॥ दुषम कालमे दुखियो ठेरूी।

तुम जये शीवपुरवासीरे ॥ वी ॥ १ ॥ प्रभु दरिसण परतक्ष न दीठुं । ईणशुं जयो-रे नीराशीरे ॥ वी ॥ २ ॥ करमरायशु-नटें मुज घेर्यो । मह्हारी करे सब हांसीरे ॥ वीर ॥ ३ ॥ तुमविना एकाकी मुज-देखी । डारी गवे मोहफांसीरे ॥ वीर ॥४॥ प्रभु विना को नकरे मुज करुणा । देखो दिलमे विमासीरे वीर० ॥ ५ ॥ पीण तुज आगमने तुज मुरति । एही शरण मुज थासीरे ॥ वीर ॥ ६ ॥ एही जरोंसो मुज मन मोटो । जांगी जवकी उदासीरे ॥ वीर ॥ ७ ॥ वीरविजय कहे वीर प्रभुकी । मुरती शरणज थासीरे ॥ वीर ॥ ८ ॥ इति श्रीमहावीर जिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ कलश ॥ राग रेखता ॥

॥ चैवीस जिन राजमें गाया परम आनंद सुख पाया । प्रभु गुण पार ना पावे जो सुर-

गुरु वर्णवा आवे ॥ चौवी ॥ १ ॥ अलपसी बुद्धि हे मोरी करीपिण वर्णना तोरी । प्रभु तुमे मानजो साची न थाये जगतमें हांसी ॥ चौवी ॥ २ ॥ मेरी अब लाज तुमहाथे वांहे ग्रही लिजियें साथे । कहो प्रभु जोरक्या तुमने जरा उद्धारतां हमने ॥ चौवी ॥ ३ ॥ प्रभु चौवीस जगस्वामी पुरवले पुन्यथी पामी । हरो सवदुखनो घेरो नसे जरामर्णनो फेरो ॥ चौवी ॥४॥ वेदं युग अंकं इंदु वर्षे आषाढे मास शुक्ल-पक्षे । तिथौ भली पूर्णिमा पूरी । भयो सोमवार सुखभूरी ॥ चौवी ॥ ५ ॥ विजे आनंद गुरुपायो वहु मन वीर हरषायो । भृगुकछ पुर चौमासी रही करी विनती साची ॥ चौ० ॥ ६ ॥ इति कलश ॥

॥ अथ परचुरण स्तवनो लिख्यते ॥

॥ अथ श्रीभावनगर मंडण श्री चंद्रप्रभ जिन स्तवन ॥

राग इंद्रसभा दादरो ॥ चंद्रवदन शुभ चंद्र प्रभु ताहरा । देखी दिलशांत मन चकोर रीजे माहरा ॥ १ ॥ नयन युगल भये शांत रस ताहरा । प्रभु गुण कमल भमर मन माहरा ॥ २ ॥ प्रभु तोही ज्ञान सोही मान सर ताहरा जहांमनहंस खेले रातदीन माहरा ॥ ३ ॥ प्रभु करुणा दृग हमसे भई ताहरी । तब मदमोह किसी निंदखुली माहरी ॥ ४ ॥ अति उत्कंठ से मे दर्श चाह ताहरा । करमके फंद से जो भाग्य खुले माहरा ॥ ५ ॥ भाव पुरे वास भया खास प्रभु ताहरा सिद्ध हुवा काज वीरविजय कहे माहरा ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वरपार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ राग दादरो ॥

चितहरमारा शंखेश्वर प्यारारे । चि । आंकणी ॥ प्रभु मोरी विनती दिलमे धारोरे अरज शीकारोरे भ्रांति निवारोरे ॥ शं ॥ चि ॥ १ ॥ वेरण कुमति हुं भरमायोरे करम वश आयो रे भवे भटकायोरे ॥ शं ॥ चि ॥ २ ॥ पुरव पुन्य उदे करी पायोरे मनुष्यगति आयोरे चित हरखायोरे ॥ शं ॥ चि ॥ ३ ॥ अब चरणोकी सेवा मे पामीरे दीलविसरामीरे शंखेश्वर स्वामिरे ॥ शं ॥ चि ॥ ४ ॥ तुम प्रभु आतम आनंद दाईरे वीरने सहाईरे कर करुणाईरे ॥ शं ॥ चि ॥ ५ ॥ इतिशंखेश्वरजिन स्तवन ॥

॥ अथ श्रीतारंगाजी मंडन स्तवन ॥

॥ विषयों के नेडे मत जाउ । ए देशी ॥

तारंगतीरथे सोहाय तारंगतीरथे सोहाय ॥ प्रभु मेरोरे तारंगतीरथेसोहाय ॥ आंकणी ॥ मुलनायकश्री अजितजिनेश्वर भेटां भवदुःख जाय ॥ प्रभु ॥ १ ॥ भवभव भटकत शरणेहुं आयो अबतो रखोजी मोरी लाज ॥ प्रभु ॥ २ ॥ तारंगतीरथे भविजनतारण बैठे ध्यान लगाय ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ हुं अनाथ मुजको जो तारो जगमे बहुजश थाय ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ वीरविजयनी विनती एही । आवागमण निवार ॥ प्रभु ॥ ५ ॥

॥ इति तारंगामंडन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री धुलेवा मंडन केसरियाजी स्तवन ॥

॥ राग सारंग ॥ हांहांरे वाला आज

केसरियाजी भेटीया धुलेवा मंफनरायरे
हांहांरे वाला भव्यकरम परजालवा वेग
तुमे ध्यान लगायरे ॥ १ ॥ हांहांरे वाला
वासर एतले न जाणीयो तुमे तारणत-
रण जिहांजरे हांहांरे वाला भुलअनादिनी
माहरी । अब भांगी दिनदयालरे ॥ २ ॥
हांहांरे वाला चौगति चौटे नाचियो शांग
धारी नवनवनाथरे । हांहांरे वाला भव
नाटकमे नाचतां प्रभु काढो अनंतो का-
लरे ॥ ३ ॥ हांहांरे वाला मोटे पुन्ये पा-
मीयो । एह मानवनो अवताररे। हांहांरे
वाला गाम नगर पुर ढुंढतां तुं मिलियो धु-
लेवामांहीरे ॥ ४ ॥ हांहांरे वाला आ-
ज मनोरथ सवीफला माहरो भवनाटक
गयोछुररे । हांहांरे वाला उछवरंगवधा-
मणा थया वीरजय भरपुररे ॥ ५ ॥

॥ इति समाप्तं ॥

॥ अथ श्रीआबुजी ऋषभजिन स्तवन ॥

॥ राग काफी ॥ भेट्यो अर्बुदराजरे आजसफल घरी भई ॥ भे ॥ आंकणी ॥ नाभिनंदजी के दरससरससें छुर गई मिथ्यावास । अनुभव ज्योत भई निजघटमें । त्रुटी भवकी पासरे ॥ आ ॥ १ ॥ दिनउद्धार करण तुम सरिखो नही दीठो इणसंसार । प्रवहण प्रेरक जिम निरजामक बांहेग्रही तिमताररे ॥ आ ॥ २ ॥ चौगति चुरण चौमुख जिनवर अचलगढे मनोहार । दरिसण करकर छुरित नासे पापगये परिहाररे ॥ आ ॥ ३ ॥ तुम गुण केरा पारनपाउं जिम जलधी है अगाध । कल्पवृक्ष चिंतामण छोडके बाउलमा दियो बाथरे ॥ आ ॥ ४ ॥ क्षीणक्षीण पलपलनाथ तुमारो ध्यानधरुं सुलतान । तुमगुण मकरंदपानी करकर वीर विजय गुलतानरे ॥ आ ॥ ५ ॥ इति समाप्तं ॥

॥ अथ श्रीकेसरियाजी स्तवन ॥

॥ आज वधाई वाजे छे ॥ ए देशी ॥

नगर धुलेवामांही जाई प्रभु आज केसरीयाजी भेट्याछे ॥ नगर ॥ आंकणी ॥ छोटपणेमेखेलताजी तुमहम नवले-वेस त्रिभुवन पदवी तुमेलहीजी हमे संसारिकेवेस ॥ के ॥ १ ॥ अवसरलही अवविनवुंजी तुमहो दीनदयाल जे पदवी तुमने लहीजी ते आपो महाराज ॥ के ॥ २ ॥ दायक दानदेतां थकांजी नवीकरे ढीललगार इछित हरिचंदन दीएजी तो तुमरी क्या बात ॥ के ॥ ३ ॥ समरथ नहीं ते दानमेजी हरी हरादिक देव जोग्य जाण कर जाचीयोजी अबमिलीयो प्रभुमेल॥ के ॥ ४ ॥ सुणी अरजी सेवक तणीजी चितमे चतुर सुजाण आतम लक्ष्मी दिजीएजी वीर विजयकुं दान ॥ के ॥ ५ ॥ ॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीजीरामंडनचंद्रप्रभजिन स्तवन ॥

आइ ईंद्र नार करकर शृंगार ॥ ए देशी ॥

प्रभु अरज धार मनमे विचार तुमहो कृपाल करो मारीसार महसेन तात लक्ष्मणा उरजायो ॥ प्रभु ॥ १ ॥ हुं हाथ जोरु कहुंमानमोरु माहापाप घोर हे तेहनो जोर हरो दुःखनी कोरुकरो निजरुपजेसो ॥ प्रभु ॥ २ ॥ तुमहो दयाल धरो बिरुदसार मेरो भव संसार काढो तेहथी बार दीनाके नाथ मेरी अरज सुणिजे ॥ प्रभु ॥ ३ ॥ हुं रहो निराश वस्यो गरभावास महादुखनीरास जाणे नरकावास अब मिलियो नाथ दुख हरो प्रभु मेरो ॥ प्रभु ॥ ४ ॥ आज आणंद अंग मनमे उमंग जाणे पुनमचंद शीतल अभंग हे लंछन चंद एसो चंद्र प्रभु दिठो ॥ प्रभु ॥ ५ ॥

जीरानगर खास प्रभु करे निवास मनधरे जे आश मीले मोक्षवास लक्ष्मीके दास वीरविजे एम कहो ॥ प्रभु ॥ ६ ॥

इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री जयपुर मंडन ॥
सुमति जिनस्तवन ॥
राग वरवापीलु ॥

साहिबसुमति जिनेश्वरस्वामी सुणहो कृपानिधि अंतर जामी। कालअनादिचहुं-गति ऊडी फीरतां आयो मे शरणे तिहारी ॥ १ ॥ गरभावासमे अति दुःख भारी उंधे मस्तक हुवोरे खुवारी। मोहकरमकी हे गती न्यारी जनम मरण नहीं ओरु-तलारी ॥ सा ॥ २ ॥ तुमविनकोण करे मुजसारी अब तो लो प्रभुखबर हमारी। जीव अनंते संसारसें तारी पहोंचाडे प्रभु मुक्तिमोझारी ॥ सा ॥ ३ ॥ माहा-

रीवेला मौंन वृतधारी शोजा नहीं प्रजु इनमे तुमारी । तुम प्रजुतारक जगजयकारी तुमपर वारी हुं जाउंरे हजारी ॥ सा ॥ ४ ॥ तातमेघ मात मंगला तिहारी वंस इक्ष्वागमे हुवो अवतारी । जाव सहित करे जक्ति तिहारी तेहोवे शीवरमणी अधिकारी ॥ सा ॥ ५ ॥ नगर जेःपुरमे आनंदकारी सुमति जिनेश्वरहे दातारी । लक्ष्मी विजय गुरु आणाकारी वीरविजय मांगे जवपारी ॥ सा ॥ ६ ॥

॥ इति ॥

॥ अथ राणकपुर मंडन स्तवन ॥

॥ नेमी सरबनडेने गिरनारी जातां ॥ ए देशी ॥

साजन हे राणकपुर महाराज आज जले जेटिया हो राज मिथ्यातिमिर अनादरोहो राज ॥ सा ॥ डुर कीयोमें आ-

ज प्रभु मुख जोवतांहो राज ॥ प्र ॥ सा ॥ १ ॥ सेवकरी एक विनतीहो राज ॥ सा ॥ अवधारो माहा राय दया करी माहरीहो राज ॥ द ॥ सा ॥ २ ॥ तस्करच्यार डरामणाहोराज ॥ लाग्या माहारी लारके वेगे निवारजोहो राज ॥ वे ॥ सा ॥ ३ ॥ काल अनादि लुटियो हो राज । सा । इणतस्करे मुजनाथ वात कोण सांभले होराज ॥ वा ॥ सा ॥ ४ ॥ ज्ञान खरग मुज दिजिये हो राज ॥ सा ॥ कीजीये सेवक सार वार करो माहरी हो राज ॥ व ॥ सा ॥ ५ ॥ अब तुमचरणे आइने हो राज ॥ सा ॥ भव भव संचित पाप करम दल काटसां हो राज ॥ सा ॥ ॥ ६ ॥ धन धन मरुदेवी मातने हो राज ॥ सा ॥ नाभीराय कुलहंस वंस इक्वागनो हो राज ॥ वं ॥ सा० ॥ ७ ॥ सेवक दुःखियो देखीने हो राज ॥ सा ॥ मनमे

आणी महेर नवोदधि तारिये हो राज ॥ ना ॥सा ॥ ८ ॥ आतम लक्ष्मी दिजिये हो राज ॥ सा ॥ वीरविजयने आज काज सरे माहरो हो राज ॥ का ॥ सा ॥ ए॥ इति राणकपुरस्तवन समाप्तं ॥

॥ अथ श्री गीरनारमंडण नेमनाथ जिन स्तवन ॥

में आजे दरिसण पाया श्री नेमनाथ जिनराया ॥ मे ॥ आंकणी॥ प्रभु शीवादेवीना जाया प्रभु समुद्रविजय कुल आया करमोके फंद छोडाया ब्रह्मचारि नाम धराया जिने तोडी जगतकी माया॥ जि ॥ मे ॥ १ ॥ रेवतगिरी मंडण राया कल्याणक तिन सोहाया दिक्षा केवल शीवराया जगतारक बिरुदधराया तुम बेठे ध्यान लगाया ॥ तु ॥ मे ॥ २ ॥ अब सुणो त्रिभुवन राया में करमोके वश आया हुं चतुर गति भटकाया मे-

दुःख अनंते पाया ते गिणती नाही गणाया । ते ॥ मे ॥ ३ ॥ मे गरनवासमे आया उंधे मस्तक लटकाया आहार सरस विरस भुक्ताया एम अशुभ करम फल पाया इण दुखसे नाही मुकाया ॥ ॥ इ ॥ मे ॥ ४ ॥ नरभव चिंतामणि पाया तब च्यार चोर मिल आया मुजे चौटे-मे लुट खाया अब सार करो जिनराया किस कारण देर लगाया ॥ कि ॥ मे ॥ ५ ॥ जिने अंतरगतमे लाया प्रभु नेम निरंजन ध्याया दुःख संकटविघन हठाया तेपर-मानंदपद पाया फेर संसारे नहीं आया ॥ फे ॥ मे ॥ ६ ॥ में दुर देससें आया प्रभु चरणे शीशनमाया में अरज करी सुखदाया तुमे अवधारो महाराया एम वीरविजय गुणगाया ॥ ए ॥ मे ॥ ७ ॥

इति श्री गीरनार मंरून श्री नेमनाथ जिन स्तवन ॥ समाप्तं ॥

॥ अथ श्री रांधणपुरमंमण ऋषन्न जिन स्तवन ॥

राग सारंग ॥ चितचाहे सेवा चरणकी प्रन्नुजी रुषन्न जिणंदकी ॥ चि ॥ आंकणी ॥ चेतन ममता सबही बोमी ए प्रन्नु सेवो एकमति लोकातित स्वरूप ते जेहनुं लेई वरों पंचमी गती ॥ चि ॥१॥ एक एक प्रदेशें अनंती गुण संपतनी आवली । सुरगुरु कहेतां पार न पावे एक अनेक मुखे करी ॥ चि ॥ २ ॥ नवथकी अलगा बो प्रन्नु तुमही नविजन ताहरा नामथी पार नवोदधीनो ते पामे ए अचरिज मन बे अती ॥ चि ॥ ३ ॥ तुम प्रन्नु तारक जगजयवंतो नहीजानो मे दुरमती मन वचकाया थीरकरीने नहीं सेव्यो में एक रती ॥ चि ॥ ४ ॥ अवसर पामी न करुं स्वामी सीरधरुं प्रन्नु नीचा करी रांधणपुरमंमण दुखखंडण

सेवीवरो शीवसुंदरी ॥ चि ॥ ५ ॥ वारवार विनवुं प्रभु तुमथी जो अवधारो माहरी आतम आनंद प्रभुजी दीजो वीरविजय-ने मया करी ॥ चि ॥ ६ ॥ इति समाप्तं ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

मनरीबातांदाखाजी महाराराज ॥ए देशी॥

प्रीतमजी सुणो दीलरी बात हमारी जी माराराज ॥ आंकणी ॥ विमलगि-रिंदकुं भेटो जी माराराज भव भवके संचित पापकरमकुं मेटो जी माराराज ॥ प्रीत ॥ १ ॥ पुरव नवाणुंवारा जी मारा-राज । प्रभु रुषभ जिणंदा चरणे चल कर आया जी माराराज ॥ प्री ॥ २ ॥ राजादनी तरुछाया जी मारा राज । तुमे दिलभर देखो रुषभ जिणंदके पाया जी मारा राज ॥ प्रीत ॥ ३ ॥ पुंडरिक गणधर आदि जी माराराज मुनिमुक्ति-सधारे । टाली सर्व उपाधी जी मारा-

राज ॥ प्रीत ॥ ४ ॥ प्रीतम तीरथ मोटुं माराराज कांई ढील करोछो अमने लागे खोटुं जी माराराज ॥ प्रीत ॥ ५ ॥ मिथ्या निंद हठावो जी माराराज ए तीरथ जाके कुमतिके गढढावो जी मारा राज ॥ प्रीत ॥ ६ ॥ ङुरजनरा नरमाया जी माराराज चेतनजीये तो चौगतीमे नटकाया जी माराराज ॥ प्रीत ॥ ७ ॥ ए पावनतीरथ पामी जी मारारा‍ज स- बङुःखके चुरण मतकरजो तुमे खामी जी मारा‍राज ॥ प्रीत ॥ ८ ॥ चितङामे नित्य ध्यावोजी मारा‍राज गिरीवरके फरसी परमानंद पद पावो जी मारा‍राज ॥ प्रीत ॥ ए ॥ सुमता शखीरी वाणी मारा‍राज तुमे चितमां धरजो वरजो शी- वपटराणी जी मारा‍राज ॥ प्रीत ॥१०॥ गुण गावे मिली देवाजी मारा‍राज वीर-

विजय मांगे आतम लक्ष्मी मेवा जी मारराज ॥ प्रीत ॥ ११ ॥

इति श्री सिद्धाचल स्तवन संपूर्णम्

॥ अथ श्री जिरामंडणचिंतामणी स्तवन ॥

॥ राग दादरो ॥ ठुमरीभेद ॥

दिलविसरामी चिंतामण स्वामीरे ॥ टेक ॥ मोहन मुरती पाशजी तोरीरे । अवर न जोरीरे । चितलीयो चोरीरे ॥ चिं ॥ १ ॥ अंतरंगतकी अंतरजामीरे । कहुं शीरनामीरे । सुनो मेरे स्वामीरे ॥ चिं ॥ २ ॥ मोहरायने मेनुं दुःख दीयारे । सबी लुटलीयारे । जुलमही कीयारे ॥ चिं ॥ ३ ॥ तुम विनकौन सुने प्रभु मेरीरे शरणागत तोरीरे ॥ खबर लियो मोरीरे ॥ चिं ॥ ४ ॥ दासकी आश प्रभु पाशजी पुरोरे ॥ करम सब चुरोरे ॥ बजे जयतूरोरे

॥ चिं ॥ ५ ॥ वीरविजय कहे पाशजी पायोरे ॥ जीरे जब आयारें ॥ दुःख विसरायोरे ॥ चिं ॥ ६ ॥

इति ॥ समाप्तं ॥

॥ अथ श्रीपट्टी मंडनपार्श्व जिन स्तवन ॥

करले पारश संग । प्रभु है अनंग ज्ञंग । कंचन कामनी संग । कमले क्युं था-वदांजी ॥ क ॥ १ ॥ मनुष्य जनम आं-दा ॥ निंदमें क्युं सोई रेंदा । शुपनशी माया तेनुं । फेर नहीं पावदांजी ॥ क ॥ २ ॥ प्रभु है पुरनचंद । अश्वसेनराय नंद धन दिन आज सारा । प्रभु घर आवदांजी ॥ क ॥ ३ ॥ शीफत करांमे केती । जिन्नान तो नांहीरेंदी । सुर गुरु गुण तुं सांदा । पार नहीं पावदां जी ॥ क ॥ ४ ॥ मनके मोहन पामी पुरतो

पट्टी के स्वामी । अब तो न रखो खामी । वीरविजे गावदांजी ॥ क ॥ ५ ॥

इति स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री घोघा मंडण नवखंडापार्श्व जिन स्तवन ॥

घनघटा जुघन रंग गाया नव खंडा पाशजि पाया ॥ आंकणी ॥ प्रभु कमठ हठीकुं हठाया । विषधर पर जलती काया । दिल दया धरी के बोलाया । सेवक मुख मंत्र सुणाया । क्षणमें धरणेंद्र बनाया ॥ घ ॥ १ ॥ में और देवन कुं ध्याया । सब फोगट जनम गमाया । सुनो वामाराणीका जाया । कुछ परमारथ नहीं पाया ज्युं फुटा ढोल बजाया ॥ घ ॥ २ ॥ सुणि चामीकर जरमाया । में पीतल हस्ते पाया । मुजे हुवा बहु दुखदाया । करमोने नाच नचाया । इस विध धके बहु खाया ॥ घ ॥ ३ ॥ घोघा मंडण सुख

दाया। जग बहु उपकार कराया। नवखंडा नाम धराया। में सुणकर शरणे आया। उद्धार करो महाराया ॥ घ ॥ ४ ॥ हुवा चतुर मास मुजे आया। किसकारण अब बेठाया। द्यो मन वंछित सुखदाया। हुं प्रेमे प्रणमुं पाया। सेवकका काज सराया ॥ घ ॥ ५ ॥ शरयुग निधि इंदु कहाया। जला आश्विन मास सोहाया ॥ दीवाली दिन जब आया। में आतम आनंद पाया। एम वीर विजय गुण गाया ॥ घ ॥ ६ ॥

इति समाप्तं ॥

॥ अथ नव खंडा पार्श्व जिन स्तवन ॥

नवखंडा स्वामी। आप बिराजो घोंघा शहेरमे ॥ हांहांरे घोघा शहेरमें ॥ नव ॥ आंकणी ॥ देश देशके यात्री

आवे पूजा आंगी रचावे । नवखंडाजी नाम समरतां । पूरण परवा पावेजी ॥ नव ॥ १ ॥ अश्वशेन वामा सुत केरी मूरति मोहन गारी । चंद्र सूरज आकाशे चढिया तुमरे रूपसें हारीजी ॥ नव ॥ २ ॥ मुखने मटके लोयण लटके मोह्यां सुरनरकोडी । और देवनकुं हम नहीं ध्यावें एम कहे करजोडीजी ॥ नव ॥ ॥ ३ ॥ तूं जगस्वामी अंतर जामी आतम रामी मेरा । दिल विसरामी तुंमसें मांगु । टालो भवका फेराजी ॥ नव ॥ ४ ॥ कल्पवृक्ष चिंतामणि आशा पूरे नहीं जडभाषा ॥ तीन भुवनके नायक जिनजी ॥ पूरो हमारी आशाजी ॥ नव ॥ ५ ॥ दायक नायक तुम हो साचा और देव सब काचा । हरिहर ब्रह्म पुरंदरकेरा जूठे जुठ तमासाजी ॥ नव ॥ ६ ॥ भटकभटक घोघा बंदरमे दर्शन दुर्लभ पाया । वीरविजय कहे

आतम आनंद आपो जिनवर रायाजी ॥ नव ॥ ७ ॥

इति स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ सन्नखतरामंडन धर्मनाथ स्तवन ॥

राग कानडा ॥

और न ध्याउं में और न ध्याउं ॥ धरम जिणंदसें लगन लगाउं ॥ ध्यान अगनसें करम जलाउं ॥ छिनमें परमातम पदपाउं ॥ और ॥ १ ॥ लोह पारशको संगमपाई। हेमरूप धारत मेरे भाई ॥ भजले धरमनाथ एक वारा ॥ आतम हित करले तूं प्यारा ॥ औ ॥ २ इन विन और देव नहीं दूजो ॥ विधिसें धरम जिणंदकुं पूजो ॥ मनमें ध्यान धरो एक धारा । कामित फलके देवनहारा ॥ औ ॥ ३ ॥ नूत मंदिर आप पधारो ॥ एही सेवक अरजी अवधारो ॥ घंटारव नोबत जब गाजे ॥ तब

सेवकको आनंद जागे ॥ औ ॥ ४ ॥
पुरव पुन्ये दरिशण पायो ॥ जब में हेम-
नगरमें आयो ॥ वीरविजयकी विनती
एही ॥ आतम आनंद मुजको देही
॥ औ ॥ ५ ॥

इति श्री धर्मनाथ जिन स्तवन ॥

॥ अथ श्री हुशियारपुरमंडनवासु-पूज्य जिन स्तवन ॥

राग कमाच ॥

आज डुविधा मेरी मिटगई ॥ ए देशी ॥

वासुपूज्य जिनराज आज मेरो मन
हरलीनोरे ॥ आंकणी ॥ वासववंदित
पदकजद्वंद ॥ वसुपूज्य राजाके नंद
॥ नविक कमल विकासीचंद ॥ तनूरक्त-
रंगीलोरे ॥ वा ॥ १ ॥ कामित पूरण
सुरतरुकंद ॥ कठिन करमका काटे
फंद ॥ अरज करुं अति नाग्य मंद ॥

कुबदयादिललयावोरे ॥ २ ॥ फसियो मोह दशा महा फंद ॥ अब काढो प्रभु करुणावंत ॥ चरण शरण मागुं अमंद । क्युं देरलगावोरे ॥ ३ ॥ तारक प्रभुजी जग जयवंत ॥ तास्ये तुमने संत अनंत ॥ मुज कीरपाकीजो नदंत ॥ निज बिरुद संभालोरे ॥ वा ॥ ४ ॥ भव भमियो में भगवंत ॥ तुम दरिशण विन काल अनंत ॥ नगरस्यारपुरे में चंग प्रभु दरिशण पायारे ॥ वा ॥ ५ ॥ संवत् नेत्रबाणनिधिचंद असुशुक्क द्वीतिया दिनचंग ॥ वीरविजय मांगे अभंग ॥ आतम पद दीज्योरे ॥ ६ ॥

इति समाप्तं ॥

॥ अथ श्री अमृतसर मंडन अर जिन स्तवन ॥

श्री अरजिन अंतर जामी । तुमसे क-

हुं सीर नामी करुणा हगमोये करना ॥ ज्युं वेग हुवे तरनाजो ॥ १ ॥ धन दोलत माल खजाना । नहीं मांगुं त्रिभुवन राना मन जमरेकुं ए आशा । तुज पद पंकजमे वासा । श्री ॥ २ ॥ ए डुषम कालडुःख दाई । तुज मुरती है सुख दाइ ॥ नहीं कुमतिके मन जाई । हुवे डुरगत के सहाई ॥ श्री ॥ ३ ॥ कुपंथ जिनोने धारे । डुरगतिमे गये विचारे । जिने तुम आज्ञा नहीं कीनी । तिने पाप पोटसीरलीनी ॥ श्री ॥ ४ ॥ अमृतसर मंरूण स्वामी । घटघट में तूं विसरामी। तोरी आज्ञा सिरपर धारी । हुं वेग वरुं शीव नारी ॥ श्री ॥ ५ ॥ निधियुग निधि इंडु वरसे । मास कार्त्तिक शुक्ल पक्षे- तिथि प्रतिपदा गुण गाया । ए वीरविजय सुख दाया ॥ ६ ॥

इति समाप्तं ॥

॥ अथ अमृतसरशीतल जिन स्तवन ॥

चलो खेलिये होरी । शीतल जिन नाथ जयोरी ॥ च ॥ आंकणी ॥ आये वसंत फूली वनराजी । भमर गुंजार भयोरी । माकंदमंजर सुंदर चारवी । कोकिल शोर थयोरी । मेरोमन अति उलस्योरी ॥ च ॥ १ ॥ मोघर चंपक केतकी फुली । और फुली चित्रवेली । चंबेली मुचकुंद ज फुली । दमनक कलियां मोरी प्रभुजीकी पूजा रचोरी ॥ च ॥ २ ॥ कुशमाभरण करी प्रभु पूजो । ज्युं पामो भव पारी । केसर रंग के तिलक लगावो। धुप घटी विरचावो । भवि तुमे भावना भावो ॥ च ॥ ३ ॥ ताल मृदंग विण रूफ बाजत । भुंगल गाजत भेरी । गीत नृत्य प्रभुजीके आगे । करत मिटत भव फेरी। वसंतकी बाहार भलेरी ॥ च ॥ ४ ॥ नं-

दानंदन भव दुख कंदन । नामसें शीत भयोरी । शोच करत बिचारो चंदन । नंदन वन मे गयोरी । जाको मान भंग थयोरी ॥ च ॥ ५ ॥ ढुंढत ढुंडत शहेर शुधामें । शीतल नाथ मिल्योरी । वीरविजय कहे आतम आनंद । आज हमारें थयोरी । दरशसें पाप गयोरी ॥च॥६॥

इति स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ हस्तिनापुर स्तवन ॥

॥ राग होरी ॥

॥ चालो खेलिये होरी जिहां जिन कल्याणक भयेरी ॥ चा० ॥ टेक ॥ सुंदर हस्तिनागपूर है । पूरवदेस मोझारी । जिहां जिनतिनके कल्याणिकका । कथन हे सूत्र मोझारी । सब जिवन हितकारी ॥ चा० ॥ १ ॥ शांतिनाथ श्रीकुंथुनाथ जी । अरजिनअंतर जामी । चवन जन-

मदीज्ञाने केवल । पायेप्रभुधारी । कल्या णिक जगसुखकारी ॥ चा० ॥ २ ॥ दो विधचक्री पदसुख जोगी । तेप्रभु आनंद कारी । समेद शिखर जाइ ध्यान लगाई। लीनी शीव पटराणी करकथसें जवपारी ॥ चा० ॥ ३ ॥ तीरथयात्रा करो शुभजा वें । समकित निरमलकारी । जनमजनम के पापनिवारी । आतमके हितकारी । सदासुखके दातारी ॥ च ॥ ४ ॥ शहेर- दिल्लीसें यात्राकरनकुं । संघसकलमिल- आये । श्रीश्रीहस्तिनागपुरमें । धवल मंगलवरताये पूजासें आनंद पाये ॥ च ॥ ५ ॥ संवत् भुवन बाण निधिइंदु । फाल्गुनशुदिसुखकारी । गुरुवार प्रतिपद- जयकारी । वीरविजयहितकारी । प्रभुने- व्यांभवपारी ॥ ६ ॥

इति समाप्तं ॥

॥ अथ मांडवगढमंडन स्तवन ॥

पानीहारीकी देशी ॥

मांडवगढमे विराजता माह्रारा वालाजी ॥ मा ॥ स्वामी सुपासजिणंदा ॥ वा ॥ तिणकारणतीरथवडुं ॥ माहा ॥ भूमंडल प्रचंड ॥ वा ॥ १ ॥ विषमपहाड झाडीघणी ॥ मा ॥ दर्शण दुर्लभदेव ॥ वा ॥ पुन्यविनापावे नहीं ॥ म ॥ मांडवमंडनसेव ॥ वा ॥ २ ॥ तीरथमहिमा अतिघणो ॥ मा ॥ सांभलीलाभअपार ॥ वा ॥ जात्रीजनआवेघणा ॥ मा ॥ करवाभवनोपार ॥ वा ॥ ३ ॥ लाभ लेवा जाशतणो ॥ मा ॥ रतनपुरीकोसंघ ॥ वा ॥ मांडवगढ प्रतिनिकले ॥ म ॥ बहु आडंबरचंग ॥ वा ॥ ४ ॥ संघवीडुंगरसीभला ॥ मा ॥ उंसवंसभूपाल ॥ वा ॥ लुणियागोते जाणिये ॥ मा ॥ करतापरउपगार ॥ वा ॥ ५ ॥ विजयकमलसूरिजिहां ॥

मा ॥ दस मुनिकेपरिवार ॥व॥ साधवीश्रा-
वक श्रावीका ॥ मा ॥ ठाठघणो बहुसार ॥
वा ॥ ६ ॥ चउविधसंघशोभाघणी ॥ मा
॥ मुखवरणी नहींजाय ॥ वा ॥ मोतीजी-
कटारिया ॥ मा ॥ आगेवानी थाय ॥ वा
॥ ७ ॥ अनुक्रमे आविबिराजिया ॥ मा
॥ धारा नगरीकेमांय ॥ वा ॥ चैत्यजुहारी
तिहांबहु ॥ मा ॥ उलट अंगनमाय ॥
वा ॥ ७ ॥ पुरवपुन्ये आविया ॥ मा ॥
मांडवपुरकेमांय ॥ व ॥ श्री सुपासजिन
भेटिया ॥ म ॥ जेहनी शीतल छांह ॥
वा ॥ ए ॥ शशी रस निधि शशी वत्सरे
॥ मा ॥ फाल्गुनमासप्रमाण ॥ वा ॥ कर्म
वाटीयेचतुर्दशी ॥ मा ॥ कृष्णपक्षकी
जाण ॥ वा ॥१०॥ सूर्यवारेंसुखियाथया ॥
मा ॥ भेटी प्रभुकापाय ॥ वा ॥ वीरवि-
जयकहेदीजिये ॥ मा ॥ आतमहित सु-
खदाय ॥ वा ॥ ११ ॥

इति मांडवगढ स्तवन । संपूर्ण ॥

॥अथ श्रीसमेतशीखरजीनुं स्तवन॥

वसगीया वसगीया वसगीयारे मेरामनवा । मेरामनवा शीखरपर वसगीयारे ॥ मे ॥ आंकणी ॥ समेतशीखरगिरीवरकोभेटी । आनंद हृदयमें भरगीयारे ॥ मे ॥ १ ॥ धन्यघडीदिन आज हमारो । तीरथभेटी तरगियारे ॥ मे ॥ २ ॥ वीसे टुंके वीस जिनेश्वर । अजितादि प्रभुचरूगीयारे ॥ मे ॥ ३ ॥ अणशणकरके कारजअपना । योगसमाधी सें करलीया रे ॥ मे ॥ ४ ॥ अनंतवली जिनवरको जाणी । मोहराय पिण्डरगीयारे ॥ ५ ॥ करम कटण कल्याणिकभूमी । सवजिन वरजी कहगयारे ॥ मे ॥ ६ ॥ पुन्योदयसेंपाश शामला । समेत शीखरपे दरशकीयारे ॥ मे ॥ ७ ॥ वीरविजय कहे तीरथ फरसी । आतम आनंद लेलीयारे ॥ मे ॥ ८ ॥

इति संपूर्ण ॥

॥अथ श्री समेतशीखरजीनुं स्तवन॥
तीरथनी आशातनानवीकरीये॥एदेशी॥

समेतशीखरनी जातरा नित्य करिये। नित्यकरियेरे नित्यकरिये । नित्यकरिये तो डुरितनी हरिये ॥ तरिये संसार ॥ समे ॥ १ ॥ शीववधुवरवा आविया मनरंगे। विश जिनवर अतिउछरंगे । गिरीचढियाचडतेरंगे । करवानिजकाज ॥ स ॥ २ ॥ अजितादिवीश जिनेश्वरा वीशटुंके। कीधुं अणशण कीरियानचुके। ध्यानशुक्क हृदयथी न मुके। पायापदनिरवाण ॥ समे ॥ ३ ॥ शिवसुखभोगी ते थया जिनराया। ज्यांगे सादि अनंत कहाया। परपुद्गल संगछोडाया ॥ धनधन जिनराय ॥ स ॥ ४ ॥ तारणतीरथतेहथी तेकहीये। नित्यतेहनी छांया रहीये। रहियेतो सुखिया थइये बीजुं शरण न होय॥ स ॥ ५ ॥ छेगणिसेबासठ माघनी वदी-

जाणो ॥ चतुर्दशी श्रेष्ठवखाणो । हमेन्नेट्यो तीरथनोराणो । रंगेगुरुवार ॥ स ॥ ६ ॥ उत्तमतीरथ जातरा जेकरशे । वली जिन आज्ञा सीरधरशे । कहेवीरविजयतेतरसे । मंगल शीवमाल ॥ सा ॥ ७ ॥

इतिसमेतशीखरजीनुं स्तवन ॥ समाप्तं

॥ अथ समेत शीखरजीका स्तवन ॥

रहेने रहेने रहेने अलगीरहेने ॥एदेशी॥

न्नेटोन्नेटोन्नेटो नवियणन्नेटो । समेत शीखरगिरीन्नेटो ॥ न ॥ जनममरण दुःखमेटो ॥ न ॥ आंकणी ॥ मोहरायने विवरदियोजब । नाग्योदयथयो बलियो- पुरवपुन्ये आजहमारे । तीरथमेलोमलियो ॥ ना ॥ १ ॥ आजहमारे सुरतरुप्रगटो । मनना मनोरथ फलिया । समेत शीखरगि- रीवरनेन्नेटी । नवना फेराटलिया ॥ न ॥ २॥ नवोदधि तरियेपारउतरिये । तीरथकहिये

तेह। पुन्यतणा तो पोठीन्नरिये। तेहमांनही संदेह ॥ न्न ॥ ३ ॥ स्वपरिवारेवीस जिनेश्वर। समेतशिखरगिरीचढिया। कामक्रोध मदमोह निवारी। समतारसनान्नरिया ॥ न्न ॥ ४ ॥ अजितसंन्नव अन्निनंदन सुमति। पद्मप्रन्नुजी जाणो। सुपास चंद्रप्रन्नुनेसुविधि। शीतलजिनने वखाणो ॥ न्न ॥ ५ ॥ श्रिश्रेयांस विमलने अनंतजिन। धर्म जिनेश्वर कहिये। शांतिकुंथु अरजिनवरनी। न्नक्तिकरीशीव लहिये ॥ न्न ॥ ६ ॥ मल्लिनाथने मुनिसुव्रतजिन। नमिपार्श्वगुण न्नरिया। वीसेटुंकेविसजिनेश्वर। अणशण करी शीव वरिया ॥ न्न ॥ ७ ॥ वीस प्रन्नुनिरवाणथयाथी। विसकल्याणिक जाणो। पावनतीरथतेहथी कहिये। शंका मन नहीं आणो ॥ न्न ॥ ८ ॥ तीरथसेवा सद्गति आपे। कहे सिद्धांत नहीं खोटुं॥ समकी-

तशुद्ध थवानुं कारण । ए तीरथछे मोटुं ॥ ज ॥ ए ॥ जात्राकरवा शीवसुख वरवा । संघसकल हवे मलियो । स्वपरिवारे चमते जावें । लश्करथी निकलियो ॥ ज ॥ १० ॥ शेठजी नथमल्ल वाघमल्लजी । लश्कर शहेरना जाणो । गोलेछा जोगोते कहिये श्रावक श्रेष्ठ वखाणो ॥ ज ॥ ११ ॥ शेठजी नगीनचंदकपूरचंद । सुरत शहेरना कहिये । ललुनाइने दलसुखनाई । फुलचंदनाइने लहिये ॥ ज ॥ १२ ॥ नगवान सिंहजी नक्ती करता । संघसकल हवे चाले । काशी आदि तीरथकरता । समेतशीखरजी आवे ॥ ज ॥ १३ ॥ उंगणिसे बासठ माघवदीनी । चतुरदशी गुरुवारे । तीरथ नेटीजे आनंद लीधो । केवलज्ञानि ते जाणे ॥ ज ॥ १४ ॥ संघनीसहाजे हमे नलीनाते । जात्रानुं फल लीधुं । वीर-

विजय कहे आज हमारा । मननुं कारज-
सिध्युं ॥ ज ॥ १५ ॥

इति स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री महावीरजिन स्तवन ॥

माहावीर महावीर जजले तुं जाई ।
महावीरविन है न कोई सहाई ॥ मा ॥
आंकणी ॥ मानुष्य जन्मकी करले क-
माई । सिद्धारथ सुनुंबनाले तूं साई ॥ मा
॥ १ ॥ निष्कारणबंधु परमसुखदाई ।
महावीरजीकी है एही बमाई ॥ मा ॥ २ ॥
स्वारथकी तुंछोमदे मातपितजाई । ईनोसे
नहोगी तुजे कुछ जलाई ॥मा॥३॥ देखो
डुनियांकीहै कैसी सगाई । सबी लुटलेवे
ओ अपनी कमाई ॥ मा ॥ ४ ॥ छोड सब
मोहलोह डुःखदाई । शरण कर वीर विनू
मेरेजाई ॥ मा ॥ ५ ॥
इति श्री महावीरजिन स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री पावापुरी महावीर-जिन स्तवन ॥

हरलिया हरलिया हरलियारे मेरा-मनवा । मेरा मनवा महावीरजीने हर-लियारे ॥ आंकणी ॥ विचरता वीरजिने-श्वर आया । पावापुर पावन कीयारे ॥ मे ॥ १ ॥ सुरवर समोवसरणकी रचना । क-रीजक्तीमें जरगीयारे ॥ मे ॥ २ ॥ सिंहा-सनपें प्रजुजी बिराजी । देशना अमृत वरसियारे ॥ मे ॥ ३ ॥ शोलपहोर प्रजु देशना दीनी । अवसर अणशणकालीयारे ॥ मे ॥ ४ ॥ सर्वसमाधी अणशण पाली । मनवचकाया वस कीयारे ॥ मे ॥ ५ ॥ शीववधुवरिया जवोदधी तरिया । पारं-गतका पद लियारे ॥ मे ॥ ६ ॥ मोक्त क-ल्याणिक महोछवजाणी । इंद्रादिक सब मिलगीयारे ॥ मे ॥ ७ ॥ बमे ठाठसे

महोब्बकरके। नामपावापुरी कहगियारे॥ मे ॥ ८ ॥ तीरथ भेटी भवदुःख मेटी। आतम आनंद लेलियारे ॥ मे ॥ ए ॥ उंगणिसेबासठ माघशुदकी। पंचमीदिन पावन थियारे ॥ मे ॥ १० ॥ वीरविजय कहे वीर जिणंदका दर्शण बिन हम रहगयारे ॥ मे ॥ ११ ॥

इति संपूर्णं ॥

॥ अथ कलकत्ता मंडन महावीर स्तवन ॥

रानी त्रिशलादे नंदारे वीर जिणंदा। सिद्धारथ कुलनभचंदा रे सुखकोरेकंदा ॥ आंकणी ॥ जब जन्मे जिनवरराया। छपन कुमरि हुलराया। हरीहरषधरी तब आयारे ॥ वीर ॥ रानी ॥ १ ॥ हरी पंचरूप बनजावे। प्रज्ञुमेरुशीखरपेल्यावे। करेजनममहोब्बभावेरे ॥ वीर ॥ रानी ॥२॥

अभिषेककलस करधारी । करेप्रभुनवणकी त्यारी । हरीशंकादिलमे धारीरे ॥ वी ॥ रानी ॥ ३ ॥ प्रभु जनमतहीहैं नाणी । मनशंकाशक्रकी जाणी । तबमेरुकंपायो ताणीरे ॥ वी ॥ रा ॥ ४ ॥ चमके सबसुरवरराया । शंकामन दुर कराया । करी महोछव आनंद पायारे ॥ वी ॥ रा ॥ ५ ॥ धन्य वीर जिनेश्वर स्वामी । तुं बालपणे भये नामी । तुमगुणमेको नहीं खामीरे ॥ वीर ॥ रा ॥ ६ ॥ कलकत्ता मंरुन राया । बैठे प्रभु ध्यान लगाया । में दर्शबगिच्चेपायारे ॥ वीर ॥ ७ ॥ ऊंगणिसें-त्रेशठ भाया । कार्त्तिक पुनमदिन आया । एमवीरविजय गुणगायारे ॥ वीर ॥ रा ॥८॥

॥ अथ आगरा मंडन चिंतामणस्तवनं

राग कनडाशियाना ॥

चिंतामणजी पास मोहे प्यारा ॥ मन-

वंछित के पुरण हारा । नाम मंत्र जपलो एकवारा । कठिनकरमके चुरनहारा ॥ चिं ॥ १ ॥ अरज एक प्रभुजीसें मोरी । सेवाचाहुं मे भवभव तोरी । लक्ष चौरासी रुलतामे आया । पुरवपुन्ये चिंतामणि पाया ॥ चिं ॥ २ ॥ और देवनकी सेवा मे कीनी । पापकी गठडीमें सीरलीनी । कहो-रे न मान्यो कुमति वसकिसको । प्यालो न पीयो अमृत रसको ॥ चिं ॥ ३ ॥ औ-रदेवनकुं कबहुनमानुं । सचापास चिंता-मणि जानुं । प्रभुके चरण शरण करलीनी । और देवनकुं जलांजलीदिनी ॥ चिं ॥ ॥ ४ ॥ आगरा मंडन सबदुःख खंडन । पास चिंतामणि शीतल चंदन । वीरवि-जय कहे तपत बुझावो । नाम जगतमें हेतु मचावो ॥ चिं ॥ ५ ॥ जुगरसनिधि इंदुवत्सरमें । मासभाद्रपद शुक्लपक्षमें । दिन संवछरी का जब आया । चिंतामणी

पास गुन गाया ॥ चिं ॥६॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री अंबाला मंडन श्री सुपास जिन स्तवन ॥

क्युं नहो सुनाई स्वामी । ऐसा गुना-क्या कीया ॥ आंकणी ॥ औरोंकी सुनाई जावे । मेरीवारी नाहीं आवे । तुमविन-कौन मेरा मुजे क्युं भुलादिया ॥ क्युं ॥१॥ भक्तजनो तारदीया तारवेका कामकीया । विनभक्ती वाला मोपें । पक्षपात क्युं लिया ॥ क्युं ॥ २ ॥ राव रंक एक जानो। मेरातेरा नाहीं मानो । तरन तारन ऐसा। विरुदधार क्युं लिया ॥ क्युं॥ ३ ॥ गुनामे रावक्षदिजे। मोपे एति रहेम कीजे । प-काही भरोंसा तेरा । दिलोमें जमालिया ॥ क्युं॥४॥ तुंही एक अंतर जामी । सुनो श्री सुपास स्वामी । अवतो आशा पुरो मेरी । कहेना सो तो केदीया ॥ क्युं ॥ ५ ॥

शहेर अंबाले भेटी । प्रभुजीका मुख देखी । मानुष्य जनमका लाहा । लेनासो तो लेलीया ॥ क्युं ॥ ६ ॥ उन्निसो साठठ बविला । दीपमाल दिनरंगिला ॥ कहे वीर-विजे प्रभु । भक्तीमें जगादिया ॥ ७ ॥

॥ इति संपूर्ण ॥

॥ श्री चंपामंडन वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

चंपा मंडन सुखदाया । श्री वासुपूज्य जिनराया ॥ आंकणी ॥ प्रभु जयादेवी के जाया । वसु रायके वंसदीपाया । मिल चौसठ इंद्रे गाया । में पुन्ये दरिसण पाया ॥ श्री ॥ १ ॥ प्रभु पंचकल्याणिक जाया । च्युति जन्म वैराग्य भराया । वरनाण परमपद पाया । मंगलचंपामें ग वाया ॥ श्री ॥ २ ॥ कल्याणिक भूमि जाणी । तिरथमें चंपा गवाणी । नगरीमें

बनगई राणी । ए महावीरकी वाणी ॥ श्री ॥ ३ ॥ तीरथकी महिमा जाणी । संघयात्रा करे गुणखाणी । भूमंगल महिमा गवाणी । तीरथ भेटो भवी प्राणी ॥ श्री ॥ ४ ॥ यात्रा करनेकुं आवे । देस-पूरवसें संघ ल्यावे । ताकी सोभा कहुं में भावें । सुणतां श्रद्धा चित्त आवे ॥ श्री ॥ ५ ॥ शहेर मुर्शिदाबाद कहाया । जिहां वसे धनपतसिंहराया । राणी मेना कुमरी जाया । सुत माहाराज बाहादुर राया ॥ श्री ॥ ६ ॥ मंत्रि बुद्धीके बलिया । गोपीचंद बाबु मलिया । हुल्लास बाबु मति जागी । संघभक्ती करे वडभागी ॥ श्री ॥ ७ ॥ यात्राकी मरजी कीनी । तब गुरुसें आज्ञा लिनी । संघपति तिलक पदलीया । सूरि विजय कमलने दीया ॥ श्री ॥ ८ ॥ संघवीकी सोभाभारी । संघ-वण कस्तुर कुमारी । हे पुन्यकी खुबी-

न्यारी । चमके सकल नरनारी ॥ श्री ॥ ए ॥ भेरी भंभा वजडावे । तब संघसकल मिल आवे। गौरी मंगल गवरावे। सबजन चडते भावे ॥ श्री॥ १० ॥ ठंगणिसें त्रेसठ जाणो । मगसर शुदि नवमी वखाणो । शनिवारने सिद्धी जोगे । संघ निकसे सुखसंजोगे ॥ श्री ॥ ११ ॥ सपादशत शकटानी । हस्तिघोडे गुलतानी । शेठ साहुकारने पाला । संघलोक घणा मसराला ॥ श्री ॥ १२ ॥ सूरि विजय कमल गुणदरिया । एकादस मुनिपरिवरिया । उपदेस करे गुणरागी । जाके धरम वासना जागी ॥ श्री ॥ १३ ॥ है चैत्य प्रभुकासंगे । संघ दरिसण करे मनरंगे । ऐसी विध संघकी जाणो । फेर नहीं मिले एहवो टाणो ॥ श्री ॥ १४ ॥ अनुक्रमे चंपामे आया । ठंगणिसे त्रेसठ भाया । पोसवदि एकादशी लीधी । बुद्ध-

वारे यात्रा कीधी ॥ श्री ॥ १५ ॥ यात्रा करी आनंद लीया । नरभव बहुसफला कीया । आतम आनंद रसलीया । कहे-वीर विजय भरपीया ॥ श्री ॥ १६ ॥

इति संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीहस्तिनापुरस्तवन ॥

राग पीलु ॥ चलोरी चलो तुम चरूते रंगे । तीरथ जात्रा करो मन रंगे । ती-रथ जात्रा जिनवर भांखी । इन बात-नमे शास्त्र हे शाखी ॥ च ॥ १ ॥ जिनवर कल्याणिक जिहां थावे । तीर्थंकर तीरथ फरमावे । जैन तीरथकी महिमा भारी । सबजिवनकुं हे हितकारी ॥ च ॥ २ ॥ हथिणापुरमे हरष घनेरा । द्वादश क-ल्याणिक हे भलेरा । शांति कुंथु अरजि-नवर केरां । दरश करनसें कटे भवफेरा ॥ च ॥ ३ ॥ तीरथ जात्रा विधिशुं कीजे

मनुष्य जनमका लाहालीजे। धरम करनमे देरी न कीजे। अमृत रससोही झटपटपीजे ॥ च ॥ ४ ॥ ए तीरथकी महिमा भारी। सुनके संघने किनी त्यारी। शहेर अंबालासें संघ चलियो। मनमोहन मानु मेलो मलियो ॥ च ॥ ५ ॥ श्रावक जन सब संघकी सेवा। करता भक्ती शीवसुख लेवा। अनुक्रमे हथिणापुरमे आया। धवल मंगल आनंद वरताया ॥ च ॥ ६ ॥ इक्षुरस निधि इंदुवत्सरमे। चैत मास के कृष्णपक्षमे। करम वाटी-पंचमी दिन आया। जात्रा करी सब आनंद पाया ॥ च ॥ ७ ॥ तीरथ सेवा नित्य नित्य कीजे। फेर संसार मे नाही भमीजे। वीरविजय कहे सुकृत कीजे। आतम आनंद मुजको दीजे ॥ च ॥ ८ ॥

॥ इति हस्तिनापुर स्तवन संपूर्ण ॥

॥ अथ श्रीवीकानेर मंडन ऋषभ जिन स्तवन ॥

तुम चिदघन चंद आनंद लाल ॥ ए देशी ॥

तुम आदि जिनंद मारु देवानंद । अब शरण लही प्रभु थारी ॥ आंकणी ॥ प्रथम नरेश्वर प्रथमं जिनेश्वर ॥ प्रथम भये उपगारी मोरा स्वामी ॥ तु ॥१॥ लोक धरम मरजादाकारी ॥ जुगलां धरम निवारी । मोरा ॥ २ ॥ संजमधारी वरसविन आहारी । विचस्या उग्र विहारी । मोरा ॥ तु ॥ ३॥ परिसह फोजकुं वेग विडारी । ज्ञान खडग करधारी ॥ तु ॥ ४ ॥ शुद्ध उपयोगी अद्भुत जोगी । विषय वासना वारी ॥ मोरा ॥ तु ॥ ५ ॥ अष्टापदपें आसनधारी । वरिया सदाशीव नारी ॥ मोरा ॥ तु ॥ ६ ॥ प्रभुकी महीमा मुखसें कहिवा । जिभ्भरूली गई हारी ॥ मोरा

॥ ७ ॥ वीकानेरमे आदि जिनंदकी । मूरतिमोहन गारी ॥ मोरा ॥ तु ॥८॥ वीरविजय कहे प्रभुजी भेटी । डुरगती डुःख निवारी ॥ मोरा ॥ तु ॥ ए ॥

इति संपूर्ण ॥

॥ वीकानेर समोवसरणका स्तवन ॥

अपने पदको तज कर चेतन ॥ ए देशी ॥

देखो प्रभुका अजब महोछव । कैसा ठाठ जमाया है । वीकानेरमें संघ सकल मिल समोवसरण विरचायाहै ॥ १ ॥ क्या कहुं मंरूपकी शोभा । कहे बिन कोउ न रहेता है । देवलोकका एक निशाना । देखन वाला कहेता है ॥ दे ॥ २ ॥ चौमुख समोवसरणमें सोहै । जिनवर मुज मन भाया है । दरिशण बाहाने देखो प्रभुकुं । कैसा ध्यान लगाया है ॥ दे ॥ ३ ॥ चामर छत्र सिंहासन

सो है । ऊगमग ज्योतिसवाया है । देख देखके प्रज्ञु दरिशणकुं । नगरलोक सब आया है ॥ दे ॥४॥ अजितनाथ प्रज्ञुकी महिमाका । चमतकार ए पाया है । वी-कानेरमें आज अनोपम । धवल मंगल वरताया है ॥ दे ॥ ५ ॥ गानतान सबसाज मानसें । ज्ञेरी नाद बजऊाया है ॥ तन मन धनसें उब्वकरके । संघसकलहरखाया है ॥ दे ॥ ६ ॥ सपरिवारे विजय कमलसू-रि । चतुर मास जब आया है । वीका-नेरमें उब्व महोब्व । अधिक अधिक ऊलकाया है ॥ दे ॥ ७ ॥ उंगणिसें स-डसठ आशो शुदकी । पूर्णमासी दिन आया है । वीरविजय कहे प्रज्ञु दरिश-णसें । आतम आनंद पाया है ॥ दे ॥ ७ ॥

॥ इति संपूर्ण ॥

॥ अथ उंसिया नगरी वीर जिन स्तवन ॥

ए अरजी मोरी सैयां ॥ ए देशी ॥

माहावीरजी मुजरो लीजे । सेवक कुं शरणा दीजे माहा ॥ आंकणी ॥ तुं निष्कारण उपगारी । चंदनवालाकुं तारी । ऐसी नजर प्रभु कीजे । सेवककुं शरणा-दीजे ॥ १ ॥ चंडकोसियो करमसें भारी । कीयो स्वर्ग तणो अधिकारी । युं बांह पकडकर लीजें ॥ सेव ॥ २ ॥ संगमपें कुरुणाकीनी । उपसर्गमें दृष्टी न दिनी । प्रभुतारिफ केती कीजे ॥ सेव ॥ ३ ॥ तुं उंसिया मंडन स्वामी । पून्ये प्रभु दरिशणपामी । कहे वीरविजय संग लीजे । सेवककुं शरणा दीजे ॥ ४ ॥

इति समाप्तं ॥

॥ अथ जेसलमेर जिन स्तवन ॥

॥ जिनराज वधावो रे माणक मो-
तिहीरा लालसुं ॥ ए देशी ॥

॥ जेसलमेर जावोरे जात्राकरण नवी
नावसुं ॥ जीनराज जुहारोरे नाव नगती
वहु मानसुं ॥ आंकणी ॥ जेसलमेरमे
जिनवर केरा चैत्य अनेक नलेरा ॥ चैत्य
चैत्यमें सुंदर शोन्ने अरिहंत बिंब घनेरा-
जी ॥ जे ॥ १ ॥ जैन तीरथ जेसलमेर
जाणी । सरधा दिलमें आणी । देश दे-
शके जात्रा आवे । पुन्यवंत बहु प्रा-
णीजी ॥ जे ॥ २ ॥ उंगणिसें सडसठ म-
गसर शुदकी । एकादशी सोमवारे ।
जी ॥ बीकानेरसें संघनिकलियो सरवकुटुंब
परिवार ॥ जे ॥ ३ ॥ चमते रंगे अति उब
रंगे । संघ चतुर विध चाले । सपरिवारे
विजय कमल सूरि । धरम देशना आलेजी
॥ जे ॥ ४ ॥ संघवी श्रीचंद शेठ सुराणा।

संघवी पद हे पूराणा । जेलसमेरकी जात्रा जातां । आनंद हरष नराणाजी ॥ जे ॥ ५ ॥ विकट पंथने विकट उजाडी। क्या कहुं उनकी कहाणी । कांटा ना-हारुट झांखरां । पूरण न मले पाणी जी ॥ जे ॥ ६ ॥ ठामठाम में गाम न आवे । जो आवे तो ढाणी । संघ मुकाम करे जंगलमें । डेरा तंबूताणी जी ॥ ७ ॥ दि-नरात रस्तामें पेहेरा । देता चौंकीवाला । डाढी मुंछाने मसराला । हाथमे बंधूक नाला जी ॥ जे ॥ ८ ॥ अनुक्रमे कठिण पंथ उलंघी विघन रहित सब जावे । पो करणफलोधी जात्रा करके । जेसलमेर-में आवेजी ॥ जे ॥ ए ॥ उंगणिसे सरू-सठ पोषशुदकी दशमी मंगलवारे । जे-सलमेरमें जिनवर नेटा । आनंद मंगला च्यारेजी ॥ जे ॥ १० ॥ तनमन धनसें जात्रा कीजे नरजव लाहो लिजे । वा-

रवार अवसर नहीं आवे । सदगुरुसें सु-
णिजे जी ॥ जे ॥ ११ ॥ करमरायने वि-
वरदीयो जब भाग्योदय भया बलिया ।
वीरविजय कहे आज हमारे मनका मनो
रथ फलियाजी ॥ जे ॥ १२ ॥

इति जेसलमेर स्तवन समाप्तं ॥

॥ अथ नेमराजुलसंबंधी पद ॥

॥ राग पंजाबीठेगो ॥

पीया कारण गढगीरनार चली । रा-
णी राजमति व्रतचित धरी ॥ पी ॥ १ ॥
अधिक प्रीत रसरीत जानके । नेमपिया
करसीरधरी ॥ २ ॥ तप जप संजम ध्या-
नानलसे । करम इंधन परजाल चली ॥
पी ॥ ३ ॥ नेमराजुलकी प्रीत पुराणी ॥
अंतमे ज्योतीसें ज्योतमीली ॥ पी ॥ ४ ॥
प्रह उगमते दंपती नामे । वीरविजय म-
न रंगरली ॥ पी ॥ ५ ॥

इति संपूर्ण ॥

॥ अथ नेम राजुलसंबंधी पद ॥

मोरे मंदिरवा प्रजुजी न आये । नाये ऐसो जडुपति रथ फीराये ना हाथ मिलाये ॥ मो ॥ आंकणी ॥ पशुवनपें प्रजु करुणा कीनी क्या तकसीर मेनुंबरू दीनी ॥ मो ॥ १ ॥ नव नव केरी प्रीत जो तोरी । सोकनसीव वधुसें दिलजोरी ॥ मो ॥ २ ॥ राजुल राग द्वेषको गोरी । संयम लेइ करम बंध तोरी ॥ मो ॥ ३ ॥ मनमान्यो मोक्ष सुख पाई । वीरविजय कहे धन्य कमाई ॥ मो ॥ ४ ॥

इति संपूर्ण ॥

॥ अथ नेमराजुल पद ॥

मालकोश ॥ मेनुं बरूके गिरनारी गये मेरे सांही । में जुली नहीं जब पकडती दोंबांही ॥ मे ॥ १ ॥ था दिलों में दगा तब क्युं कीनी सगाई । मालिक मेने

कीनी क्या ऐसी बुराई ॥ मे ॥ २ ॥ झूठी हैं बुरी है दुनियांकी सगाई। वैराग्यलियो है गिरनारीपें जाइ ॥ मे ॥ ३ ॥ वन्मा तप करके मोक्ष पदपाइ। कहे वीर विजय धन्य उनकी कमाई ॥ मे ॥ ४ ॥

इति संपूर्ण ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

राग सारंग। घट जागी ज्ञान वैराग्यरी। तुम छंमो माया जालरी ॥ घट ॥ ॥ आंकणी ॥ एक सहस्त्र अंतेउर जाके रूप रुपके आगरी। मिथिला राज्य छोडके निकसे। राज रुषी नमि रायरी ॥ घ ॥ ॥ १ ॥ रूपकी संपद सुरपति बरनी। चक्रि सनतकुमाररी। छिनमे रोगन्नये निज तनमे। देखो कर्मकथा बरी ॥ घ ॥ ॥ २ ॥ देखत देखत सवही विनसत। तनधन अथिर स्वन्नावरी। ऐसी न्नावना

नावतही मन । गेरुलियो वैराग्यरी ॥ घ ॥
॥३॥ सचा त्याग किये बिन कबहु । पावत
नहीं नवपाररी । परपरणितीत्यागो चे-
तन । वीर वचन चित्त धाररी ॥ घ ॥ ४ ॥

इति समाप्तं ॥

॥ अथ मुनिगुण सझाय ॥

हां देखो मुनिवर ममता मारी
नये पंच महाव्रत धारीरे ॥ हां ॥ देखो
॥ आंकणी ॥ हिंसा जुठ चोरी ने वारी ।
ब्रह्मचर्य व्रत धारीरे । बाह्याभ्यंतर ग्रंथी
निवारी । जोग तरसना गारीरे ॥ हांदे ॥१॥
तपशोषित तनु कृशधारी । जगजन आ-
नंद कारीरे । पूजक नंदक दो शम कारी ।
नजते उग्र विहारीरे ॥ हांदे ॥ २ ॥ राग
द्वेषकी परणिती वारी । परिसह फोजकुं
डारीरे । गुणश्रेणि गुण स्थानक धारी ।

ध्यानारूढ भयवारीरे ॥ हांदे ॥ ३ ॥ शोक संतापको डुर निवारी । एकमग-नता धारीरे । ढिनमे निज आतमको तारी । भजते भवदधी पारीरे ॥ हांदे ॥ ४ ॥ ऐसे मुनिवर हे व्रतधारी । आतम आनंद कारीरे । वीर विजय कहे हुं वल-हारी नमुं नमुं सोसो वारीरे ॥ हांदे॥५॥

इति समाप्तं ॥

॥ गुरुदेवकी सद्धाय ॥

रेखता ॥ विजे आनंद सूरि राया । पुरवले पुन्यसें पाया । चतुरविध संघमें धोरी । गुरुजीसें वंदना मोरी ॥ १ ॥ गुणषट्त्रिंशके धरता । अहो उपगारके करता। धरमकी टेकहे भारी। गुरु है बाल ब्रह्मचारी ॥ वि ॥ २ ॥ गुरुजी ज्ञानके धरता । कुमतके मानको हरता । देखके वादी सव मरता ॥ न सनमुख पेरको

धरता ॥ ३ ॥ शीतलता चंद्रमा जैसी मेरु सम धीरता ऐसी ॥ सायरं गंभीर नहीं ऐसा ॥ गुरु गंभीर है जैसा ॥ ४ ॥ कंचन और काच सम माने ॥ नारीको नागणी जाने ॥ अंतरगत मोह सबटारी ॥ गुरु उदासीनता धारी ॥ ५ ॥ ऐसे गुरु-राज जी केरा ॥ चरणमें चितहे मेरा ॥ सेवक कहे वीर कर जोडी ॥ लंघावो पार मुज बेरी ॥ विजे ॥ ६ ॥

इति समाप्त ॥

॥ अथ करमविपाक सझाय ॥

अरूल छंद ॥ श्री गुरुविजयानंद चं-दवंदन करी ॥ सुनो करमकी बात कहु गुरुसें लही ॥ सब दुःख देवनहार करम दुष्कृत तजो ॥ शाशनके सिरदार श्री वीर चरण भजो ॥ १ ॥ तीर्थंकरबल चक्री हरी नृप जे थया ॥ कर्मतणे वस

तेह सवी संकट लीया ॥ आदीसर अरि-
हंत संत अनंत बली ॥ एक वरसविन
आहार जुख तरिषा सही ॥ २ ॥
विप्र घरे अवतार वीर विभूने लीया ॥
करम न छोडे लिगार पुरवजो मद कीया
चक्री सनतकुमार रोग बहुला लही ।
करमतणी गत जाय कहो ते किम कही
॥ ३ ॥ लक्ष्मण राजन रामचंद्र सीता स-
ती । बार वरस वनवास दुष्ट करमगती ।
द्वारावती जयी दाहसें कृष्ण जादवपति ।
लंकाभ्रष्ट लंकेश करमगत नहीं मिटी
॥ ४ ॥ पांडुराय के पुत्र पंच पांडव ज-
ला । हारी द्रुपदी नार प्रगट खेडी जु-
वा । बार वरस वनवास दास पणे ते र-
ही । करम न करशो कोई बात प्रजुने
कही ॥ ५ ॥ सती सुजद्रा नारदूजी
अंजना सती । करम तणे परजाव
कलंक चडो अति ॥ चारों चौटाविच

बिकी चंदनासती ॥ करम विना कहो कौन करे ऐसी गती ॥ ६ ॥ राजा हरिचंद निचघरे नोकरी करे ॥ राणी सुतारा-निच घरे पानीजरे ॥ सतवादी सीरदार-दोनुने डुःख लह्युं ॥ करम मरम सब जाण जो सिद्धांते कह्युं ॥ ७ ॥ ऐसें करम विपाक देखी जवसें मरो । डुखके देव-नहार करम कोईना करो । ए उपदेस है लेश जवी जो चितधरे । वीरविजय कहे तेह जवी जवजल तरे ॥ ८ ॥ संवत् उंगनिसे साल तेवंजामन रली । आसो शुदिकी त्रिज तिथी जयी निरमली । नगर स्यापुर विच चौमासुं रही करी । करम कथा कही एह सुनो सब दिलधरी

इति कर्मोपरि सझाय ॥ समाप्तं ॥

॥ अथ त्याग सझाय ॥

तुम गेको जगतके यारा इनसें नहीं

होनिस्तारा ॥ आंकणी ॥ धन कण कंचनकीकोडी । सवरिद्धी जगतकी जोमी । गये बडे बडे सब छोमी । सुत मात तात अरु भ्रात जगतके ठाठ अंतमें न्यारा ॥ इन ॥ १ ॥ ए डुनियां डुखकी खानी । जिहांराग द्वेषहे पानी । ए महावीर की वानी । हेखुरक स्वादकास्वाद नहीं आवाद वडा डुख भारा ॥ इन ॥ २ ॥ बमोह पास गलेडारा । प्रभु नाम पकमले प्यारा । करले गुरु ज्ञान विचारा । एसो बातनकी बात रहेगी लाज सवी सुख सारा ॥ इन ॥ ३ ॥ वैराग्यकी बातां दाखी विषयोंमें म करो फांखी । कहेवीर विजयमें शाखी है सब डुखोंका मूल नहीं अनुकूल बडो मेरे प्यारा ॥ इन ॥ ४ ॥

इति । सजाय । समाप्तं ॥

॥ अथ नेमराजुल सझाय ॥

तूं छडदे स्वामी सीव शोकनको संग ॥ आंकणी ॥ बहोत बरातसें व्याहन आये । ते अब क्युं पावत भंगरे ॥ तुं ॥ १ ॥ सती व्रत धारीमें बाल कुमारी । ते करले मुजसु रंगरे ॥ तुं ॥ २ ॥ शीवरमणीकी कुन्नी हे करणी । ते परणी सिद्ध अनंतरे ॥ तुं ॥ ३ ॥ कामणगारी दुख देन हारी । ते करती रंगमें भंगरे ॥ तुं ॥ ४ ॥ मोरुन मतियां तोहमरी क्या गतियां छतियां होत हे भंगरे ॥ तुं ॥ ५ ॥ विनती न धारी चली गिरनारी राजुल नेमी संगरे ॥ तुं ॥ ६ ॥ वीरविजय कहे नेम ने राजुल। पाये सुख अभंगरे ॥तुं॥७

इति समाप्त ॥

॥ अथ गुहुली ॥

सेवो भवियण जिन त्रेवीसमोरे ॥ ए देशी

गुरु मारा गाम नगर पुर विचरंता रे ।

बहु शिष्य ने परिवार । ज्ञान अमृत जले करी सींचतारे । हिंसता नविक कमल संघाता । हुं बलहारी ए गुरुराजनीरे ॥ आंकणी ॥ १ ॥ अवसर क्षेत्र फरसना करीरे । पालीताणा नगर मोझार । सिद्धक्षेत्र सिद्धाचल नेटवारे । आव्या आतमराम अणगार ॥ हुं ॥ २ ॥ पंच समति तिन गुप्ति बिराजतारे । धरता धरमतणुं एक ध्यान । हरता मोह दशा महा फंदनेरे । करता ज्ञान ध्यान एक तान ॥ हुं ॥ ३ ॥ पंचम कालमे कुगुरु सोहलारे । दोहला सुगुरु तणा देदार । पामी नव्य जीव तुमे सांनलोरे । नगवती सूत्रतणो अधिकार ॥ हुं ॥ ४ ॥ चातकने मन जलधर चाहनारे । कामनीने मन कंथनी चाह । तेम मारा गुरुजीनी वाणी उपरेरे । श्रोता जननी प्रिती अथाह ॥ हुं ॥ ५ ॥ गुण वती सहीयर सब टोले मलीरे । आवती गुरुजीने

दरबार । चउगती चूरण साथियो पुरतारे । गावता गुंहली गीत रसाल ॥ हुं ॥ ६ ॥ गुरुजीना चरणकमलनी उपरेरे । नमरपरे मुनिगणनो वृंद । लेता सद्गुण रुपी वासनारे । देता वीरविजयने आणंद ॥ हुं ॥ ७ ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ गुहली ॥

सुनोरे सखी एक वीनतीरे । आज आनंद अपार चालो वंदन चलिये ॥ आंकणी ॥ गाम नगर पुर विचरंतारे । बहु शिष्यने परिवार ॥ चा ॥ १ ॥ अनुक्रमे आवी बिराजीयारे । राजनगर के मोझार ॥ च ॥ आतमराम आनंदविजेजी । अनुपम नाम रसाल ॥ च ॥ २ ॥ पठन करावता शिष्यनेरे । ज्ञान ध्यान एकतान ॥ चा ॥ ज्ञानक्रिया करी शोनतारे । ए गुरु गुण मणीमाल ॥ चा ॥ ३ ॥ मधुरी दिये गुरु देशनारे । नव नय नं-

जणहार ॥ चा ॥ सुणतां समकित उप-
जेरे । मिथ्या तिमिर विनाश ॥ चा ॥४॥
संघ सकल आग्रह करी रे । विनती करे
मनोहार ॥ चा ॥ नव्य जिव प्रतिबोध-
वारे । गुरुजी करे चौमास ॥ च ॥ ५ ॥
संघ सकल हवे आदरेरे । जिन नक्ती
बहुमान ॥ चा ॥ नवनवी पूजा प्रनाव-
नारे अहाई महोत्व ठाठ ॥ चा ॥ ६ ॥
समकीत नीरमलजेहथीरे । तेह तणा
बहुमान ॥ चा ॥ उत्व रंग वधामणारे ।
वर्त्या छे जय जयकार ॥७॥ सहीयर सवी
टोले मलीरे ॥ आवे गुरु दरबार ॥ चा ॥
चहुं गती चुरण साथीयोरे । करती गुरुने
पाय ॥ चा ॥ ८ ॥ गुणवती गावे घौवलीरे
नाव नले उदार ॥ चा ॥ राजनगरमें हुईर-
हारे । आनंद मंगल ठाठ ॥ चा ॥ ए ॥
उत्तम गुरु गुण गावंतारे । नांगे नवनी
पास ॥ च ॥ वीरविजय मुनि हुई रहारे ।

आतम लक्ष्मीके दास ॥ चा ॥ १० ॥
इती गुहली समाप्त ॥

॥ अथ गुरु गुण गुंहली ॥

झिणा झरमर वरसे मेह भिंजे मारी सुंदरूली ॥ ए देशी ॥ सखी अंतरगतनी वात सुण सोभागीरे । गुरु गुणगावाने आज मुने रढ लागीरे ॥ आंकणी ॥ धन गुरु दाता ने धन गुरुदेवा । विजय आनंद-सूरि रायरे । धन तेहना परिवारनेरे कांई । लली लली लागुं पाय गुरु उपगारीरे । देइ शुद्ध धरम उपदेशडुनियां तारिरे । सखी ॥ १ ॥ पंचमहाव्रतलही करिरे । पामी गुरु आदेसरे । पंजाबदेश-पावन कीयो गुरु । पुरी मननीटेक पुरण प्रीतेंरे । कीयो ढुंढकनो उछेद आगमरीतेरे ॥ सखी ॥ २ ॥ मरुधर मालव देश मांरे । मुनि मंम्लनी साथरे । मधुरी वाणीये गाजतारे कांइ । करता बहु उप-

गार आतम हेतेरे। गुरु षट् कायक प्रति
पाल संजम लेखेरे ॥ सखी ॥३॥ ज्ञानि
गुरुजीना ज्ञानथीरे। गुण पर मतमें थायरे।
राणीजीना राजथीरे कांइ पुस्तक नेटणुं
आय गुरुने संगेरे। थयो महीमा धरमनो
जेह चरुते रंगेरे॥ स० ॥ ४ ॥ गुणवाली
गुजरातमांरे। ग्राम नगर पुरजेहरे। गुरुजी
हमारे गुण बहु कीधो। दीधो धरम उप-
देश सांजली बुजारे केइ नव्य जीवनाथोक
संजम लीधारे ॥ स० ॥ ५ ॥ सद्गुरु सिद्धा
चलजी नेटी । जनमनोलाहोलीधरे।
संघचतुरविध मली करीरे सूरि पदवी
दीध गुरुजीने रंगेरे। उंगणिसें बेतालीस
अधिक उमंगेरे ॥ स० ॥ ६ ॥ एम अनेक
गुण गुरुजीकेरा कहेतां नावे पाररे। पंचमे
आरे परगट करता गुरुजी बहु उपगार
एहनेसेवोरे। ए गुरुजीनो संयोग मोक्षनो
मेवोरे ॥ सा ॥ ७ ॥ दरनावतीमें रही
चौमासुं उंगणिसें हेतालीसरे। वीरविजय

कहे सेविये रे कांई । ए गुरु विसवा वी-
समनने नावेंरे । कांई ए संसारनुं डुख
फेरनहीं आवेरे ॥स॥ ठ॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ गुंहली ॥

लघुवय जोग लीयोरे ॥ ए देशी ॥
विजयानंदसूरिरायनांरे । केतां करुरे
वखाण गुरुजीये ज्ञान दियोरे। नव्य जीव-
प्रतिबोधवारे । मानु उग्योनाण अघत-
म दूर कीयोरे ॥ गु ॥ १ ॥ पंचमहाव्रत
पालतारे मालता निजगुण मांहि ॥ गु ॥
परपदारथजालमांरे गुरुजी पेसतानाहि
॥ गु ॥२॥ अध्यातमरसझीलतारे पीलत-
पापकरंरु ॥ गु ॥ अनुनवज्ञानथी जाणा
तारे मोह दशामहाफंद ॥ गु ॥ ३ ॥ अशुन
योग निवारतारे करता करम निकंद॥गु॥
स्वपर सतानावतारे। चैतन्य जरुनो संग
॥ गु ॥ ४ ॥ वस्तुस्वनाव निहालतारे ।
एक अनेकनो रंग । नित्यानित्य विचा-

रता रे । नेदानेदनो नंग ॥ गु ॥ ५ ॥ तत्वातत्वने खोजतारे । खेंचता निज सुख-चंग ॥ गु ॥ ज्ञानक्रियारस ऊिलतारे । मनमे धरिय उमंग ॥ गु ॥ ६ ॥ करी उपगार नूमंमलेरे । लीधो लान्न अनंग ॥ गु ॥ आपतस्या पर तारिनेरे । स्वर्गिथ-या सुख कंद ॥ गु ॥ ७ ॥ पुन्यसंयोगे पामीये रे । एहवा गुरुनो संग ॥ गु ॥ वीरविजय कहे गुरु तणोरे । रहेजो अविचल रंग ॥ गु ॥ ८ ॥ इति समाप्त ॥

अथ गुहली ॥

कंगना खुलदानही महाराय ॥ एचाली ॥ विजयानंदसूरि महाराय । जिनके नामसें मंगल थाय । वि ॥ आंकणी ॥ समता सागरके विसरामी । कंचनका-मनिके नहीं कामी । नामी सब डुनि-यांमे थाय ॥ वि ॥ १ ॥ संजम मारगमे वहुरागी । ढोरूपरिग्रह नये वैरागी ॥

त्यागी जगमें नाम धराय ॥ वि ॥ २ ॥ सब कुपंथ त्याग करदीया । अपना जनम सफल करलीया । पूजो ऐसें गुरुके पाय ॥ वि ॥ ३ ॥ सत उपदेशही सबको दीया । सत मारगसो थापन कीया । ऐसे जग उपगारी थाय ॥ वि ॥ ४ ॥ चलो सखी दरिशनको जावें । देख वदन आनंद नर पावें ऐसे नहीं कोई राणे राय ॥ वि ॥ ५ ॥ सखियां मिल आनंद भरपूरें । गुरुचरणोमें गुहली पुरे । आनंदवीर विजयको थाय ॥ वि ॥ ६ ॥

इति समाप्त ॥

॥अथ श्री गौतम स्वामीकी गुहली॥

प्रथमजिनेश्वर मरुदेवी नंदा ॥ एदेशी ॥

गौतम स्वामी शीवसुख कामी । गुण गाउं सीर नामीरे ॥ गुरु गौतमस्वामी ॥ ए आंकणी ॥ जीव सत्ताका संशय पडिया । वीरचरण जई अडियारे ॥ गु ॥ १ ॥

हुवागणधारी शंका निवारी । प्रभुजीये त्रिपदी आलीरे ॥ गुरु ॥ २ ॥ चौद पूरवकी रचना कीनी । जगजश कीरती लीनीरे ॥ गु ॥ ३ ॥ लब्धिबलिया अष्टापदचढिया । वीरवचन रसभरियारे॥गु॥४॥ गुरुजी जात्रा करके वलिया। पन्नरसें तापस मलियारे ॥ गु ॥ ५ ॥ संजम लेवाविनती कीनी । गुरुजीयें दिक्षादिनीरे ॥ गु ॥ ६ ॥ वीर प्रभुका दरिशण चलिया । केवल लक्ष्मी वरियारे ॥ गु ॥ ७ ॥ एम अनेक शिष्यकुं तारी। ए गुरुकी बलहारीरे॥गु॥८॥ सखियां सघली गुहली गावे। गौतम स्वामीकी भावें रे॥ गु ॥९॥ वीर प्रभुका राग निवारी आतम एकता धारीरे॥ गु ॥१०॥ केवल पाइ मोक्षपद पाया। पृथवीमाताका जायारे ॥गु॥११॥ ओगणीसें सरूसठ संवत् पाया । दीवाली दिन आयारे ॥ गु॥१२॥ वीरविजय गौतम गुण गाया । वीकानेर जब आयारे ॥ गु ॥१३॥ इति समाप्त ॥

॥ अथ अंतरिक्षपार्श्वनाथ स्तवन ॥

मतिविसरोपाश जिनेश्वरकुं मतिविसरो । मतिविसरो अंतरिक्षपारशकुं ॥ मति ॥ आंकणी ॥ अश्वसेनवामाजीकेनंदा । चरणसेवेचौसठइंदा ॥ मति ॥ १ ॥ आसनधारे अधरजिणंदा । पंचमकालमेसुखकंदा ॥ मति ॥ २ ॥ सोहेअंतरिक्षपाशजिणंदा । ज्युंगगने सुरजचंदा ॥ मति ॥ ३ ॥ चमतकार चौदिशमेंचंदा । आशपूरणसुरतरुकंदा ॥ मति ॥ ४ ॥ ज्युंकमलादिलमेंगोविंदा । ज्युंचकोरमनमेंचंदा ॥ मति ॥ ५ ॥ त्युंमुजमनमेंपाशजिणंदा । नित्यरहोहरोडुखदंदा ॥ मति ॥ ॥ ६ ॥ जाग्यहीनप्रभुमेंमतिमंदा । नजरकरोजिनवरइंदा ॥ मति ॥ ७ ॥ रतनपुरीमालवमे सोहंदा । शेठडुंगरसीगुणकंदा ॥ मति ॥ ८ ॥ संघनिकालाहरष आनंदा । पुन्यवानूपरगटबंदा ॥ मति ॥

॥ ए ॥ उंगणिसें अमसठवर्षेंआनंदा । माघकृष्णद्वितीयानंदा ॥ मति ॥ १० ॥ वीरविजयकहेपाशजिणंदा । नेटीनया-परमाणंदा ॥ मति ॥ ११ ॥ इतिसमाप्तं ॥

॥ अथ अजितजिनस्तवन ॥

अखियांतरूफरहीमेरी आजके । दरि-शणदेवदीजे । अखियांशांतकीजे ॥ १ ॥ अखियाबिनदरिशणजिनराजके । झुर-झुरपानीवरसे । दरिशणखासतरसे ॥ २ ॥ अखियां कालअनंतेबादके । तुमठबीआ-जदेखे । सबनयेकाजलेखे ॥ ३ ॥ अखी-यांसफलनयीमेरीआज । अजीतजिन-राजनेटे । सबहीपापमेटे ॥ ४ ॥ अरजी-वीरविजय की एह । अजीतजिनराजलीजे । शीवपुरराजदीजे ॥ ५ ॥ इतिसंपूर्ण ॥

अथ श्रीऊगमीयामंडन-
आदिजिनस्तवनम्म्॥

श्रीराग ॥ आदिजिनमूरतिनयनानंद ॥ आंकणी ॥ क्यातारीफकरुंप्रजुतुमरी। दरिशणदिठेपरमाणंद ॥ आ० ॥ १ ॥ औरसबीदेवनकीछबी आगे। तुम छबी प्रजुजीसुखकोकंद ॥ आ०॥ २ ॥ सत्चित् आनंदरुप तुमारो । योगीश्वर सबध्यान-करंद ॥ आ० ॥ ३ ॥ पारंगतप्रजुतुमगु-णवृंदको। त्रिजुवनमेंकोणपारलहंद ॥ आ० ॥ ४ ॥ शांतरसमयमूरतिजेटी। जविज-नजवसंसारतुरंत ॥ आ० ॥ ५ ॥ ऊगमी-यामंमनडुःखखंडन। काटोकठीणकरम-फंद ॥ आ० ॥ ६ ॥ वीरविजयकहेआदि-जिनेश्वर । आपो प्रजुजी परमाणंद ॥ आ० ॥ ७ ॥ इतिसमाप्तम्म् ॥

अथ श्रीगंधार मंडन श्रीचिन्ता- मणिपार्श्वजिनस्तवनम्

॥ मेरेतो चिन्तामणिप्रभुपाशजीका काम हैजी ॥ ए आंकणी ॥ जलधी किनारे न्यारा, नगर गंधार सारा; चिंतामणि पाश प्रभुका, जहां बसा धाम है जी. ॥ मे० ॥ १ ॥ मूरति प्रभुकी मीठी, ऐसी ठवी नाही दीठी ॥ शान्तसुधारस केरा, मानु एक ठाम हैजी. ॥ मे० ॥ २ ॥ दुषमकालमे स्वामी, दुःखकी है नाही खामी ॥ आनंद समाधि दीजे, मुजे बसी हाम हैजी ॥ मे० ॥ ३ ॥ अखूट खजाना तेरा, थोमा बहोत करदो मेरा; दुःखी जनकुं देना वेतो, प्रभु तोरा काम हैजी ॥ मे० ॥ ४ ॥ बिरूद संभाल लीजे, मेरा तेरा नाहीं कीजे ॥ तरण तारण ऐसा, प्रभु तोरा नाम हैजी ॥ मे० ॥ ५ ॥ वीर कहे सीर नामी, सुनो हो गंधार स्वामी ॥

देना हो तो ज्ञान देदो, दुजा नही काम है जी ॥ मे० ॥ ६ ॥ निधि रस निधीन्दु-वर्षे, पोस मासे सीत पक्षे; चतुर्दशी दिन भेटे, एही अभीराम है ॥ मे० ॥ ७ ॥

(श्रीसीनोर मंडन सुमति-जिनस्तवनम्)

सुखकारी, सुखकारी, सुखकारी, कृपानाथ हो जाउंवारी, सुमतिजिन सुमति सेवकनेदीजियेजी ॥ ए आंकणी. ॥ दरिसण देव दिजे, कुमतिकुं दूर कीजे; ॥ ए ही मागुं बुं हे दातारी. ॥ कृपा० ॥ १ ॥ कुमतिने कामण कीया, मुजको भरमाई दीया ॥ इनसें छोडा दो हे सरदारी ॥ कृपा० ॥ २ ॥ पंचम अवतार लीया, दुनियांकुं तार दीया ॥ आशा पुरो कहुंबुं पोकारी ॥ कृपा० ॥ ३ ॥ निरादर नाहीं कीजे, बिरूद संभाल लीजे ॥ तरण तारण छो हे अधिकारी ॥ कृपा० ॥ ४ ॥

सीनोर मंरून नामी, सुमति जिनेश्वर स्वामी ॥ बेरूी उतारो प्रञुजी ह्मारी. ॥ कृपा ॥ ५ ॥ निधि रस निधि चंदा, संवत् सुखकंदा ॥ वीरविजयकुं आनन्दकारी ॥ कृपा० ॥ ६ ॥

॥ (अथ गुह्ली लिख्यते) ॥

सहीयर सुणियेरे, जगवती सूत्रनी वाणी. ए देशी.

जविथण सुणजोरे, कल्पसूत्रनी वाणी ॥ मीठी लागेरे, वाणी अमीय समाणी. आंकणी ॥ कल्पसूत्रनी मोटी महीमा, वीर जिणंद वखाणे ॥ गौतमगणधर वीरवचनने, हृदय कमलमां धारे ॥ जवि० ॥ १ ॥ अरिहंत सम नहीं देव जगतमें, पदमे परमपद मोटुं ॥ तीरथमें शत्रुंजय जाणो, सूत्रमें कल्प वखाणो ॥ जवि० ॥ २ ॥ देवगणोमें इंद्र ठे मोटा, तारागणमें चंद्र ॥ न्याय नीतिमें राम वखाणो

काम स्वरूपमें जाणो ॥ नवि० ॥३ ॥
रूपवतीमें रुक्मिरंभा, वाजित्रमें जेम
भंभा; गजवरमें ऐरावण कहियें, युद्धमें
रावण लहिये. ॥ नवि० ॥ ४ ॥ बाणा-
वलीमें अर्जुन बलियो, गुणमे विनय ज्युं
भणियो; । मंत्रमांहिनवकारज जाणो,
बुद्धिमें अभय गवाणो. ॥ नवि० ॥ ५ ॥
सर्व वृक्षमें कल्पवृक्ष जेम, अधिक बडाई
धारे ॥ सर्व सूत्रमें कल्पसूत्र तेम, पाप
कलंक निवारे ॥ नवि० ॥ ६ ॥ कल्पसूत्र
जे भणशे गणशे, तिसत्तवार सांभलशे ॥
वीर कहे सांभलजो गौतम, ते भवसा-
यर तरशे ॥ नवि० ॥ ७ ॥ निधि रस
निधि इंदु वत्सरमें, रही सीनोर चौ-
मासुं ॥ वीरविजय कहे वीरप्रभुकी, वा-
णीमें नहीं काचुं ॥ नवि० ॥ ८ ॥
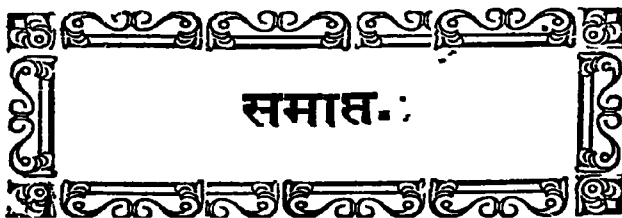
शुद्धिपत्र.

पृष्ट	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	११	गह्यो	ग्रह्यो
२	१३	तिमिर मोह	मोहतिमिर
३	१२	कपाय क	कपायके
५	७	आत	अति
६	७	धीया	दीया
६	८	मंन	मन
६	१३	यारा	प्यारा
६	१५	त्रिजवन	त्रिभुवन
८	१३	तजत	तजे
१२	१	चरणां	चरणा
१२	१४	वांणी	वाणी
१२	१९	जिनसेव्यो	जिनसेव्यां
१३	१३	मान	ज्ञान
१३	१५	धर	धरी
१४	७	चूरण	चूरणि
१४	१२	तने	तणा
१४	१८	मोख	मोक्ष
१५	७	मेगणा	मैंगणा
१६	७	अपेद	अखेद
१६	१४	फंस्यो	फस्यो
१६	१८	मोहि	मोहे

१६	१७	बिरद	बिरुद
१८	१	गणंदा	गिणंदा
१८	११	तन	नत
१८	१२	ज्ञानराज	राज ज्ञान
२०	१	माडीये	मांडीये
२३	१६	उतारो	उतार
२६	१	तेतो	तेंतो
२७	१८	जानत	जानन
२८	१५	अरे	अर्
३१	१६	अस्थ	अर्थ
३१	१७	उसय	उन्नय
३१	१७	वस्त	वस्तु
३२	६	दुखगी	दुःखन्नंगी
४०	३	चूर्ण	चूर्णि
४४	१	धनि	धुनि
५०	१८	अग्यानारे	अज्ञानारे
५३	६	स्वय	खय
५४	१६	सांख	खमा
५६	७	आग्या	आज्ञा
६१	४	न्नन	मन
६१	१०	ग्यान	ज्ञान
६१	१५	कदियक	क़दिएक
६२	१	रेणुमेरे	रेणुमेंरे
६५	१	ग्यात	ज्ञात
७०	१४	लग	जग

७१	३	जकोर	झकोर
७१	१०	अग्याना	अज्ञाना
७२	८	नेन	नैन
७२	९	तुम	तम
७२	१०	कलमल	कमल
७५	१३	ह्पुं	ह्युं
७५	१७	ड्ीग	ह्ग
७८	६	ग्यात	ज्ञात
८१	२	कुमत	कुमति
८१	५	परजंगवक	परजंक वंक
८१	६	सिजपा	सिज्या
८१	७	रचे	रचो
८१	८	ढिनो	लीनो
८१	९	अत्नरा	अत्र
८१	१०	मुल	मूढ
८१	१०	मुलत्नयत्नयो	मूल ढीन त्नये
८१	१५	तरुणा	तरुण
८२	१	विप	विपय
८२	२	हिनो	खीनो
८४	९	चकोरे	चकोर
८८	१७	जीव	जिन
८८	१८	लोक	लोह
८९	१	जसजस	जस
८९	१०	त्नाणा	त्नाण

९०	१	तारो	मारो
९७	१३	ग्यान	ज्ञान
९७	१४	ग्यान	ज्ञान
९७	१८	मवअनादिकेरो,	मोह अनादिकेरो
९८	११	अग्यान	अज्ञान
९९	२	अग्यानकी	अज्ञानकी
९९	१४	यार	पार
१००	६	सुहीसा	सुहासा
१००	६	तुलायो	लुलायो
१०१	५	झुलाता	झुलाना
१०१	१५	कल्पनाना	कल्पना नाना
१०१	१७	आसोनंदरस	आनंदरस
१०३	७	इंद्रय	इंद्रिय
१०३	१२	उर्नय	दुर्नय
१०४	७	ग्यान	ज्ञान
१०८	१	षटपद	खटपद
१०९	१३	शीष	शीख
११२	१५	पुरषकुं	पुरुषकुं
११४	१७	दयो	दियो
११५	३	अम	एम
१२१	९	पटणीरा	पटराणी
१३०	३	शुजटें	सुजटें
१३०	१६	चैवीश	चौवीश
१३०	१७	सुरथ	सुख

१३५	४	एयले	एटले
१३५	ए	काढो	काढ्यो
१३५	१६	वीरजय	वीरविजय
१३ए	३	कहो	कह्यो
१४२	१७	त्रत्रुवन	त्रिभुवन
१४४	१४	जानो	जान्यो
१५०	४	आयां	आया
१५१	२	परवा	परचा
१५२	१६	नूत	नूतन
१५४	११	असु	आसु
१५६	६	चारवी	चाखी
१५७	४	ढुंरूत	ढुढत
१५ट	५	करक्षयसें	करमक्षयसें
१५ए	१३	जाशातणो	जात्रातणो
१६४	१२	मुनिसुवृत	मुनिसुव्रत
१७२	१	देस्वी	देखी
१ट१	१३	सोमवारेजी	सोमवारे
१ट१	१५	परिवार	परिवारेजी
१ए०	१३	स्यापुर	स्यारपुर
१ए३	३	संघाता	संघात
१ए३	१७	प्रती	प्रिती
१ए६	५	सुंदरूली	चुंदरूली
१एट	१२	पीलत	पीलता
१एट	१३	जाणा	जाणता
२००	७	सरवी	सखी